Chapter- 2

-=: द्वितीय अध्याय :=-

: कमलेश्वर के साहित्य का वर्गीकरण तथा उसका परिचय :

द्वितीय अध्याय : कमलेश्वर के साहित्य का वर्गीकरण तथा उसका परिचय ।

§क§ <u>उपन्यास</u> :-

§1§ एक सड़क सत्तावन गलियाँ

§2§ डाक बंगला

§3§ काली आँधी

§4§ आगामी अतीत

§5§ तीसरा आदमी

§6§ समुद्र में खोया हुआ आदमी

§7§ लौटे हुए मुसाफिर

§8§ वही बात

§9§ सुबह दोपहर शाम

§ख§ <u>कहानी</u> :-

§1§ <u>कमलेश्वर के निम्न लिखित कहानी संग्रह</u> :-

§1§ जिंदा मुर्दे

§2§ बयान तथा अन्य कहानियाँ

§3§ श्रेष्ठ कहानियाँ

§4§ मांस का दरिया

§5§ मेरी प्रिय कहानियाँ

§6§ खोई हुई दिशाएँ

§7§ राजा निरबंसिया

§8§ कस्बे का आदमी

द्वितीय अध्याय : कमलेश्वर के साहित्य का वर्गीकरण तथा उसका परिचय ।

प्रस्तावना :-

वर्तमान काल में हिन्दी कथा लेखकों में कमलेश्वर जी ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है । कमलेश्वर जी व्यक्ति एवं साहित्यकार दोनों की सफलता की उस मंजिल तक पहुंच गए हैं जहां एक और उनके प्रशंसक पाठकगण हैं वहीं दूसरी और उनकी सफलता के प्रति ईर्षा भाव से ग्रस्त मित्र लेखक भी हैं । उनके प्रसिद्ध उपन्यास "काली आँधी" और "आगामी अतीत" दोनों उपन्यासों को उनके ईर्षालु मित्रों ने मात्र बम्बईया फिल्मों के लिए लिखे गए उपन्यास करार दिया है । ऐसा लगता है कि जिस किसी उपन्यास का फिल्मीकरण हो गया माना वह उपन्यास की अस्मिता ही खो बैठा । वस्तुतः आधुनिक गद्य साहित्य में उपन्यास एक शक्ति-शाली जनाभिमुख विधा है, जिसमें मानव समाज का बड़ा ही बेलाग वर्णन होता है । वर्णन की सच्चाई, अनुभूति की गहराई और तटस्थ दृष्टि उपन्यास में तराश पैदा करते हैं जो समाज की रूढियों और गलित परम्पराओं पर प्रहार करते हैं ।

कमलेश्वर जी के उपन्यासों में आधुनिकता की चादर ओढ़कर पाखण्डों से घिरी आध्यात्मिकता पर कड़ा प्रहार किया गया है । उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से रूढवादी विचारधाराओं, साम्प्रदायिक आध्यात्मिकता, नारी के प्रति अत्याचार तथा राजनीति की धोखा धड़ी का जम कर विरोध किया है । यहां हम कथा साहित्य के दोनों अंग उपन्यास व कहानी से परिचित हो लेना चाहेंगे ।

(क) उपन्यास :-

(1) एक सड़क सत्तावन गलियाँ :-

यह उपन्यास प्रकाशक की भूल के कारण बाद में "बदनाम गली" शीर्षक से भी प्रकाशित हुआ है । कमलेश्वर जी का यह प्रथम उपन्यास है । उनका यह प्रथम प्रयास ही इतना सफल है कि कमलेश्वर जी को उपन्यासकार के रूप में भी सुप्रतिष्ठित कर देता है । मैनपुरी जनपद की पृष्ठ भूमि पर लिखा गया यह सामाजिक उपन्यास है । सवा सौ पृष्ठ का यह लघु उपन्यास सन् 1961 में से प्रकाशित हुआ । इससे पहले सन् 1957 में ही वह "हंस" पत्रिका में प्रकाशित हो चुका था । इस उपन्यास को आज भी पढ़ते समय ऐसा नहीं लगता कि यह इतने

वर्ष पहले लिखा गया होगा । यह प्रतिति ही इसकी ताज़गी और सदाबहार को बताती है । इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आकार और गहराई उसकी इतनी ज्यादा है कि उसकी थाह पाना मुश्किल है ।

इसका कथासार यह है : मोटर चालक सरनाम सिंह का गाँव में दबदबा था । स्वामी सर्वदानंद जी का चेला ब्राह्मण बालक शिवराज उनके साथ रहकर उनसे संस्कृत सीखता था । शिवराज के पिता की मृत्यु बाद उसके घर से पूर्ववत् दान-दक्षिणा आनी बंद हो गई । तब से आश्रम के लोगों का उसके प्रति व्यवहार बदल गया था । वह उखड़ा-उखड़ा रहता था । एक दिन वह मोटर के अड्डे पर कुख्यात रंगीले व सरनाम सिंह के पास जा बैठा । आश्रम के कुछ ब्रह्मचारियों ने शिवराज को वहां बैठे देख लिया । ब्रह्मचारियों ने उसे स्वामी जी के पास चलने के लिए कहा, परंतु शिवराज ने इंकार कर दिया और तब से शिवराज सरनाम सिंह के साथ ही रहने लगा । उस छोटी-सी बस्ती में यह बात फैलते देर नहीं लगी कि सरनाम सिंह ने शिवराज को फुसला लिया है । शिवराज सरनाम सिंह के घर का ही अंग बन गया । बस्ती के आध्यात्मिक वर्ग की सरनाम सिंह से दुश्मनी हो गई । सरनाम सिंह अपने में ही मस्त रहता था । बस्ती की किसी बात की भी उसे परवाह नहीं रह गई थी । सरनाम सिंह अपने साथियों के साथ मिलकर डाका भी डालता था । सबसे पहली बार की डकैती में वह सफल नहीं हुआ था । डकैती के समय घर के सदस्य जाग गए थे और उन्होंने डाकुओं का डटकर मुकाबला किया । डाकुओं ने घर की महिला बंसरी को बहुत तंग किया लेकिन बंसरी ने कोई भेद नहीं दिया । एक डाकू मारा गया था । दूसरे दिन डकैती की रपट थाने में दर्ज कर दी गई थी । सरनाम सिंह के वारंट जारी हो गए थे । एक दिन सरनाम सिंह ने स्वयं को अदालत के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया था । बंसिरी रोज़ अदालत में हाज़िर होती । सरनाम सिंह के दोस्त सरनाम सिंह को कोसते कि उसने नाहक बंसिरी को छोड़ा । अकेले बंसिरी की कीमत ही एक हज़ार रुपया होती । अदालत में बंसिरी ने सरनाम सिंह को पहचानने से इंकार कर दिया था । सरनाम सिंह का मित्र गिरधारी उसे बार-बार उकसाता कि बंसिरी कहीं सराय में रुकी होगी, वह उसका अपहरण क्यों नहीं कर लेता । लेकिन सरनाम सिंह कुछ और ही सोचता था ।

-=: 3 :=-

इसके बाद अनेक वर्ष बीत गए । सरनाम सिंह फौज में चला गया । दो वर्ष तक उसने फौज में ट्रक चलाए थे और फिर वह वापिस इसी बस्ती में आ गया था । एक दिन अचानक एक मेले में नौटंकी में उसने बंसिरी को देखा था । दोनों में तय हुआ कि किस दिन मेला उठेगा, वह बंसिरी को ले जाएगा, लेकिन जिस दिन वह बंसिरी को लेने आने वाला था, उस दिन रंगीले की थोड़ी-सी असावधानी से ही ठर्रे की बोतलें पकड़ी गईं और वे दोनों बंद हो गए थे । जमानत देर से हुई । छूटते ही वह मेले में पहुंचा । तब तक नौटंकी वाले जा चुके थे । सरनाम सिंह ने बंसिरी को बहुत मेलों व नौटंकियों में ढूंढा, लेकिन सब व्यर्थ साबित हुआ । कहीं से इतना पता चला था कि वह सत्तार के साथ किसी सर्कस में चली गई थी ।

रंगीले बहुत मनमौजी व्यक्ति था । वह अदालत में गवाहियां देने का काम करता था । वह सुबह सरनाम सिंह के साथ मोटर अड्डे पर रहता और दोपहर को कचहरियों में दौड़ता रहता । स्वतंत्रता आंदोलन की लहर चली, तो उन दिनों रंगीले नेता हो गया था । एक दिन बस्ती में खबर फैली कि कलंकी बाबा अवतार लेने वाले हैं । एक दिन बस्ती में कृष्ण लीला शुरु हो गई । गाँव की महिलाओं, पुरुषों, बच्चों, बूढों सभी में अवतार के दर्शन पाने की ललक उठ पड़ी । उसी के दौरान सरनाम को बंसिरी तीसरी बार दिखाई दी । पहले तो उसे लगा कि उसकी निगाहें धोखा खा रही हैं, क्योंकि बंसिरी वहां नहीं हो सकती । सरनाम ने पता करने की कोशिश की किंतु उसे सफलता नहीं मिली । इतने में किसी ने कलंकी अवतार का भाण्डा फोड़ दिया । अवतार अंतर्ध्यान होने वाले थे कि हंगामा हो गया । लाठियां चलने लगीं । सब कुछ तितर-बितर हो गया । पुलिस भी आ गई थी । बंसिरी का भी कुछ पता न चला । एक दिन बस्ती में एक कवि आया । वह कवि युवतियों का व्यापार करता था । शाम को सभी लोग कवि के पास जमा हुए । उस दिन भी वह एक लड़की को बेचने लाया था । सरनाम सिंह व रंगीले भी उसके पास पहुंचे । रंगीले की स्त्रियों के प्रति ललक देखकर सरनाम सिंह ने रंगीले के लिए उस लड़की को खरीद लिया । उस युवती का सौदा उसने पांच सौ रुपये में किया । सरनाम सिंह ने 400 रुपये देकर युवती को खरीद लिया । उसने रंगीले से कहा कि वह उस युवती को अपने पास रख लें जब उसके पास पूरे पैसे हो जाएंगे तब वह उस औरत को ले जाएगा ।

-: 4 :-

अचानक जब कवि ने युवती को बंसिरी कह कर पुकारा तो सरनाम सिंह चौंक गया और रंगीले पांच सौ रुपये का कर्जदार होकर बंसिरी को ले आया । मोटर अड्डे के सामने वाले कच्चे कमान में उसने अपनी गृहस्थी जमाई । सरनाम सिंह को लगता रहता कि शायद उसने अच्छा नहीं किया । बंसिरी के मन में सरनाम सिंह के प्रति क्रोध भरा हुआ था ।

शिवराज प्राय: बंसिरी के पास चला जाता था । बंसिरी उसके लिए मां, बहन व मित्र सब कुछ बन गई थी । एक बार सरनाम सिंह, मंगल व रंगीले डाका डालने की योजना बना रहे थे । वह योजना शिवराज को पता चल गई । बंसिरी शिवराज को समझाती है कि वह क्यों अपना जीवन बरबाद कर रहा है । शिवराज का मन करता कि वह बंसिरी को अपनी प्रेमिका हेम के बारे में बता दें, परंतु उसकी हिम्मत ही नहीं होती थी ।

बंसिरी को सरनाम सिंह से बहुत चिढ़ थी जब भी रंगीले सरनाम सिंह की कोई बात करता, तो बंसिरी जल भुन जाती थी । सरनाम सिंह अपने मित्रों के साथ डाका डालने गया था । डाके से लौट कर वह रंगीले के घर पहुँचा । वहाँ वह हथियार छुपाना चाहता था । लेकिन बंसिरी बिफर उठी । उसने हथियार छिपाने से साफ इंकार कर दिया । सरनाम सिंह वापिस चला गया । सरनाम सिंह जहाँ डाका डालने गया उन लोगों ने थाने में रिपोर्ट कर दी थी । कोतवाली से सरनाम सिंह के वारंट जारी हो चुके थे और सरनाम सिंह फरार था । पुलिस ने सरनाम सिंह को पकड़वाने के पूरे इंतजाम करवा रखे थे । रंगीले घबराया हुआ था कि न जाने अब क्या होगा । इधर शिवराज कार्निवल की एक नर्तकी कमला के प्रेम में दीवाना हो रहा था । वह उससे विवाह करना चाहता था । उन दिनों वह हर बात भूलकर बाजा मास्टर के साथ नाटक की तैयारी में जुटा रहता था । शिवराज सारा दिन वहीं पड़ा रहता था । सरनाम सिंह की जगह-जगह खोज हो रही थी ।

एक दिन मंगल तथा सरनाम सिंह रंगीले के घर आ पहुंचे । सरनाम सिंह तो रात को चला गया, लेकिन मंगल ने रात को रंगीले के घर में ही शरण लेनी थी बंसिरी को यह कतई स्वीकार न था कि डाकू उसके घर में ठहरे । मंगल नशे में चूर था । बंसिरी ने रंगीले से कहा कि वह मंगल से चले जाने को कह दें ।

....5/-

-=: 5 :=-

मंगल ने सुन लिया और वह खुद उठ कर चला गया । रात को गस्त वालों ने उसे नशे की हालत में पड़ा पाया और थाने में पहुँचा दिया । अगले दिन खबर फैल गयी कि एक डाकू और पकड़ा गया ।

सरनाम ने सुना तो उसका खून खौल गया कि बंसिरी ने इतना धोखा दिया । उसने रंगीले की कोई बात नहीं सुनी । सरनाम के सिर भी खून सवार था । शाम को रंगिले घर लौट रहा था कि मंगल के लोगों ने उसे पीट डाला । कोई आदमी रंगिले को बेहोशी की हालत में घर पहुँचा गया था । सरनाम ने सुना तो अवाक रह गया । कि मंगले के आदमियों ने यह क्या किया । उसने सोचा कि वह मंगल के आदमियों से बदला लेगा, परन्तु वह रंगीले को कैसे समझाता । रंगीला भी सोचेगा कि सरनाम ने ही करवाया होगा । बंसिरी का निश्चित मत था कि सरनाम के सिवा और कौन यह कर सकता था । वह सोचती रही कि सरनाम अब उसकी इज्जत भी मिटाने का प्रयत्न करेगा ।

रंगीले बहुत अच्छी गवाही देता था और पुलिस चाहती थी कि रंगीले सरनाम के खिलाफ गवाही दे । रंगीले सोचता था कि सरनाम चाहे उसके साथ बुरा करे, पर वह उसके विरुद्ध गवाही न देगा । इस पर बंसिरी ने रंगीले को यह कह कर भड़काया कि सरनाम सिंह ने उसके साथ दुर्व्यवहार करने की कोशिश की है और यदि रंगीले ने गवाही न दी तो वह गर्भावस्था में ही कहीं चली जाएगी, और उसके साथ न रहेगी । यह सुन कर रंगीले क्रोध में जलने लगा और रंगीले ने प्रण कर लिया कि वह गवाही देकर सरनाम सिंह की हस्ती मिटा देगा ।

बाजा मास्टर, शिवराज, हबीब साहब, नाटक में व्यस्त थे । शिवराज कमला से विवाह करना चाहता था । सरनाम ने उसे बहुत समझाया था । लेकिन शिवराज पर किसी के समझाने का कोई प्रभाव नहीं था । दूसरी तरफ सरकारी बसों के चलने का हुक्म हो गया था । सरनाम सोच रहा था कि अब तो उसे सजा हो ही जाएगी । इससे पहले वह रंगीले से मिलकर मन की बात कर लेना चाहता था । वह बंसिरी को भी एक बार देख लेना चाहता था । शिवराज और बाजा मास्टर नाटक के शुरू होने की प्रतीक्षा में थे कि पर्दा उठने से पहले ही स्टेज में आग लग गई । सब कुछ समाप्त हो गया । जान माल की बहुत हानि हुई । हबीब साहब भी मारे गए । सब कुछ वीराने में बदल गया ।

....6/-

§2§ <u>डाक बंगला</u> :-

"एक सड़क सत्तावन गलियाँ" से हट कर कमलेश्वर जी ने इस लघु उपन्यास

ऐसी युवती की कहानी है जिसने अपने जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखें, अच्छे और बुरे से होकर गुजरी, और वह हर जगह हारती जीतती हुई आगे बढ़ी है । "इरा" एक विधवा युवती है जो आड़ू के डाक बंगले में ठहरी हुई है, जहां पर उसने अपनी टूटी हुई जिन्दगी की अनुभूतियों को अनेक संकेत और बिम्बों के द्वारा अभिव्यक्त किया है काश्मीर यात्रा के दौरान वह वह डाक बंगले में तिलक और सोलंकी नामक युवक के साथ ठहरी है । यहीं पर उसने तिलक के साथ ईधर-उधर की सैर करते हुए अपनी आत्मकथा सुनायी ।

"जहाँ तक अनुभूतियों का प्रश्न है विशेषकर नारी जीवन की वृध्दि और कष्टदायक अनुभूतियों का "डाक बंगला" अपने आप में एक उपलब्धि है क्योंकि इसमें एक असाधारण नारी "इरा" के माध्यम से एक साधारण नारी की विपत्ति और उसके अभ्यन्तरिक एवं बाल्य संघर्ष को रूपांयित किया जा सका है । उपन्यास में अनेक स्थल ऐसे हैं जहां जीवन की गहन अनुभूतियां बोलती है और पाठक रूककर सोचने को विवश हो जाता है ।"(1)

"इरा" मध्यवर्गीय परिवार की लड़की है । यौवन की पहली सीढ़ी पर वह फिसल गई । एक नाटक प्रेमी सज्जन विमला नामक युवक ने रंगमंच का प्रलोभन देकर उसे अपनी वासना का शिकार बनाया । एक बार जिन्दगी की राह गुम होने पर प्रयास करने के बाद भी सही दिशा मिलती नहीं और मिलती भी है तो वक्त गुजरने के बाद जबकि जीवन के पड़ाव में उसका कोई महत्त्व नहीं रहता विमल से धोखा खाने के बाद "इरा" की वह जिन्दगी शुरू होती है जहां वह सोचती है, "मेरी आत्मा का कोना-कोना यादों से भरा हुआ है । मेरी आँखों में हर उस आदमी की तस्वीर है जिसके साथ मैंने थोड़े से भी दिन गुजारे हैं । सभी ने विलास किया मेरे साथ ।"(2)

"इरा" के जीवन में विमल के अतिरिक्त और तीन पुरूष आये - बतरा, सोलंकी और डाक्टर । इन चारों के प्रति अपनत्व और आकर्षण उसे रहा । हम उसे प्रेम नहीं कह सकते । इन चार पुरूषों में डाक्टर के पास वह विशेष परिस्थितियां

---

(1) "कमलेश्वर" - डॉ0 विरेन्द्र सक्सेना - मधुकर सिंह - पृष्ठ 186.
(2) "डाक बंगला" - कमलेश्वर - पृष्ठ 30-31

लाकर छोड़ी गयी थी । झूठे आदर्श और प्रेम को इरा स्वीकार नहीं करती । उसने कहा भी है "हर बात को आदर्श के पर्दे में रखकर मत देखो, तिलक । गन्दी चीज पर पर्दा डाल दो तो उसकी झिल-मिलाहट खूबसूरत लगती है । इसलिए आदर्श का जामा जिन्दगी को मत पहनाओ ।"〖1〗 इसमें सन्देह नहीं कि विमल के प्रति इरा को विशेष आकर्षण रहा । उससे बिछुड़कर भी वह उसे भूल नहीं पायी । किन्तु विमल ने इरा से जो व्यवहार किया वह क्षम्य नहीं है । आर्थिक परेशानियों से तंग आकर विमल इरा को बतरा नामक दलाल के यहाँ नौकरी दिला देता है । बतरा आधुनिक दलाल है । सम्बन्धों को बनाना और तोड़ना यही उसका काम है । सम्बन्धों को बनाये रखने के लिए वह औरतों के उपयोग को जायज मानता है । अफसरों से दोस्ती कर वह व्यापारियों का काम करता था । और सेक्रेटरियों की बीवियों और प्रेमिकाओं से उसके निकट के सम्बन्ध थे । उन लोगों की कमजोरियों को वह जानता था । शीला नामक युवती से उसे इस काम में सदा सहायता मिली । "शीला हर घर में बीवी का नकाब लगाकर रहती है । वह एक शरीफ औरत है वक्त और पैसे की मार ने उसे बुरा बनाया है ।"〖2〗

बतरा, सोलंकी और डाक्टर के साथ रहते हुए इरा ने प्रेम से अधिक उन्हें करुणा ही दी है । हर बार वह गत जीवन को काटकर फेंक देती है और नयी जिन्दगी शुरु करती है । बतरा के साथ जिन्दगी का दूसरा मोड़ उसने शुरू किया । बतरा ने उसके साथ रहकर जी भरकर उससे खेला है । उसने सारे ऐश और आराम उसे दिये, वह गर्भवती हो जाती है । बतरा उसका गर्भपात कराता है और शीला आकर उसे घर से निकाल देती है । आगे बतरा इरा को डॉ. चन्द्रमोहन के साथ आसाम भेज देता है । जहाँ डाक्टर के साथ उसका विवाह होता है । और वहीं पर वह विधवा बन जाती है । जिन्दगी को फिर एक नया मोड़ मिलता है । इरा तिलक और सोलंकी के सहवास में आती है पर सोलंकी से अधिक तिलक से ही वह घुल मिल सकी । तिलक से वह कहती है-"जिसे मैंने सबकुछ बताया है, उससे शादी न कर सकी क्योंकि मैं यह नहीं कह सकती कि तुम मेरी जिन्दगी में पहले हो । जो भी मेरी जिन्दगी में आया उसने जाने अनजाने घुमा फिरा कर या सीधे-सीधे या

〖1〗 पूर्वोक्त - पृष्ठ 35
〖2〗 पूर्वोक्त - पृष्ठ 65

हमेशा यही जानने की कोशिश की मैंने पहले किसी से प्यार तो नहीं किया.....। पुरुष का यही सबसे बड़ा सन्तोष है और हर बार मैंने हर प्रेमी से यही कहा कि तुम मेरी जिन्दगी में पहले हो, तुम प्रथम हो ।"(1)

"डाक बंगला" की कथा एक साथ दो रास्तों पर चलती है । वास्तव में यह कथा उसके बाह्य और अन्दर की कहानी है । कश्मीर यात्रा और सोलंकी इसकी बाह्य कथा के साथी हैं । जबकि तिलक और इरा का अतीत उसके आन्तरिक कथा के साथ चलता है । सोलंकी, बतरा या डाक्टर को उसने अपनी उस बाह्य यात्रा का साथी बनाया है ।"(2)

वास्तव में इस लघु उपन्यास में इरा की काम भावनाओं को मनोविज्ञान के सहारे विश्लेषित करने का प्रयास कमलेश्वर ने किया है । इरा जीवन की कटुताओं को झेल कर इतनी निराश हो गई कि आस्था, आदर्श और अच्छाइयों के प्रति उसके मन में विश्वास ही न रहा । सच्चे प्यार की प्यासी इरा को कभी भी एक मानव मयस्सर नहीं हुआ । आदमी में उसे एक भेड़िया दिखाई देता है जो वक्त आने पर खूंखार दरिन्दा बन जाता है । उसका विश्वास यही है कि-"लोग आत्मा की बातें करते हैं, पर तन पर एकान्तिक अधिकार चाहते हैं । ऐसा अधिकार जो उनकी वासना की घड़ी के मुताबिक चलता है........। उनके लिए बुरी से बुरी और एक क्षण में पूरी तरह अच्छी बन सकती है । अगर वह समर्पित हो जाये ।"(3)

डॉ० पुरुषोत्तम दुबे ने लिखा है कि "अर्थ की धूरी पर चक्कर काटने वाला आधुनिक मानव वर्ग या तो बतरा है या इरा या विमल भी है, शीला भी है, पर उसका कोई विशेष महत्व नहीं है- सांप बिच्छु कीड़े मकोड़े की परवाह नहीं करते । बतरा है खरीददार अर्थ और काम दोनों का उसकी पेढ़ी पर बोर्ड लगा है । "खरीदना है, औरत से लेकर ओयल, इन्जन तक, सब कुछ खरीदना है और बिकाऊ है, चाहे बतरा खरीदे चाहे चन्द्रमोहन ।"(4) इरा की इच्छा हो या न हो किंतु उसकी इच्छा की चिन्ता किसे है । इतना ही नहीं बल्कि इरा की स्वीकृति भी

- -

(1) "डाक बंगला" - कमलेश्वर - पृष्ठ 75.
(2) डॉ. घनश्याम मधुप - "हिन्दी उपन्यास" - पृ. 166.
(3) "डाक बंगला - कमलेश्वर - पृष्ठ 47.
(4) "व्यक्तिचेतना और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास"-डॉ. पुरुषोत्तम दुबे-पृ. 351.

इसी सत्य पर है । इरा का दुख यही है कि इस कमीनी दुनियां में औरत बिना पुरूष के रह नहीं सकती, उसे एक कवच चाहिए । उसने कहा है कि-"हर लडकी एक कवच ढूंढती है । वह चाहे पति का हो, भाई या बाप या किसी झूठे रिश्तेदार का । इस कवच के नीचे वह अच्छा या बुरा हर तरह का जीवन बिता सकती है । उसे पहनने के लिए जैसे एक साड़ी चाहिए वैसे यह कवच भी चाहिये ।"॥1॥ जीवन की इस राह पर अपने अस्तित्व को टिकाये रखने के लिये और अपने आपको बनाये रखने के लिये एक सुशिक्षित युवती को किन-किन समस्याओं से होकर गुज़रना पड़ता है, उसका मार्मिक चित्रण "डाक बंगला" में हुआ है । कई स्थलों पर इसके चरित्र में दार्शनिकता आ गयी है । उसके सारे नाम जीवन की गहरी अनुभूति को अभिव्यक्त करते हैं । इराने अपने जीवन में जो संघर्ष देखा और सहा है वह उसी संघर्ष का प्रतिबिम्ब है । इस संबंध में हम कह सकते हैं कि "पात्रों के अन्तस का विश्लेषण कर उनके मानस का सूक्ष्म विवेचन करने एवं उनके व्यक्तित्व को प्रकाशित करने में कमलेश्वर सफल रहे हैं ।"॥2॥ मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति का और उसके कारण जीवन के बदलने वाले मूल्यों का प्रभावी चित्रण लेखक ने इस रचना में किया है । "डाक बंगला" में आर्थिक समस्या दूसरी समस्याओं का आधार लेकर उद्घाटित हुई है । इसके माध्यम से नारी जीवन की असहाय और दयनीय परिस्थितियों को चित्रित किया गया है । तथा सांकेतिक पद्धति से सुरक्षा की कामना का आर्थिक पक्ष स्पष्ट हुआ है ।"॥3॥

यह उपन्यास कमलेश्वर जी ने सुपरिचित यथार्थवाद शैली में लिखा होता तो ज्यादा प्रभावशाली बन सकता था ।

॥3॥ <u>काली आँधी</u> :-

एक लम्बे अरसे के पश्चात कमलेश्वर जी का यह लघु उपन्यास प्रकाशित हुआ । व्यक्तिगत और सामाजिक दो भिन्न स्तरों पर एक साथ इस लघु उपन्यास का कथा चक्र चलता है ।"काली आँधी" एक और असफल दाम्पत्य की करूण कहानी लगती है । इस रचना में लेखक ने मालती और जग्गी बाबू के माध्यम से उन्हीं के

- -

॥1॥ "डाक बंगला" - कमलेश्वर - पृष्ठ 45.
॥2॥ "हिन्दी उपन्यास उद्‌भव विकास" - डॉ.सुरेश सिन्हा - पृष्ठ 558.
॥3॥ "कमलेश्वर" - कृष्ण कुरडिया - पृष्ठ 205.

प्रश्नों और स्थितियों द्वारा सम्पूर्ण युग के प्रश्नों और स्थितियों पर प्रकाश डाला है । यही कारण है कि यह लघु उपन्यास आकार में संक्षिप्त होते हुए भी जीवन के विशाल पटल को लेकर चला है । आज के जीवन में भ्रष्टाचार और राजनीति ने इस प्रकार प्रवेश किया है कि कहीं पर भी, चाहते हुए भी सामान्य व्यक्ति उससे मुक्ति नहीं पाता, एक गहरी और व्यापक वेदना "काली आँधी" में सर्वत्र देखने को मिलती है उसके साथ वर्तमान समाज का सत्य जुड़ा हुआ है । कमलेश्वर ने इस रचना में रोजमर्रा के जीवन के और वह भी आस-पास के राजनीतिक और सामाजिक यथार्थ को बहुत ही महीनता से प्रस्तुत किया है । इस रचना के हर पात्र में किसी न किसी प्रकार का प्रतीक है जो अपने हित और स्वार्थ के लिए आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्ग का शोषण कर उन्हें बहकाती है । और उनकी कमजोरी का हर जगह जितना सम्भव हो सका उतना फायदा उठाती है । स्वार्थी और खुदगर्ज व्यक्ति के चित्रण में लेखक ने मालती के रूप में एक स्वाभाविक और प्रभावी पात्र का निरूपण किया है । "कमलेश्वर के पास सही शब्दों में सही बात कहने की जो कला है, वह स्थान-स्थान पर इस उपन्यास में उजागर हुई है तथा इसे पढ़ते हुए ऐसा कभी नहीं लगता कि लेखक को अपनी बात पेश करने के लिए उचित शब्द नहीं मिले ।"(1)
कस्बाई और शहरी जीवन के निम्न मध्य वर्गीय समाज की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का चित्रण कमलेश्वर जी ने इस रचना में किया है । "काली आँधी" में अनेक स्थलों पर उच्च वर्गीय समाज का चित्रण भी हुआ है । कमलेश्वर जी ने उच्च-वर्गीय एवं निम्न मध्य वर्गीय राजनैतिक एवं सामाजिक एवं वैयक्तिक जीवन का गहरा और वास्तविक चित्रण किया है । "काली आंधी" में हमें वह देश देखने को मिलता है जो स्वाधीन तो हो चुका है किन्तु जिसकी आन्तरिक राजनीति के अनेक पहलू हैं स्वाधीनता के बाद भारत में पच्चीस वर्ष के पश्चात भी जो राजनैतिक अस्थिरता है उसका अत्यन्त यथार्थवादी चिन्तन लेखक ने किया है । राजनैतिक समस्याओं का सामाजिक समस्याओं के सन्दर्भ में इतना करारा व्यंग्य-प्रधान लघु उपन्यास पहली बार ही देखने को मिलता है ।

"काली आंधी" की नायिका है मालती उसका प्रभावी व्यक्तित्व ही सम्पूर्ण रचना में छाया हुआ है । मालती जग्गीबाबू की पत्नी हैं । मालती और

---

(1) "कमलेश्वर" - डॉ॰ विरेन्द्र सक्सेना - पृष्ठ 194.

-=: 12 :=-

जग्गीबाबू का प्रेम विवाह हुआ था । शादी के कुछ दिनों के बाद ही मालती के पिता की मृत्यु हो गई थी । उसके बाद ही मालती ने राजनीति में कदम रखा । धीरे-धीरे मालती एक दिन मिनिस्टर हो गई । मालती का राजनीति में आना जग्गीबाबू को बिलकुल पसंद नहीं था । इस कारण उनका परिवार बिखर गया । जग्गीबाबू भोपाल में जाकर होटल गोल्डन सन के मैनेजर के पद तक पहुंच गए थे । लिली उनकी इकलौती बेटी थी । वह पंचमढ़ी में पढ़ रही थी ।

मालती को चुनाव के लिए भोपाल क्षेत्र मिला था । शहर में उनके समर्थकों द्वारा चुनाव-प्रचार आरंभ हो चुका था । कुछ दिनों बाद मालती जी भी भोपाल आ गई थी । जग्गीबाबू के होटल में ही उनके रूकने का प्रबंध किया गया था । जग्गी बाबू ने स्वयं सारा इंतजाम देखा था । मालतीजी ने आकर प्रचार अभियान का मोर्चा संभाल लिया था । मालतीजी ने बहुत कूटनीति से भोपाल की जनता का समर्थन प्राप्त कर लिया था । उन्होंने जगह-जगह चुनाव सभाओं को संबोधित किया । अनेक निमंत्रणों को स्वीकार किया । उनका कार्यक्रम बहुत ही व्यस्त था । वह थकती न थी । अतः सफलता के नशे में थकावट महसूस नहीं कर रही थी । उन्होंने वहां के सभी राजनीतिज्ञों से मिल कर उन्हें प्रभावित कर दिया था । बहुत से दलों के उम्मीदवार के बीच लड़ाई-झगड़े होना बहुत साधारण-सी बात थी । मालतीजी दंगाग्रस्त इलाके का दौरा करने भी गई थीं और इस प्रकार मालतीजी ने पूरा समर्थन प्राप्त कर लिया था । एक दिन मालतीजी के चरित्र तथा मालती व जग्गी बाबू के संबंधों को लेकर अभद्र पर्चे बट गए । इस बात से मालतीजी के समर्थकों में बड़ी चिंता फैली हुई थी । जग्गीबाबू भी उस पर्चे को पढ़कर परेशान हो गए थे । जग्गी बाबू की तबीयत ठीक नहीं थी और उन्होंने अपनी बेटी को छुट्टियों में भी घर आने के लिए मना कर दिया था । वे नहीं चाहते थे कि लिली पर इन सब बातों का प्रभाव पड़े ।

एक दिन मालतीजी जग्गी बाबू का हाल पूछने उनके कमरे में जा पहुंची । इस बात की तो किसी को कोई उम्मीद नहीं थी, लेकिन मालतीजी अपनी जरूरत को महत्त्व देती थीं । मालतीजी ने अपने पर लगाए गए आरोपों का खण्डन किया था । आखिर शांतिपूर्वक मतदान समाप्त हो गया । मालतीजी सात हजार वोटों से जीत गई थी । अगले दिन शाम को गोल्डन सन होटल में शहर के नागरिकों ने

मालतीजी के लिए अभिनंदन समारोह का आयोजन किया था । अभिनंदन समारोह में लिली ने भी मालतीजी से ओटोग्राफ लिए थे । लेकिन मालतीजी को पता न चल सका कि वह उनकी ही बेटी लिली है ।

मालतीजी की वापिस जाने की तैयारी हो गई थी । अचानक मालतीजी लिली और जग्गीबाबू को मिलने पहुंची । मालती ने लिली को बताया कि वह उनकी बेटी है, लेकिन लिली कुछ भी समझ न पाई । मालती ने जग्गी बाबू से पूछा कि क्या वह लिली को लेकर दिल्ली आ सकते हैं ? जग्गी बाबू ने जवाब दिया कि उन्होंने जो अपने-अपने स्थान तय किए हैं, वे ठीक हैं अतः अब पश्चाताप कैसा । जग्गी बाबू ने कह दिया कि मालती एक औरत नहीं है बल्कि सिर्फ सफलता बन गई है और उसकी मुक्ति अधिक सफल होते जाने में ही है । इस लिए वह उसके साथ नहीं रह सकते । इतना सुनकर मालती जी चुपचाप लौट गई ।

मालती राजनीति में प्रवेश करती है और उसका प्रवेश ही बहुत बड़ी सफलता देता है । इस क्षेत्र में प्रवेश करने के पश्चात असफलता क्या है यह मालती ने कभी जाना ही नहीं । जिस क्षेत्र में उसने हाथ डाला उसे यश ही मिला । इसमें सन्देह नहीं कि यश और सफलता को प्राप्त करने के लिये उसने हर सम्भव प्रयास किया और हर मार्ग को अपनाया । अपने चातुर्य के बल पर मालती सफलता के उच्च शिखर पर बहुत शीघ्र पहुंच गयी । राजनैतिक जीवन में उसे सफलता तो मिली किन्तु उस धापा-धापी में अपने कौटुम्बिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करने में असफल हुई । राजनीति में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करने वाली मालती अपने ही पारिवारिक जीवन में असफल हो जाती है । सामाजिक यश प्रतिष्ठा और कीर्ति की हवस ने उसे अपने परिवार से ही तोड़ दिया । उसे अपनी बेटी और बेटे से भी अलग होना पड़ा । उसकी राजनैतिक भूख ने इसकी परवाह नहीं की किन्तु जब कभी वह कुछ क्षण के लिये नितान्त अकेली रहती है, तब उसे अपने पुत्र और पुत्री का वियोग त्रासदायक लगता है ।

लघु उपन्यास के विकासात्मक इतिहास में कमलेश्वरजी की रचनाओं का योगदान हर दृष्टि से महत्वपूर्ण है । उन्होंने इस विधा को नया आयाम और रूप तो दिया ही है, साथ ही साथ नवीन कथ्य विषय और शैली भी दी है । कम से कम शब्दों में सम्पूर्ण परिवेश को प्रस्तुत करने का प्रयास उनकी रचनाओं का सबसे बड़ा वैशिष्ट है ।

-=: 14 :=-

§4§ <u>आगामी अतीत</u> :-

कमलेश्वर का यह नवीनतम लघु उपन्यास है । "काली आँधी" और "आगामी अतीत" एक लम्बे अरसे के बाद ये दोनों लघु उपन्यास लिखे गये हैं । आज की सामन्तवादी और पूंजीवादी सामाजिक व्यवस्था को गलत और घातक तरीकों को अपनाकर, सफलता कैसे मिलती है इसका चित्रण इस उपन्यास में हुआ है । इस लघु उपन्यास का नायक है कमल बोस । । अनेक उचित अनुचित और सही गलत मार्गों को अपना कर अभूतपूर्व यश और कीर्ति प्राप्त करने के पश्चात भी कुछ ऐसा है जो कमल बाबू को भीतर ही भीतर खरोंचते रहता है, कुछ लोग ऐसे हैं जो उन्हें बार-बार याद आते रहते हैं ।

आधुनिक शहरों की नजदीक से देखी जिन्दगी, इन शहरों में निवास करने वाले व्यक्तियों के दु:ख दर्द, उनकी आशा, आकांक्षायें तथा निराशा, अभाव और व्यथा सभी कुछ इस रचना में बड़े ही स्वाभाविक ढंग से चित्रित किया गया है । कमलेश्वरजी की इस रचना में वैचारिक स्तर के साथ एक अत्यन्त कोमल और कठोर स्वर भी भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति के साथ मिलेगा । मनुष्य के भीतर जितनी भी अच्छी और बुरी बातें होती है, स्नेह और नफरत के जितने भी भाव होते हैं उन सभी को अत्यन्त तीव्र अभिव्यक्ति इस उपन्यास में मिली है । कमलेश्वरजी ने इस रचना में मध्यवर्गीय एवं निम्नवर्गीय परिवेश का चित्रण किया है । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जीवन की परिस्थितियां बहुत ही तीव्रता के साथ परिवर्तित हुई है । यह उपन्यास जीवन के बदले हुए सन्दर्भों की उस पीड़ा को प्रकट करता है । "कमलेश्वर के उपन्यासों की कथा भूमि जीवन के यथार्थ को अपने वास्तविक रूप में चित्रित करती है । उनकी पटकथा भूमि स्थितियों और पात्रों के माध्यम से विश्वसनीय लगती है, कहीं भी कृत्रिम या आरोपित नहीं होती । उपन्यासों का यह परिवेश "वस्तु" के अनुकुल है । उन्होंने अपने सभी उपन्यासों में मानवीय पक्ष को संवेदना के धरातल पर सहजता और कलात्मकता से रूपायित किया है।"§1§

आगामी अतीत में कमलेश्वर जी ने उन व्यक्तियों की जिन्दगी का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया है, जिनकी आमतौर पर उपेक्षा होती है । इस रचना

---

§1§ "कमलेश्वर" - कृष्ण कुरडिया - पृष्ठ 201.

को पढ़ने के पश्चात यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखक ने उपेक्षायें सहते जिन्दगी व्यतीत करने वाले पात्रों को मुखरित किया है । इस उपन्यास में आर्थि क दृष्टि से पिछड़े समाज द्वारा उपेक्षित वर्ग की अभावों अभावों भरी जिन्दगी का इस उपन्यास में सजीव चित्रण है ।

"कमलेश्वर ने आगामी अतीत उपन्यास में कस्बे की वेश्याओं की जिंदगी को अत्यन्त सूक्ष्मता एवं स्वाभाविकता से अंकित किया है । उनके जीवन में आर्थिक संकट के कारण कितनी कटुता आ गयी है । लेखक ने सहज और यथार्थ चित्रण करके उनकी दारुण कथा तथा दयाहीन परिस्थितियों को पाठक के सामने रखा है, जो उनकी भाषा से ही स्पष्ट हो जाता है ।"(1)

कमलेश्वरजी ने सदा ही जीवन के कटु यथार्थ को समाज के सम्पूर्ण परिवेश के साथ अभिव्यक्त किया है । चांदनी के रूप में जिस नारी पात्र का चित्रण कमलेश्वरजी ने किया है वह प्रशंसनीय है ।

इस उपन्यास का कथा सार यह है- कमलबोस अपनी मां के साथ दार्जिलिंग में रहते थे । उनका बचपन बहुत कठिनाइयों में बीता था । मां ने बहुत मुश्किलें काट-काट कर उसकी डॉक्टरी की पढ़ाई का प्रबंध किया था । लेकिन उसकी मां अपनी महेनत का परिणाम देखने से पहले ही चल बसी थी । डॉक्टरी की परीक्षा की तैयारी करने के लिए कमल कलकत्ता से दार्जिलिंग आया था । एक दिन उसके पैर में मोच आ गई थी । उसने वहीं के थापा वैद्य से अपने पांव का इलाज करवाया । इसी बीच उनका परिचय थापा वैद्य की एक मात्र संतान चंदा से हुआ । परिचय प्यार में बदल गया । दोनों ने एक साथ जीने की प्रतिज्ञा की । कमल ने सोचा था कि डॉक्टरी पास करके वह गाँव में ही काम करेगा । लेकिन नियति ने कुछ और ही निश्चित कर रखा था । कमल ने 70 प्रतिशत अंक लेकर डॉक्टरी पास की । किन्तु उसके बाद उनके जीवन में अनेकानेक परिवर्तन आए । मानसी केमीकल्स के मालिक चन्द्रमोहन सेन ने उसे और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया । जीवन के अनेक नये रास्ते दिखाए । कमल सब कुछ पुराना भूल गया । चन्द्रमोहन सेन ने अपनी बेटी निरूपमा के विवाह का प्रस्ताव रखा । कमल बोस ने

---

(1) पूर्वोक्त - पृष्ठ 203.

बहुत सफल व समृद्ध जीवन का सपना देखा । और विवाह हो गया । विवाह की पार्टी में चन्द्रमोहन सेनने मानसी केमिकल्स का संपूर्ण कारोबार कमल बोस और निरुपमा को शादी की सौगात के रूप में देने की घोषणा की । कमल बोस का कार्य-क्षेत्र बहुत विस्तृत हो गया "और भयानक गहमा-गहमी की जिंदगी शुरू हो गई थी- मैन्युफैक्चरिंग प्लांट्स को देखना, केमिकल्स डिवीज़न को मॉर्डनाइज़ करना, ड्रग डिवीजन को संभालना । अपनी लैब में खुद खोज और जांच करना । एक्सपोर्ट का काम देखना । नेशनल मार्केट में दवाइयां पहुंचाना, विदेशों में हो रही नई खोज की जानकारी रखना, पैकिंग और रैपर की डिजाइनें देखना । विज्ञान का सारा कारोबार ।"

अब कमल बोस का जीवन क्षेत्र, कार्यशैली सब बदल गया था । लेकिन पति-पत्नी के आपसी विचारों में मूलतः भेद होने के कारण उनका दाम्पत्य जीवन सफल नहीं हो सका । दाम्पत्य जीवन उस घटना से समाप्त ही हो गया । जब मानसी केमिकल्स में कार्यरत निरुपमा के ममेरे भाई पर घटिया दवाएं बनाने का आरोप लगा । निरुपमा चाहती थी कि कमल झूठी गवाही देकर उसे सजा होने से बचाले । लेकिन कमल बोस नहीं माने । वे घर छोड देना चाहते थे, पर निरुपमा ने नहीं जाने दिया और निरुपमा ने स्वयं सोते वक्त बहुत मात्रा में नींद की गोलियां खा ली और वह हमेशा के लिए सो गई । इस घटना से कमल बोस सहम गए थे । मानसी केमिकल्स में बिलकुल लगाव नहीं रह गया । ऐसे ही अवसाद के दिनों में उसे चंदा का प्रेम याद आया और उसे देखने के लिए उनका मन छटपटाने लगा । वे उसे खोजने दार्जिलिंग पहुंचे । वहां अपने मित्र प्रशांत की सहायता से चंदा को खोजने का प्रयत्न करने लगे । चंदा के बारे में किसी ने कुछ बताया तो किसी ने कुछ । नीली घाटी में पहुंचकर उन्हें पता लगा कि चंदा तो एक बरस हुए पागल होकर मर चुकी थी । चंदा के पिता विवश होकर चंदा का विवाह जंगल के एक हरकारे से कर दिया । उसका आदमी उससे उम्र में बहुत बड़ा था । एक दिन किसी जंगली जानवर ने उसके पति को मार दिया । लोगोंने बताया तब वह अपनी बेटी को लेकर नीली घाटी चली गई थी । कमल बोस नीली घाटी जा पहुंचे । वहां पता चला कि चंदा तो एक बरस हुए पागल होकर मर चुकी थी और उसकी जवान बेटी चांदनी भी कहीं भाग गई । अब कमल चांदनी के लिए वापिस लौटा था,

- -

-=: 17 :=-

उसने कार्सियोंग पहुंचकर थोड़ा आराम करना चाहा । उसने गाड़ी खड़ी कर फल वाले से सेब खरीदे, तभी सामने वाले मकान से उसने एक युवती को एक पुरूष पर क्रोध करते हुए देखा तब फल वाले ने उसे बताया कि यहां वेश्याएं रहती हैं ।

कमल बोस ने भीतर से उस युवती के लिए "चांदनी" का संबोधन भी सुन लिया था । उनका तनाव और बढ़ गया । चांदनी को इस हाल में देखकर उसे बहुत कष्ट हुआ । उसने चांदनी को बेटी बनाकर रखने की बात सोची थी । किंतु चांदनी पैसा लेकर अपना शरीर बेचकर रहने के लिए तैयार हो गई । कमल बोस ने सोचा कि वह चांदनी से पूछेगा कि क्या वह उनकी बेटी बनकर नहीं रह सकती ? वह चांदनी के घर की ओर पहुंचा, तो रास्ते में ही उन्हें चांदनी मिली । उसके हाथ में एक मुड़ी-तुड़ी तस्वीर थी । यह तस्वीर वही थी, जो चंदा ने उसकी किताब से निकाल ली थी । कमल बोस ने चांदनी से पूछा कि क्या वह उसकी बेटी बनकर उनके साथ रहेगी ? चांदनी ने उसका यह आग्रह बड़ी निर्ममता से ठुकरा दिया ।

इस उपन्यास में कमलेश्वर ने पात्रों के माध्यम से पूंजीवादी षड़यन्त्र का पर्दाफास किया है । अवसरवादी चरित्र के रूप में जहां कमल बोस दिखाई दिया किन्तु अन्त में उसे इस बात का दुख भी है कि जहाँ वह पहुंचा वहां पहुंचने की बहुत बड़ी कीमत उसे चुकानी पड़ी । उसे अपने ही लोगों को खोना पड़ा । जिसमें वापस आने की उसकी चाह है पर कुछ भी करने में असमर्थ है । द्विधा और संघर्ष से पूर्ण ऐसे पात्र बहुत कम देखने को मिलते हैं ।

कमलेश्वर ने हिन्दी उपन्यासों को नयी भाषा दी जिसका अपना मुहावरा है और अपनी अलग पहचान है । जिस मानवीय जीवन का चित्र उन्होंने दिया है वह पाठकों को सदा ही अपना अनुभूत हुआ । यही कमलेश्वरजी के उपन्यासों की अपनी निजी विशेषता है ।

§5§ <u>तीसरा आदमी</u> :-

"तीसरा आदमी" कमलेश्वरजी का एक ऐसा लघु उपन्यास है जो बिना किसी बनावट के सहज शैली में लिखा हुआ है । पति पत्नी के बीच किसी "तीसरे आदमी" के आने से मध्यवर्गीय दाम्पत्य में एक संघर्ष आपसी सम्बन्धों के बीच कैसे निर्माण होता है इसका प्रभावी चित्रण इसमें किया गया है । यह उपन्यास मात्र

कहानी नहीं है अपितु मध्यवर्गीय दाम्पत्य की मान्यताओं का दस्तावेज बन पड़ा है । मध्यवर्गीय जीवन की कुण्ठाओं का, विशेषताओं का तथा अभावों का सशक्त चित्रण इस रचना में हुआ है । प्रथम पुरुष "मैं" की शैली में लिखा यह लघु उपन्यास अनेक स्थलों पर अपने वैशिष्टे को लिए हुए है । आकार में लघु होते हुए भी अपने विस्तार और गुण धर्म में यह कृति विस्मृत है । एक कस्बे का आदमी महानगर में आते-आते कैसे टूट जाता है इसका सशक्त चित्रण लेखक ने इस रचना में किया है ।

नरेश मध्यवर्गीय परिवार का युवक था । माता-पिता की आकांक्षाओं के अनुरूप उसका विवाह साधारण से परिवार की एक युवती चित्रा से हो जाता है । बारात में नरेश का ममेरा भाई सुमन्त भी गया था । अधिक मुखर होने के कारण विवाह के दिन ही वह चित्रा से घुल-मिल कर बातें करने लगा । नरेश चित्रा को अपने घर ले आया । अभी घर के मेहमान भी नहीं गए थे और सुमन्त हर समय चित्रा के पास ही बना रहता रहता था । नरेश को उसकी हर समय की उपस्थिति अखरने लगी । उसे लगने लगा कि यह व्यक्ति उन दोनों के मध्य आने लगा है । चित्रा की बिदाई के बाद मेहमान चले गए । सुमन्त भी दिल्ली चला गया । चित्रा अपने मायके से नरेश को पत्र लिखती थी । कभी-कभी उन पत्रों में सूचना होती है कि सुमन्त का पत्र आया था । चित्रा अपनी परीक्षा देकर ससुराल लौट आई । नरेश को अपना शहर छोटा लगने लगा । उसे लगता कि वह इलाहाबाद में अपनी पत्नी को घुमाने के लिए कहां लेकर जाएं । वह रेडियो स्टेशन पर काम करता था । एक बार सुमन्त का पत्र आया । उसने नरेश की बहन के लिए कोई वर तलाशा था । नरेश और उसके पिता दिल्ली जाकर बात भी पक्की कर आए थे और नरेश के दिल्ली तबादले का काम भी हो गया था । नरेश दिल्ली चला गया । वह सुमन्त के कमरे में रहने लगा । कुछ दिन बाद वह चित्रा को भी ले आया । चित्रा और सुमन्त बहुत खुलकर बातें करतें और साथ-साथ खाते-पीते । सुमन्त एक प्रेस में काम करता था । उसने सुझाव दिया कि यदि चित्रा भी काम करने लगे तो उसका वक्त भी कट जाएगा और कुछ पैसे भी बन जाएंगे । सुमन्त का यह सुझाव चित्रा को पसंद आया । सुमन्त प्रूफ-रीडिंग के लिए काम ले आया । उसने चित्रा को प्रूफ-रीडिंग का काम सिखा दिया । चित्रा उसके साथ मिलकर यह काम करने लगी । दोनों इसी काम में उलझे रहते । इस कारण दोनों के संबंधों में

-=: 19 :=-

अधिक निकटता बढ़ती गई । नरेश इसे अनुभव करने लगा था । लेकिन उस पर इतने अधिक आर्थिक दबाव थे कि वह दिल्ली जैसे शहर में अलग मकान लेकर रह नहीं सकता था । वे तीनों एक ही कमरे में रहते थे । सुमन्त की उपस्थिति के कारण नरेश चित्रा से अपने मन की बात भी नहीं कह पाता था । इस प्रकार नरेश अभिव्यक्ति के अभाव में कुंठित होता गया । एक बार नरेश को अपने काम के सिलसिले में बाहर जाना पड़ा, लेकिन वह यह भी नहीं चाहता था कि चित्रा को सुमन्त के पास अकेला छोड़ जाए । परंतु इतना पैसा भी उसके पास नहीं था कि चित्रा को भी साथ ले जाए । उसने चित्रा से बात की तो चित्रा ने कहा कि डर की कोई बात नहीं है । वह अकेली भी रह सकती है । सुमन्त जब घर आया तो उसे नरेश के बाहर जाने के बारे में पता चला । सुमन्त ने भी कहा कि वह भी चार-पांच दिन के लिए आगरा जा रहा है और हो सकता है कि उसको अधिक समय के लिए भी रुकना पड़ जाए । नरेश यह बात सुनकर निश्चित हो गया ।

जब नरेश लौट कर आया तो उसे कुछ असामान्य-सा लगा । उसे लगा कि उसकी पत्नी और उसके बीच कुछ ऐसा है , जिसे वह बताना नहीं चाहती । उसने पूछा कि क्या सुमन्त आगरा चला गया था । चित्रा ने बताया कि उसका कार्यक्रम नहीं बन पाया । नरेश की परेशानी बढ़ गई । चित्रा ने अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए बताया कि वह तो अंदर अकेली ही सोती थी और सुमन्त बाहर गली में सोता था । नरेश को लगा कि चित्रा अपनी स्थिति का स्पष्टीकरण दे रही है । सुमन्त ने भी यही बात दोहरा दी । तब नरेश को शक हो गया कि कुछ बात है । एक दिन उसने चित्रा और सुमन्त को कनाट प्लेस में साथ-साथ घूमते हुए भी देख लिया था । चित्रा सुमन्त के कंधे पर हाथ रखे चली जा रही थी । नरेश का मन अब इस संबंध से उचट गया था । वह चित्रा को साफ-साफ कुछ कह नहीं पाता था । इन्हीं दिनों चित्रा गर्भवती हो गई थी । नरेश परेशान रहने लगा । उसने चित्रा से कह दिया था कि वर्तमान परिस्थितियों में वह चित्रा के साथ नहीं रह सकता था । नरेश का मानसिक तनाव इतना बढ़ गया कि वह औफिस से छुट्टी लेकर इलाहाबाद आ गया । नरेश को अकेले आया देखकर घर वाले उससे बहुत पूछताछ करने लगे । नरेश ने उन्हें बता दिया कि वह माँ बनने वाली है । यह सुनकर परिवार के सभी प्रसन्न हो गए ।

-=: 20 :=-

बहुत दिन इलाहाबाद में ही बीत गए । नरेश का मन करता था कि वह नौकरी छोड़ दे तथा वापिस दिल्ली ही न जाएं, लेकिन एक दिन उसके कार्यालय से पत्र आ गया कि वह तुरंत आ जाए । नरेश वापिस दिल्ली लौट गया तथा वह अपने मित्र के घर ठहरा । चित्रा का हाल जानने के लिए नरेश ने सुमन्त के प्रेस में फोन किया । सुमन्त ने नरेश पर दोष मढ़ा तथा अपने संबंधों के बारे में बता दिया । कुछ समय बाद चित्रा के पिता ने नरेश के कार्यालय के पते पर उसे पत्र भेजा कि चित्रा ने पुत्र को जन्म दिया है । नरेश को तनिक भी प्रसन्नता न हुई । फिर भी अपने मन को उसने समझाया तथा सोचा कि एक नए जीवन की शुरूआत की जा सकती है । यही सोच कर नरेश ने चित्रा को पत्र लिखकर वापिस लौट आने का आग्रह किया । आग्रह को स्वीकार कर चित्रा अपने बेटे के साथ नरेश के पास लौट आई । जिंदगी को फिर नए सिरे से जीने की शुरूआत की गई । लेकिन तीसरे व्यक्ति का व्यक्तित्व संबंधों के ऊपर हावी रहता । इसी संदेह के कारण नरेश सामान्य जीवन नहीं जी पा रहा था । गुड्डू के कारण जीवन मधुर बना रहा ।

एक दिन सुमन्त नरेश का सामान पहुंचाने आ गया । वह गुड्डू के साथ ज्यादा हिल-मिल गया था । एक बार गुड्डू बीमार हो गया । चित्रा ने नरेश को फोन किया । वह नहीं मिला । फिर सुमन्त को बुला लिया । सुमन्त ने गुड्डू को अस्पताल में भर्ती करवा दिया । उसने गुड्डू के लिए बहुत काम किए । कुछ दिन बाद गुड्डू ठीक होकर वापिस आ गया । वह सुमन्त से हिल मिल गया था । चित्रा दुबारा गर्भवती थी । नरेश दुसरे बच्चे को जन्म देना नहीं चाहता था । क्योंकि वह आर्थिक स्थिति का बोझ सहने में सक्षम नहीं था । नरेश तबादला करवाकर किसी दूसरे शहर में चला जाना चाहता था । नरेश ने पटना तबादला करवा लिया । चित्रा अपनी नौकरी छोड़कर जाने को तैयार नहीं थी । नरेश पटना चला गया । धीरे-धीरे संबंध बिखर गए । नरेश प्रसव के लिए उसे पटना बुलाना चाहता था, लेकिन चित्रा ने आग्रह स्वीकार नहीं किया । अब फिर सुमन्त व चित्रा साथ-साथ रहने लगे थे ।

एक दिन अचानक नरेश दिल्ली आया । सुमन्त को मिला । वह पता लेकर घर पहुंचा । घर में चित्रा थी । अब वह एक बेटी की मां भी बन चुकी थी । सुमंत घर नहीं लौटा था । शायद वह नरेश के कारण ही घर नहीं आया था । नरेश चित्रा से लड़कर पटना पहुंच गया ।

-=: 21 :=-

नरेश को बहुत दिन बाद पता चला कि सुमन्त फिर कभी भी नहीं लौटा । उसने होटल के कमरे में जाकर आत्महत्या कर ली थी । इस घटना के बाद नरेश को इस बात की खबर हुई । चित्रा ने भी उसे सूचित नहीं किया । सारी पीड़ाएं उसने स्वयं ही भोगीं । नरेश सोचता रहा कि पुलिस ने उसे बहुत तंग किया होगा । नरेश ने सोचा कि शायद अब चित्रा उसके पास आ जाएगी । लेकिन ऐसा नहीं हुआ । दोनों एक ही जीवन नहीं जी सकते थे, क्योंकि तीसरा आदमी उनके बीच था ।

इस उपन्यास का केंद्र पारिवारिक विघटन है । मध्यवर्गीय समाज में जीवन के सुख सुविधाएं प्राप्त करने की इच्छा ही संयुक्त परिवारों की संस्था को तोड़ रही है । यहां भी परिवार एक संकुचित इकाई के रूप में उभरा है ।

इस कथानक में एक मनोवैज्ञानिक ग्रंथि भी उभरी है । यदि नरेश के मन में सुमन्त को लेकर ग्रंथि न बनी होती, तो नरेश व सुमन्त के संबंध इतने तनाव पूर्ण न होते । विवाह के बाद से ही सुमन्त की उपस्थिति नरेश की आंखों में चुभने लगी थी । समय बीतने के साथ ही यह बात बढ़ती गई और इसके परिणाम दुःखांत में प्रकट हुए । सुमन्त ने भी संभवतया इसी ग्रंथि के हावी होने के कारण आत्महत्या करली । इस उपन्यास में आधुनिक मानव जीवन की निराशाजन्य पलायनवादिता उभर कर सामने आई है ।

घनश्याम मधुपजी का कहना है कि-"निम्नवर्गीय परिवार में जन्में हर सदस्य का अपना स्वयं का स्वतंन्त्र अस्तित्व नहीं होता है । उसके घर में जूते तो सब के अलग-अलग आते हैं पर चप्पलें कुछ इस तरह की खरीदी जाती है कि जिसमें एक दूसरे का काम भी निकल जाय । लेखक ने सम्वेदना के माध्यम से हर छोटी-मोटी घटना को पकड़ने का सफल प्रयास किया है ।"(1) आत्मकथात्मक शैली में और सांकेतिक भाषा में लिखा हुआ यह लघु उपन्यास कस्बाई और महानगरीय जिन्दगी की एक जुडती हुई कड़ी के रूप में सामने आता है । दिल्ली जैसे विशाल नगर में जीवन के टूटते और बिखरते मूल्यों को कमलेश्वरजी ने बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है । कमलेश्वरजी के सभी लघु उपन्यासों में सांकेतिकता और संवेदनशीलता के कारण तीसरा आदमी एक उत्कृष्ट लघु उपन्यास माना जायेगा ।

---

(1) हिन्दी लघु उपन्यास - घनश्याम मधुप - पृष्ठ 170.

पति पत्नी के संबंध कुछ इस प्रकार के होते हैं कि उनके बीच तीसरा आदमी आने से जो अन्तर निर्माण हो जाता है वे उसे सहन नहीं कर पाते, तीसरे के आने से जीवन में अजीब सा अन्तराल पैदा हो जाता है । मनुष्य के जीवन में यह क्यों होता है इसका मार्मिक चित्रण कमलेश्वरजी ने इस रचना में किया है । "तीसरा आदमी" के रूप में लेखक का यह लघु उपन्यास वर्तमान आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर मध्यवर्गीय व्यक्ति की चेतना के बदलते हुए स्वरूप का चित्र है ।"§1§ वस्तुतः यह स्थिति किसी व्यक्ति या परिवार की नहीं है । अपितु आज के निम्नवर्गीय तथा मध्यवर्गीय समाज की ही है । कमलेश्वरजी ने इसी कारण मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन का एवं उनकी समस्याओं का चित्रण किया है । समकालीन जीवन के विभिन्न और विविध रूपों को सही अभिव्यक्ति मिली है । जीवन का कटु सत्य अनेक स्तरों पर इस रचना में चित्रित हुआ है और यही इसकी विशेषता है ।

§6§ <u>समुद्र में खोया हुआ आदमी</u> :-

"तीसरा आदमी" की तरह इस लघु उपन्यास में भी कमलेश्वर ने शहरी जीवन के बिखराव और टूटन को अभिव्यक्त किया है । क्योंकि शहरी जीवन का मूलाधार अर्थ है और अर्थकार का श्रोत अब सूख चुका है । सामान्य आदमी के जीवन के संघर्ष का उसके अभावों का चित्रण इस रचना में और भी अधिक प्रभावी हुआ है । इस लघु उपन्यास का प्रत्येक पात्र संघर्षरत है । अपने अभावों से लड़ता हुआ वह बेहतर आर्थिक व सामाजिक जीवन की तलाश में हैं । "स्वतंन्त्रता के बाद लिखे दूसरे लेखकों के लघु उपन्यासों में मुझे कोई ऐसा लघु उपन्यास दिखाई नहीं देता जिसमें किसी परिवार या उसके सदस्यों के आंतरिक एवं बाह्य संघर्ष को पर्याप्त विस्तार और गहराई से चित्रित किया जा सका हो और जो इतना प्रभावी भी हो जितना कि "समुद्र में खोया हुआ आदमी" ।"§2§

जिस परिवेश और परिवार के जीवन संघर्ष का चित्रण इस लघु उपन्यास में हुआ है वह मात्र दिल्ली का ही नहीं है अपितु वह भारत का कोई भी नगर हो

---

§1§ डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना - "कमलेश्वर" - पृष्ठ-110.
§2§ डॉ. वीरेन्द्र सक्सेना - "कमलेश्वर" - पृष्ठ-190.

सकता है । इस उपन्यास में श्यामलाल अपनी पत्नी व बच्चों के साथ दिल्ली में रहते थे । वे सिंधी के ट्रांसपोर्ट कंपनी में क्लर्क थे । एक दिन रोड पर सामान की चोरी हो गई । इसी कारण श्यामलाल को दूसरे ही दिन नौकरी से बरखास्त कर दिया गया । घर में उनकी दो बेटियां तारा व समीरा व एक पुत्र बीरेन भी थे । जब से श्यामलाल को नौकरी से निकाल दिया गया था, तब से उनकी आर्थिक हालत दिन प्रति दिन खराब होती गई । मकान का किराया चुकाने के लिए उनके पास कुछ भी नहीं था । धीरे-धीरे मकान का किराया बढ़ता ही गया । इन्हीं दिनों हरबंस नामक युवक का आना-जाना शुरू हुआ । हरबंस गिलाफों, चादरों, साड़ियों व अन्य कपड़ों पर फूल-पत्तियां ट्रेस करने का काम करता था । तारा व समीरा उसके काम में हाथ बटाती थीं । लेकिन श्यामलाल को अपनी बेटियों का व्यवहार तथा हरबंस का आना-जाना अच्छा नहीं लगता था । थोड़े दिनों बाद तारा हरबंस की दुकान में चालीस रूपये प्रति माह पर काम करने लगती है । धीरे-धीरे घर की छोटी-मोटी वस्तुएं तारा ही लाने लगी । और इसी प्रकार श्यामलाल तारा को चालीस रूपये देने वाले हरबंस के साथ भेज देता है । "जैसे घर को सिर्फ चालीस रूपये माहवार की जरूरत थी श्यामलाल को लगता है कि वह सिर्फ फालतू चीज की तरह रह गया है । जिसे फेंका नहीं जा सकता सिर्फ बरदाश्त किया जा सकता है । जिसे सहा भी नहीं जाता सिर्फ होने को महसूस किया जाता है ।"﴾1﴿

श्यामलाल को यही आस थी कि बीरेन कुछ कमाने लगेगा तो घर की हालत सुधर जाएगी । बीरेन सारे घर का केंद्र बिंदु था । घर के सभी प्राणियों की निगाहें उस पर ही टिकी थीं । एक दिन बीरन नौसेना में चुन लिया गया और वह अपनी नौकरी के लिए समुद्र पर चला गया । बीरन के चले जाने पर घर में सन्नाटा-सा छा गया। हर महीने बीरन पिता के नाम मनीआर्डर कर देता था । सारे पैसे सिर्फ आठ-दस दिन में ही खत्म हो जाते थे । एक बार श्यामलाल घर में न होने के कारण डाकिए ने मनीओर्डर किसी और को देने से मना कर दिया था । तब से श्यामलाल ने बीरन को पत्र लिखकर मनीआर्डर मां के नाम से भेजने के लिये लिखा ताकि गैरहाजरी में भी मिल जाया करें । श्यामलाल पुरानी चीजें खरीदते और उन्हें दोबारा बेचकर मुनाफा कमाते थे । लेकिन उसका

﴾1﴿ "समुद्र में खोया हुआ आदमी" - कमलेश्वर - पृष्ठ-13.

यह धंधा अधिक दिन नहीं चल सका ।

तारा ने हरबंस से ब्याह कर लिया । बीरन को भी दक्षिण ध्रुव अभियान दल में शामिल कर लिया गया था । तारा के जाने के बाद आमदनी में बहुत कमी आ गयी थी । बीरन के मनीआर्डर भी आने बंद हो गए थे । बीरन पत्र में लिखी हुई तारीख व गाड़ी से नहीं पहुंचा । तब घर में सभी परेशान हो गए थे कि बीरन क्यों नहीं आया । पांचवे दिन उनके घर एक आदमी पहुंचा था । उसने बताया कि बीरन कहीं चला गया था । उसकी चप्पलें जहाज की रेलिंग के पास पड़ी थीं । वह जहाज में नहीं था । उसकी बहुत तलाश की गई, लेकिन उसका कुछ पता न चला । यह बात सुनकर घर में रोना-पीटना मच गया था । तारा और हरबंस को भी पता चला तो वे भी बहुत दु:खी हुए । बहुत दिनों तक बीरन की तलाश जारी थी, पर उसको कुछ पता न था । एक दिन सरकारी खत भी आ गया था । हरबंस सबको समझाता रहा कि समुद्र में लापता हुए लोग भी बरसों बाद लौटकर आए हैं ।

सभी सदस्य प्रभु से बीरन के लिए प्रार्थनाएं करते थे । पुलिस बीरन की पूछताछ के लिए श्यामलाल के घर आने लगी । पुलिस वालों ने बताया था कि नेवी वालों का ख्याल था कि बीरन नौकरी से जी चुराकर कहीं भाग गया है । श्यामलाल ने बीरन के लिए सरकारी दफ्तरों के बहुत चक्कर काटे । धीरे-धीरे सब आशाएं समाप्त हो गई थी । पुलिस अपना काम खत्म कर चुकी थी । नौसेना के अधिकारियों ने फाइलें बंद कर दीं । श्यामलाल ने एक फैक्टरी में दरवान की रात की नौकरी खोज ली थी । रात को श्यामलाल ड्युटी पर रहते थे । इससे समीरा और उसकी मां बेसहारा महसूस करने लगी थीं । हरबंस ने समीरा को नर्स के कोर्स में भरती होने के लिए तैयार कर लिया था । हरबंस ने अपने सास-ससुर को समझाया कि वह बीरन को मृत मान लें ताकि सरकार से कुछ पैसा लिया जा सके । एक दिन श्यामलाल और उनकी पत्नी को बीरन की मृत्यु स्वीकार करने के लिए तैयार करवा लिया । उस दिन घर में फिर रोना-पीटना मचा । सभी लोगों को पता चल गया कि जो बीरन खो गया था वह मर चुका है । समीरा होस्टल में चली आई थी । तारा मां अकेली होने के कारण अपने घर ले गई । हरबंस ने अर्जी देकर फिरसे केस खुलवाया । बहुत दौड़ धाम की किंतु कुछ नहीं हुआ । एक दिन पता

चला कि बीरन ने अपनी दक्षिण ध्रुव यात्रा अभियान के पांच महीनों की तनख्वाह नहीं ली थी । अब वह तनख्वाह व बीरन का सामान मिलने वाला था । जिस दिन सारा सामान मिला, उस दिन श्यामलाल की पत्नी बिलख-बिलख कर रो पड़ी और सभी ने समझाया था कि जो लौट कर आने वाला नहीं है, उसके लिए दुःख क्यों किया जाए । यह सोचकर ही सब फिर अपने-अपने कामों में मस्त हो गए ।

बीरन के समुद्र में खो जाने से सारा परिवार ही मानों समुद्र में खो जाता है । हरबंश, श्यामलाल और रश्मि को बीरन की मौत स्वीकारने को कहता है जिससे उसका मुआवजा मिल सके ।

इस लघु उपन्यास में शहरी निम्न मध्यवर्गीय परिवार के विघटन की कथा है । वह तमाम समाज के बदलते व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को प्रत्यक्ष रूप में इसमें प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । इसमें न तो कोई आदर्श है और न ही कोई समझौतावादी दृष्टिकोण जिसके परिणाम स्वरूप यह रचना और भी प्रभावशाली हुई है । "समुद्र में खोया हुआ आदमी" में कमलेश्वर ने घर को जहाज की संज्ञा से अभिसित किया है । और इस चित्रण में उनकी भाषा बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है जो समूचि स्थिति को प्रबल कर देती है । उसमें सांकेतिकता, रूपक धार्मिकता, प्रतीकात्मकता आदि गुण सहज ही मिल जाते हैं।"§1§

इस कहानी में आर्थिक संघर्ष के कारण बिखराव उत्पन्न हुआ है । आधुनिक परिवेश में आर्थिक दबाव परिवारों के जीवन में इतनी त्रासद स्थितियां तथा विसंगतियां पैदा कर देते हैं कि व्यक्ति संबंधों के अर्थ ही नहीं पहचान पाता तथा उसे सब कुछ व्यर्थ ही लगता है ।""समुद्र में खोया हुआ आदमी" एक शहर में निम्न मध्यवर्गीय परिवार के विघटन की कथा है । यह कथा उस घुटते, परेशान होते और टूटकर बिखरते परिवार का चित्र प्रस्तुत करने और उसके माध्यम से वर्तमान समाज में बदलते हुए व्यक्तिगत पारिवारिक तथा सामाजिक संबंधों को प्रत्यक्ष रूप में रखने का प्रयास करती है । आज का मध्यवर्गीय व्यक्ति किसी प्रकार अपनी अर्थवत्ता खोकर आधुनिक सभ्यता की भीड़ के एक महत्वहीन अंश में रूपान्तरित होता जा रहा है ।"§2§

---

§1§ "कमलेश्वर" - कृष्ण कुरडिया - पृष्ठ-217.
§2§ "कमलेश्वर" - मधुकर सिंह - पृष्ठ-215.

-=: 26 :=-

इस उपन्यास में नगरीकरण की भयावहता, महंगाई, आर्थिक दबावों की असहनीयता, आंतरजातीय विवाह, लड़कियों का नौकरी करना, माता-पिता का बच्चों पर आश्रित रहना, प्रशासन की निष्क्रियता, लाल फीताशाही के पिता-पुत्र के संबंध की सार्थकता केवल आर्थिक पक्ष पर आकर टिक जाती है। वस्तुतः इस उपन्यास में आदमी का समुद्र में खो जाने का प्रतीकार्थ आर्थिक दुर्वहता-भरे महा-नगरीय जीवन में मानवीय सरोकार ही नहीं पारिवारिक सरोकार तक का खो जाना है।

§7§ लौटे हुए मुसाफिर :-

देश के विभाजन को लेकर लिखा गया कमलेश्वरजी का यह प्रथम लघु उपन्यास है जिसमें बटवारे की भीषणता और खून खराबे को यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है। यह एक ऐसी रचना है जिसमें निम्नवर्ग और शहरी जिन्दगी को चित्रित किया गया है। वे लोग जो आजादी की लड़ाई में साथ लड़े थे बटवारे से एक दूसरे के दुश्मन हो गये थे। इस उपन्यास को कथानक विभाजन से संबंधित है।

एक बस्ती थी, जहां हिंदू और मुसलमान मिल कर रहते थे। लोग समृद्ध थे और चारों तरफ प्रेम भाईचारे व शांति का वातावरण था। जब आज़ादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी, तभी एक भूचाल आया। उसमें आग भी थी। उसी आग में जल कर यह बस्ती बरबाद हो गई।

अब इस बस्ती में नसीबन और जुम्मन साईं ही बाकी बचे थे। पहले जब यह बस्ती भरी-पूरी थी, तो जुम्मन साईं का घर बस्ती का केंद्र था। वह गांव का आध्यात्मिक आदमी समझा जाता था। वह सबके लड़ाई-झगड़े निपटाता था। उसके घर में लोगों की भीड़ लगी रहती थी। नसीबन विधवा थी। अपने बच्चों का जैसे-तैसे पालन कर रही थी। बच्चन की पत्नी बहुत देर हुए मर चुकी थी। उसके बच्चे जब भी बीमार होते, नसीबन झट वहां पहुंच जाती और उसके बच्चों को मां का प्यार देती। लेकिन हिंदू मुस्लिम के दंगों में लोगों ने उसकी बदनामी शुरू कर दी। उसे इन सब बातें की कोई परवाह नहीं थी। एक बार पुलिस बच्चन को पकड़ने के लिए गांव में तैनात थी। तब नसीबन ने अपने घर में उसके बच्चों को साथ में रखा। इस पर हिंदू व मुसलमानों में नफरत के बीज बोने

वाले साँई जुम्मन तथा अनेक अन्य लोगों ने उसे बहुत भला-बुरा कहा, लेकिन वह अपने मानव धर्म से नहीं हटी । धीरे-धीरे सांप्रदायिकता की आग इतनी बढ़ गई कि हिंदू संघी बन गए और मुसलमान भी हिंदुओं के कट्टर दुश्मन हो गए । सलमा के पति मकसूद के साथ आए यासीन मियां ने ही मुसलमानों को भड़काया । आज़ादी के साथ ही देश का विभाजन हो गया । लोग पाकिस्तान चले गए । बस्ती उजाड़ हो गई । बस्ती में सिर्फ नसीबन व सांई ही रह गए थे । बस्ती का तांगे वाला इफ्तिकार कभी-कभी बस्ती देखने आता था । वही नसीबन को सब लोगों की खबर देता था ।

बस दिन बीतते जा रहे थे । सांई को लगता अगर नसीबन भी बस्ती छोड़कर चली गई तो वह अकेला ही रह जाएगा । नसीबन ने उसे समझाया कि वह इस मिट्टी को छोड़ कर कहीं नहीं जाएगी । एक दिन कुछ नौजवान आते दिखाई दिए । उन नौजवानों ने जुम्मन सांई की झोपड़ी के बारे में पूछा । उन नौजवानों ने बताया कि उन्हें पाताल तोड़ कुओं की खुदाई का काम मिला है और वे इस रोज़गार के मिलने पर अपने रहने का प्रबंध करना चाहते हैं । नसीबन उन्हें पहचान गई थी । वे नौजवान बच्चन के बेटे थे । उसने उजड़ी बस्ती में ढह गए उनके मकान दिखाए । फिर उनसे कहा कि सुबह इन मकानों को रहने के लायक बना लेना और उसने रात को अपने घर से फटी पुरानी दरियां व बोरे उन नौजवानों को सोने के लिए पेड़ों के नीचे बिछा दिए और वह सुख की रात कट गई । बस्ती में कोई रहने आया था । इसलिए नसीबन की प्रतीक्षा पूरी हो गई थी ।

विभाजन की त्रासदी से जुड़े इस उपन्यास में आधुनिकता का पहला सूत्र औद्योगीकरण है । आजादी के बाद हुआ औद्योगीकरण इस बस्ती के इंसान संवेदना शून्य हो गए थे । मशीने लग गई थी और समाज में नए वर्ग बन गए थे, "कुछ छोटी-छोटी मशीनें शहर में आई । इधर-उधर बुक-बुक करनेवाली चक्कियां लग गई और एकाध आरा मशीन । साहब लोगों का काम करनेवाली चाटुकार जाति का एक तबका और बढ़ गया । यह तबका अपने-अपने घरों पर हिंदू मुसलमान था लेकिन साहब के सामने सिर्फ नौकर था ।"(1) औद्योगीकरण के

- -

(1) "लौटे हुए मुसाफिर" - कमलेश्वर - पृष्ठ-2 - प्रकाशन-1978.

साथ-साथ अवसरवादी मध्यवर्ग के उदय और सांप्रदायिकता के विष से भी आधुनिकता प्रकट हुई है । यहां पर सामान्य जन मानस की मानसिकता पर भी प्रकाश डाला गया है । धर्म के नाम पर गलत प्रचार करने वाले लोग साधारण लोगों को अपनी बातों में फंसा कर गुमराह करते हैं । बस्ती के सीधे-सादे लोग जो हिंदू भी थे मुसलमान भी मिल जुल कर रहते थे, लेकिन सलमा के पति के साथ आए मकसूद यासीन तथा हिंदुओं के संघी कार्यकर्ताओं ने हिंदुओं व मुसलमानों के बीच दरार पैदा करने का पूरा प्रयत्न किया और वे सफल भी हुए । सत्तार पर भी यासीन के भाषण का असर हुआ । पहले तो सभी लोग अंग्रेज़ों से इकट्ठे होकर लड़ रहे थे लेकिन भड़काने वाले भाषणों के बाद सत्तार भी सोचने लगा, "कि नसीबन को उसकी गुप्ती वापस ही कर आए, क्योंकि अब वह हिंदुओं के साथ मिलकर अंग्रेज़ों को मारने में मदद क्यों दे ।" §1§ धर्म की आड़ में राजनीतिज्ञ अपने उद्देश्य पूरे करवाते हैं ।

इस सब के बावजूद भी एक ऐसा वर्ग भी था जो यह सोचता था कि पाकिस्तान बनने के बाद उन्हें क्या लाभ होगा । वह सोचता था कि बेकारी तो वह यहां भी झेल रहे हैं, पाकिस्तान बनने के बाद भी उन्हें बेकारी ही झेलनी पड़ेगी ।

इस सारे तनाव का प्रभाव पूरे वातावरण पर पड़ा । लोगों के दिलों में दहशत भर गई थी, "जाने पहचाने लोगों के मुर्दा चेहरे जा रहे थे वे जिन्हें देखकर अभी तक इंसान जीता आया था जिनमें प्यार और अपनापन था । यह सब क्या हुआ है ? लोगों ने एकाएक वे चेहरे उतार कर क्यों फेंक दिए हैं ?" §2§

इस कहानी में व्यवस्था में व्याप्त अनैतिकता तथा भ्रष्टाचार भी स्पष्ट रूप से उभरा है । बच्चन पुलिस के दारोगा को रिश्वत देता है लेकिन तब भी उसका पेट नहीं भरता और वह बार-बार बच्चन को चोरी के केस में फंसवा देता है । इसके अतिरिक्त वह कच्ची शराब का अवैध काम करता है लेकिन यह काम वह चुंगी पुलिस की सहायता से ही करता है तथा उन्हें शराब भी देता है और रिश्वत भी, लेकिन फिर भी वे लोग उसे बार-बार तंग करते रहते हैं ।

आजादी के पूर्व विभाजन की सनक खास तौर पर सभी पर छायी हुई

---

§1§ पूर्वोक्त, पृष्ठ-32.
§2§ पूर्वोक्त, पृष्ठ-39.

थी किन्तु वास्तविकता जानने से सबको बड़ा झटका लगा । लौटे हुए मुसाफिर के रूप में आजादी के बाद जली या बेहोश हुयी पीढ़ी में से कुछ ने अपने-अपने ठिकाने खोज लिए और अधिकतर भटक गए । यह भटकन नयी पीढ़ी को विरासत में हासिल हुई । इस रचना के अन्त में लेखक ने कहा है-"नसीबन खुशी से रो पड़ी थी । वे सब बशीर, बाकर रमजान वगैरह जवान होकर लौट आये थे । नसीबन उन्हें अपने साथ ले गयी थी- उन निशानों के साथ जो अब भी बाकी थे ।"§1§ कमलेश्वरजी के महत्वपूर्ण उपन्यासों में से यह एक है । डॉ० सिन्हा के शब्दों में- "लौटे हुए मुसाफिर में आस्था, आत्मविश्वास, कर्तव्यपरायणता, देशानुरूप एवं दायित्व निर्वाह का जो उन्होंने महान सन्देश दिया है वह आज के परिप्रेक्ष में अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इस लिए इस पीढ़ी के प्रकाशित उपन्यासों में कमलेश्वर का यह उपन्यास विशेष उल्लेखनीय हो जाता है ।"§2§ भाषा की दृष्टि से यह एक अत्यन्त संवेदनशील एवं सांकेतिक सफल लघु उपन्यास है । जिसमें कमलेश्वर जी ने आम आदमी की भाषा का प्रयोग किया है । "वस्तुत: कमलेश्वर लौटे हुए मुसाफिर में उन अबोध लोगों की कथा को आधार बनाया है जो केवल अपनी रोजी रोटी के लिए संघर्षरत थे, परन्तु साम्प्रदायिकता की लहर में बह गए और वही आदी स्थान तक पहुंच सके और न ही लौट कर वापस आ सके । अन्त में जो लोग लौट कर आये वे मजदूर बनकर आये ।"§3§

इस उपन्यास में दलगत राजनीति का ऐसा तेवर विद्यमान है, जो हिंदू सांप्रदायिकता §संघ§ तथा मुस्लिम सांप्रदायिकता §मुस्लिम लीग§ दोनों का विरोध करता है ।

§8§ <u>वही बात :-</u>

कमलेश्वर द्वारा लिखीत "वही बात" उपन्यास उनकी एक सहज, सरल व स्वाभाविक कृति है । इस उपन्यास में घटनाएं एक स्वाभाविक क्रम में घटित होती जाती है । इस उपन्यास में सफलता प्राप्त करने जाने की मानवीय प्रवृत्ति का सफल निरूपण हुआ है । आधुनिक व्यक्ति जीवन में नाम कमाना, सफलता प्राप्त

---

§1§ पूर्वोक्त - पृष्ठ-109.
§2§ डॉ० सिन्हा - "हिन्दी उपन्यास उदभव और विकास" - पृष्ठ-558.
§3§ "कमलेश्वर" - कृष्ण कुरडिया - पृष्ठ-208.

करना तथा उच्चत्तम पद को प्राप्त करना ही अपने जीवन का उद्देश्य स्वीकार कर लेता है । इस दौड़ में वह जीवन का महत्वपूर्ण अंश दाव पेर लगा देता है तथा स्वाभाविक रूप से पारिवारिक संबंधों की ओर अधिक ध्यान नहीं दे पाता । इसके कारण अकेलापन बढ़ता है और यह अकेलापन असह्य हो जाता है तथा पारिवारिक संबंध टूट जाता है । इस उपन्यास का नायक प्रशांत भी महत्वकांक्षी है तथा सफलता प्राप्त करना चाहता है ।

इस उपन्यास का कथासार इस प्रकार है--

चीफ इंजीनियर प्रशांत अपनी पत्नी समीरा को बम्बई से बहुत दूर एक पहाडी प्रदेश पर एक बांध बनाने के लिए अपने साथ ले जाता है । डिप्टी इंजीनियर नकुल ने उनके रहने का प्रबंध वहीं एक बंगले में करवा दिया था । प्रशांत ने आते ही प्रोजेक्ट काम शुरू कर दिया था । जगह बहुत खूबसूरत होने की वजह से समीरा का मन भी वहां लग गया था । शुरू-शुरू में तो वह भी प्रशांत के साथ चली जाती थी । परंतु धीरे-धीरे काम बढ़ता ही गया और प्रशांत को बांध पर काम के लिए देर तक रूकना पड़ने लगा । बांध बनाने के लिए एक बहुत बड़ी समस्या आ रही थी कि उस स्थान में बसे हुए आदिवासियों के गांव प्रोजेक्ट पर करोड़ों रूपये खर्च किए जा चुके थे, पर अब आदिवासी लोगों ने गांव खाली करने से इंकार कर दिया था । आदिवासी गांव खाली करने को जरा भी तैयार नहीं थे । प्रशांत ने नकुल को आदिवासियों को समझाने का काम दिया गया था । इन सब मामलों को लेकर राजधानी व साइट के बीच प्रशांत के चक्कर शुरु हो गये थे । समस्या धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी यहां तक कि यह खबर भी फैल गई थी कि आदिवासी अपने हथियारों से लैस होकर बांध कॉलोनी पर धावा बोलने वाले हैं ।

प्रशांत पर जिम्मेवारियां बढ़ने के कारण समीरा धीरे-धीरे अकेली होती जा रही थी वह सारा दिन अकेली घर पर रहती । शुरू के दिनों में तो वह प्रशांत से फोन पर बात कर लेती या प्रशांत फोन कर देता पर फिर प्रशांत को रोज ही देर हो जाया करती थी । अब प्रशांत को भी यह अनुभव होने लगा था कि समीरा उससे विरक्त रहने लगी है ।

-=: 31 :=-

नकुल ने अपनी जिम्मेवारी पूरी ईमानदारी से निभाई और बहुत लंबे प्रयासों के बाद आदिवासियों को गांव खाली कर देने के लिए राजी कर लिया था । इस सबके दौरान संघर्ष में उसके कई चोटें आई थी, पर सब समस्या सुलझ गई थी । इन सब प्रकार के कष्टों को झेलने वाले नकुल ने समीरा के हृदय में अपनी जगह बना ली थी ।

प्रशांत ने रिपोर्ट द्वारा सभी अधिकारियों को प्रसन्न कर लिया था । नकुल की जगह सारे कार्य का सेहरा उसने अपने सिर पर ले लिया था । इसी दौरान कंपनी के सहयोग में एक बहुत बड़े थर्मल प्लांट में स्थान पाने की प्रशांत की लालसा जाग उठी और इस सब को प्राप्त करने के लिए वह समीरा की इच्छा न होने के बावजूद भी दिल्ली रवाना हो गया ।

प्रशांत के दिये हुए अकेलेपन में समीरा ने नकुल से अपनापन प्राप्त कर लिया था । दिन बीतते जा रहे थे । प्रशांत नया स्थान प्राप्त करने की पूरी कोशिश में जुटा था और समीरा धीरे-धीरे नकुल के निकट आती जा रही थी । और एक दिन समीरा ने स्पष्ट शब्दों में प्रशांत से कह दिया कि अब वह नकुल की हो चुकी है । नकुल को उसी दिन नयी नौकरी में नियुक्ति मिल गई थी । और प्रशांत का जाना भी निश्चित हो गया । प्रशांत समीरा को नए जीवन की शुभकामनाओं के साथ छोड़ कर विदेश चला गया । प्रशांत अपना घर व पोस्ट नकुल के लिए छोड़ कर चला गया ।

नकुल व समीरा ने शादी के बाद अपना पुराना घर भी बदल लिया क्योंकि समीरा को वहां का अतीत कचोटता रहता था, लेकिन नए घर में जाने के बाद भी उसका मन नया नहीं हो पाया था । नकुल की व्यवस्तताओं के कारण उसके जीवन का अकेलापन भी बढ़ता जा रहा था । जगह बदल लेने से भला जिंदगी भी कभी बदल सकती है । वह जिंदगी को जीने की बजाए सिर्फ सह रही थी ।

उन्हीं दिनों प्रशांत को दोबारा साइट पर जायजा लेने के लिए बुलाया गया । प्रशांत जब आ रहा था तब उसने समीरा को देखा था । समीरा ने भी उसे देख लिया था । प्रशांत निरीक्षण करके शीघ्र ही वापिस लौटना चाहता था । प्रशांत नकुल के घर के आगे से गुजर रहा था । समीरा गेट पर खड़ी थी । प्रशांत

ने समीरा का हाल पूछा और अपने बंगले पर आ गया । वापिस लौटकर प्रशांत यही सोचता रहा कि उसने समीरा से बात क्यों की । नकुल ने प्रशांत को शाम के खाने पर बुलाया । अगले दिन प्रशांत वापस जा रहा था तब समीरा और नकुल को आते हुए देखा । वह हैरान हो गया । समीरा उसके लिए रास्ते का खाना बनाकर लाई थी । बस उसी समय विदा लेकर प्रशांत चला गया और उसे विदा करते वक्त नकुल व समीरा की आँखें नम थीं ।

औद्योगिक सभ्यता ने संपूर्ण वातावरण में ही जैसे बनावटीपन घोल दिया है । मनुष्य को सजीव प्रकृति में भी जीवन का स्पष्ट अनुभव नहीं होता । कितनी विचित्र त्रासदी है मानव जीवन की । मानव जीवन को देखने के लिए किस प्रकार भौतिक उपकरणों का सहारा लेकर जी रहा है । जीवन में से समाप्त होते जा रहे एहसास को कमलेश्वर ने बहुत ही सहज अभिव्यक्ति दी है- "जंगली लकड़ी के खंभों से बंदनवार की तरह लटके तारों में यहां वहां चमकते हुए पीली मरियल रोशनी के बल्ब जैसे जिंदगी के एहसास को जिंदा रखे हुए थे ।"§1§

यह कहानी सीधे मशीनीकरण के चित्र खींचती है । बांध बनाना मानव की उपलब्धि है । उसके लिए निर्दयता से प्रकृति के स्वाभाविक रूप को तोड़ना पड़ता है । शायद प्रकृति भी मानव से बदला ले लेती है । उसका घर तोड़कर । परिवर्तमान दाम्पत्य संबंधों की नींव पर रचे हुए इस उपन्यास में आधुनिक बोध तलाक और पुनर्विवाह के नए सामाजिक मूल्यों से उदित होता है और अपना वृत्त अकेलेपन से पूरा करता है । भारतीय समाज का यह विचित्र मानसिक द्वंद्व है कि वह न तो रोमांटिक रह पा रहा है और न ही यथार्थ की पहचान अतीत के प्रति लापरवाही और वर्तमान के प्रति असंतोष व भविष्य के प्रति चिंताकुलता से लक्षित होती है । समीरा प्रशांत को छोड़कर नकुल के पास आ जाती है लेकिन पूरी तरह प्रशांत को भूल भी नहीं पाती । रोमांटिकता और यथार्थ के बीच की स्थिति समीरा के चरित्र के द्वारा व्यक्त हुई है । इस दृष्टि से परंपरागत भारतीय नारी ही रह पाई है । इस द्वंद्वमयी स्थिति की कड़वाहट को अनैतिक यौन-संबंधों ने भी बढ़ाया है और अपने जीवन को सार्थकता देने की जी-तोड़ कोशिश में लगे प्रशांत

- -

§1§ "वही बात" - कमलेश्वर - प्रकाशन-1982 - पृष्ठ-5.

और समीरा के संदर्भों ने भी इस कर्कशता को दोहराया है । समीरा घर में सार्थकता खोजना चाहती है और प्रशांत अपनी नौकरी में अधिकाधिक आगे बढ़ना चाहते हैं । दोनों ही इस बेताबी में दाम्पत्य-संबंधों को चटका लेते हैं । आधुनिक जीवन की यह त्रासदी पारिवारिक विघटन में घटित होती है और विघटन की यह पीड़ा पूरे उपन्यास में बहुत गहराई में व्याप्त हो गई है ।

§9§ सुबह दोपहर शाम :-

इस उपन्यास का कथानक पराधीन भारतीय परिवेश की कहानी है । उस समय के समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनैतिक परिवेश का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है । अंग्रेज भारत को अपना उपनिवेश बना चुके थे । सत्ता जमाने के लिए अत्याचार बहुत बढ़ चुका था तथा अपनी सुविधा के लिए अंग्रेजों ने भारत में रेल का आरंभ किया था । रेल के आरंभ होने से भारतीय जनमानस में खलबली मची थी । भारत के लिए रेल एक अजूबा तो थी, लेकिन दासता की कीलें मन में इतनी गहरी चुभ गई थीं, जिसका चित्रण इस उपन्यास में किया है ।

जसवन्त एक ग्रामीण परिवार का बेटा था । जसवन्त को शहर में रेलगाड़ी चलाने की नौकरी मिली थी । रेलगाड़ी पहली बार शुरू हुई थी, अतः जसवन्त की दादी को बहुत आश्चर्य होता था कि रेलगाड़ी क्या होती होगी ? कैसी होती होगी ? उन्हें लगता था कि यदि जसवन्त रेलगाड़ी चलाने जाएगा तो अवश्य ही कुछ अपशगुन हो जाएगा । दादी नहीं चाहती थी कि जसवन्त रेलगाड़ी चलाने जाएं । जसवन्त हर तरह से अपनी दादी को समझाने का प्रयत्न करता था, कि रेलगाड़ी की नौकरी करने से उसे बहुत अच्छा वेतन प्राप्त होगा । दादी मां को लगता जसवन्त अंग्रेजों की गुलामी करने जा रहा है । जसवन्त को इस बात का आश्चर्य था कि दादी मां अपने नाती पोतों की गृहस्थी में रहते हुए भी अंग्रेजों और उनकी हकूमत के बारे में सोचती है । जसवंत अपनी दादी की पीड़ा समझता था । उसे पता था कि उसके दादा 1857 ई. में राजा साहब को बचाते हुए शहीद हो गए थे । जसवंत की बुआ कलावती का पति भी अंग्रेजों का गुलाम बन गया था । बस तब से दादी ने अपनी बेटी कलावती से मुह मोड़ लिया था ।

दादी सोचती थीं कि उसकी बेटी व दामाद ने गद्दारी की है । पति की मृत्यु के दु:ख से और बेटी के हाथ से निकल जाने पर दादी के हृदय में गांठ बन गई थी । अंग्रेज हुकूमत से वह बदला लेना चाहती थीं और उसे विश्वास था कि उसका बेटा कभी न कभी जरूर बदला लेगा । लेकिन उसके बेटे ने तो कुछ न किया । अब दादी को अपने पोते जसवंत से बहुत आशाएं थी लेकिन उसने जब रेलगाड़ी की नौकरी करने का हठ किया तो दादी का मन टूट गया । और जसवन्त अपनी नौकरी पर चला गया । जसवंत की सात वर्षीय बेटी शांता पर इस सारे घटनाक्रम का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था ।

एक दिन अचानक दादी घर से चली गई । बहुत खोज करने पर भी दादी का कुछ पता नहीं चला । जसवंत और उसकी पत्नी शहर में रहते थे । जसवंत की बेटी शांता उसके साथ जाने को तैयार नहीं हुई वह अपनी दादी के पास रह गई । जब से दादी गुम हुई थीं, शांता भी उदास रहती थी । जसवंत बेटी को ले जाना चाहता था लेकिन शांता अपनी बड़ी दादी अम्मा की प्रतीक्षा में वापिस नहीं गई । कुछ दिनों बाद जसवंत की मां ने शांता को शहर भेज दिया था ।

कुछ दिनों बाद वह स्वयं भी शहर आ गई थीं । शहर में जंगल के हरकारे ने बताया कि उसने जंगल में एक बुढ़िया को देखा है । शायद वह जसवंत की दादी है । जसवंत की मां ने हरकारे को मना लिया था कि वह उनके साथ जंगल में दादी को खोजने चले । हरकारा बहुत मुश्किल से माना था । जसवंत की मां, बापु, पत्नी, उसकी बेटी संतो तथा जसवंत हरकारे के साथ जंगल पहुंचे । जंगल में बहुत दूर जाकर दादी दिखाई दीं । वह समाधिस्थ होकर बहुत से जानवरों में घिरी बैठी थीं । सब दादी के चारों तरफ बैठ गए । दादी की आंखें खुली तो वह सबको देखकर ममता से भर गई । सबने बहुत आग्रह किया कि घर वापिस चलें परंतु दादी नहीं मानी । अंतत: जंगल में ही दिवाली-पूजन किया गया । सुबह होते ही दादी वापिस चलने को तैयार हो गई और घर लौट आई । कुछ दिन बाद दादी ने प्राण त्याग दिया ।

शांता और सूरज साथ-साथ गुड़िया गुड्डे का ब्याह रचाते-रचाते बड़े हो गए थे । सूरज ने सोचा था कि वह शांता को दुल्हन बना कर ले आएगा ।

-:: 35 ::-

नियति के विधान को सूरज का यह सपना स्वीकृत न था । शांता की शादी प्रवीण से हो गई । प्रवीण और शांता की विदाई हो रही थी कि एक अंग्रेज पुलिस अफसर गोलियां चलाता हुआ घर में दाखिल हुआ । प्रवीण के सीने पर पिस्तौल रखकर वह प्रवीण के भाई नवीन के बारे में पूछने लगा । प्रवीण ने कहा नवीन नहीं आया । नवीन स्वातंत्र्य सेनानी के ग्रुप में शामिल हो गया था । इसलिए पुलिस उसके पीछे पड़ी थी । पुलिस के जाने के बाद शांता की विदाई की तैयारी आरंभ हुई । बारात की वापसी का प्रबंध रेल द्वारा किया गया । सब लोग रेल में बैठ गए थे । रेल के एक कमरे में शांता और उसकी ननद मंजु बैठी थीं । एक बुर्के वाली उनके पास आ पहुंची । तभी एक हाथ ने शांता का पैर छुआ । मंजु नवीन को पहचान गई थी । शांता ने उसे आशीर्वाद दिया । नवीन को अगले स्टेशन पर उतरना था । शांता ने बाहर झांक कर देखा तो पुलिस वहां खड़ी थी । उसने नवीन को बताया कि पुलिस बाहर खड़ी थी । नवीन ने छलांग लगा दी । शांता ने अपने हाथ की चूड़ी भी साथ ही फेंक कर दे दी । नवीन तो बच निकला, लेकिन जैसे ही गाड़ी रुकी गारड रेल में घुस आई । शांता ने पुलिस से बहुत निडर होकर बात की । सब हैरान हो गए कि बहु कितनी निर्भीक है ।

शांता जब ससुराल आई तब बहुत जोरदार स्वागत हुआ । एक ही दिन में शांता अपने ससुराल से जुड़ गई । प्रवीण ने शांता को बताया कि नवीन चार साल बाद पहली बार घर आया था । मुंह दिखाई की रस्म होने लगी । घर परिवार तथा पड़ोस की स्त्रियां मुंह दिखाई के लिए आई थी । शांता को घर की स्त्रियों ने बताया था कि पूरब की दीवार वाली हवेली में घर की बड़ी बहू कब्जा करके बैठी थी । उसका अदालत में भी मुकद्दमा चल रहा था । हवेली वाली अपने में घमंड भर कर आई थीं, लेकिन घर की बुजुर्ग महिलाओं से अपमान करवा कर वापिस गई । उसी दिन मुकद्दमें की तारीख थी । मुकद्दमें में जीत हुई थी । कुछ दिन बाद शांता को मायके जाना पड़ा । उसी दिन क्रांतिकारियों ने रेलगाड़ी से सरकारी खज़ाना लूट लिया । शांता के पिताजी शांता को वापिस ससुराल छोड़ने आ गए थे । नवीन की तलाश में पुलिस शांता के पिताजी को तंग कर रही थी । प्रवीण चाहता था कि नवीन से संबंध तोड़ लिए जाएं, तभी शांता ने निर्भीक होकर कहा कि कुछ भी हो जाए, लेकिन नवीन इस परिवार का सदस्य बन कर रहेगा । कुछ दिन बाद शांता अपने मायके गई । उसने एक बेटे को जन्म

दिया । तब नवीन अचानक अपनी भाभी को मिलने आ पहुंचा । शांता ने नवीन से वादा लिया कि वह होली खेलने अपने घर में जरूर आएगा । होली का दिन आ गया परंतु नवीन न आया । एक-एक करके पांच बरस निकल गए थे । शांता ने भी होली नहीं खेली थी । छठी होली पर भी शांता नवीन की प्रतीक्षा कर रही थी कि तभी वह आ पहुंचा । सब ने मिलकर होली की पूजा की तथा होली खेली । अभी वे लोग होली खेल ही रहे थे कि अंग्रेज़ अफसर आपहुंचा । बात ही बात में शांता ने नवीन को भगा दिया । रंगों में पुते चेहरे के बीच अंग्रेज़ अफसर नवीन को पहचान नहीं पाया । नवीन के पिता तथा भाई को थाने बुलाया गया ।

पुलिस ने प्रवीण को बहुत पीटा । मार सहन न होने पर प्रवीण ने नवीन के ठिकाने के बारे में सब कुछ बता दिया । घर पर आकर प्रवीण ने स्पष्ट रूप से कह दिया था कि अब वह नवीन का साथ नहीं दे सकता है । यह सुनकर अम्मा ने भी प्रवीण का साथ दिया और कहा कि अब नवीन से सारा रिश्ता समाप्त कर दिया जाए । उधर नवीनके ठिकाने पर खलबली मची थी । उसके साथी उससे कह रहे थे कि उसके भाई ने ही गद्दारी की है । नवीन को इस बात का विश्वास नहीं हो रहा था कि क्या उसका बड़ा भाई विश्वासघात कर सकता है । नवीन यह बात स्पष्ट करने के लिए जान हथेली पर रखकर घर पहुंचा था । उसी समय पुलिस ने भी हमला बोल दिया । शांता नवीन का हाथ पकड़कर उसे छत पर ले गई । अंग्रेज अफसर ने गारद को गोली चलाने का हुक्म दे दिया । हिंदुस्तानी सिपाही आगे बढ़ने लगे । शांता को कुछ सूझ नहीं रहा था । अचानक उसने अपने वस्त्र खोलने शुरू कर दिए और हिंदुस्तानी सिपाहियों को कहा कि यदि उन्होंने कुछ किया तो वह अपनी देह के सब वस्त्र उतार देगी । तब क्या वह अपनी बहन को नंगा देख पाएंगे ? अचानक हिन्दुस्तानी सिपाहियों के संस्कार जाग गए और उन्होंने बंदूकें फेंक दीं । अफसर से सिपाहियों ने कह दिया कि वे उनका आदेश नहीं मानेंगे । यह सुनकर अफसर ने अपनी पिस्तौल सिपाहियों की ओर तान ली । अचानक एक गोली चली और अफसर धरती पर गिर गया ।

इस उपन्यास का कथानक पराधीन भारतीय परिवेश की कहानी है । आधुनिकता के प्रवाह में ही समाज में अनेक रूढ़िवादी मान्यताएं खंडित हुई हैं ।

बड़ी दादी तक सोचती है कि स्वर्ग नरक कुछ नहीं होता । शांता बार-बार याद करती है कि दादी कहा करती थी, "हमारी असली मुक्ति कहां है.....हमारी मुक्ति स्वर्ग-नरक में नहीं है..... वह इसी धरती पर है ।"{1} दादी की यह बात शांता के मन में कौधती है अर्थात यह विचार धारा पीढ़ी दर पीढ़ी अंधविश्वासों पर चोट करती है । प्राचीन प्रवीन के पिता अंधविश्वास के बदल तर्क की स्थापना करते हैं । यही आधुनिकता की सबसे बड़ी पहचान है । वह होली के पीछे छिपा तर्क भी स्पष्ट करते हैं । धार्मिक पाखंडों पर भी करारा व्यंग्य किया गया है ।

नगरीकरण के प्रसार से उत्पन्न हुई पीड़ा का चित्रण भी इस उपन्यास में अंकित किया गया है । नगरीकरण के फैलाव से वातावरण की महक बदल गई थी । हवा में गांव के वातावरण की ताज़गी बाकी न रही थी । व्यक्ति इस परिवर्तन को अनुभव भी करते थे । "उसके शरीर की हरे धान की पौधों वाली लचक कहां चली गई ? शरीर में जो मिट्टी की गरमी समाई रहती थी, वह लोहे की ठण्डक में कैसे बदल गई....... मन में जो चंदन की महक भरी रहती थी, उसकी जगह कोयले की सुगंध कैसे समा गई ।"{2} वातावरण का परिवर्तन तो हुआ था लेकिन इसके साथ मानवीय संवेदनाएं तथा मानसिकता भी बदल गई थी । भौतिकता ने मानवीय संवेदनाओं को समाप्त कर दिया था । आदमी एक-दूसरे को महत्व प्रदान नहीं कर रहे थे । "किसी के तन से एक बूंद खून निकलता था तो मन में कैसी दया और करुणा उभरती थी....... पर अब रेल से कटे आदमी को देखकर दया के साथ-साथ घिन भी आती है........ जो पहले कभी नहीं आई । अब पट्टी पर फैला खून देखकर मन सहमता नहीं....... कटे हुए हाथ पैर जल्दी-जल्दी उठवा कर गाड़ी के बरवत से रवाना कर देने की जल्दी पड़ी रहती है ।"{3} व्यक्ति में अमानवीय तत्व पैदा हो गए हैं । संबंधों में वह जुड़ाव नहीं है, जो पहले होता था । मानव-संबंधों में से संवेदना निकल कर न जाने कहां खो गई है । इस प्रकार इस उपन्यास में मानव समाज में विकसित हुई क्रांतिकारिता की भावना का सूक्ष्म रूप से

{1} "सुबह दोपहर शाम" - कमलेश्वर - पृष्ठ-156.
{2} कमलेश्वर : पूर्वोक्त - पृष्ठ-130.
{3} कमलेश्वर : पूर्वोक्त - पृष्ठ-130.

पकड़ने का सफल प्रयत्न किया गया है । इसके साथ ही इस नवजागरण ने साधारण भारतीय चिन्तन को भी प्रभावित किया है । इस उपन्यास की संवेदना साम्राज्यवाद के उतार और क्रांति के उभार पर टिकी हुई है । अंग्रेज़ों का शासन साम्राज्यवाद का प्रतीक है । बीच-बीच में तर्क बुद्धि के उदय की अभिव्यक्ति से यथार्थ बोध को भी उभारा गया है ।

***

§ख§ कहानी :-

कमलेश्वर के निम्नलिखित कहानी संग्रह :-

§1§ जिंदा मुर्दे

§2§ बयान तथा अन्य कहानियां

§3§ श्रेष्ठ कहानियां

§4§ मांस का दरिया

§5§ मेरी प्रिय कहानियां

§6§ खोई हुई दिशाएं

§7§ राजा निरबंसिया

§8§ कस्बे का आदमी

§1§ जिंदा मुर्दे :-

कमलेश्वर के इस कथा संग्रह में विभिन्न प्रकार की कहानियाँ संग्रहित है । ये कहानियाँ विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों से उत्पन्न विषमताओं का सजीव चित्रण करती हैं । यथा प्रशासनिक तंत्र की अकुशलता और खोखलापन वर्तमान विषम परिस्थितियों में मानव संघर्ष, प्रेम संबंधों का बदलता स्वरूप, परिवर्तित सामाजिक मान्यतायें व बदलते हुये नैतिक मूल्य- ऐसी कई समस्याओं का यथार्थ वर्णन कमलेश्वर के इस कथा संग्रह में देखा जा सकता है ।

कथा संग्रह की कहानियाँ :-

§1§ जार्ज पंचम की नाक

§2§ स्मारक

§3§ नाच

§4§ शरीफ आदमी

§5§ आत्मा अमर है

§6§ ब्रांच लाइन का अफसर

§7§ अपने देश के लोग

§8§ नया किसान

§9§ भरे-पूरे अधूरे

§10§ अपने अजनबी देश में

§11§ जिंदा मुर्दे

-=: 40 :=-

§।§ जार्ज पंचम की नाक :-

यह कहानी संग्रह की पहली कहानी है । "जार्ज पंचम की नाक" उस समय की बात है जब इंगलैंड की रानी एलिजाबेथ अपने पति के यहां हिन्दुस्तान की यात्रा पर आने वाली थीं । रानी आनेवाली हैं यह सुनकर अखबारों में, प्रजा में चर्चा होने लगी थी । रानी हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और नेपाल के दौरे के दरम्यान कैसे कपड़े पहनेगी यह टेलर भी विचार करने लगा । इंगलैंड के अखबार में छोटी-सी खबर छपी थी कि रानी ने एक हलके नीले रंग का सूट पहना है उसका खर्चा 400 पौंड आया । अखबार में रानी की जन्म पत्रिका छपी थी-"प्रिन्स फिलिप के कारनामे छपे, और तो और उनके नौकरों, बावर्चियों, खानसमों, अंगरक्षकों की पूरी की पूरी जीवनियां देखने में आईं । शाही महल में रहने और पलने वाले कुत्तों तक की तस्वीरें अखबारों में छप गईं ।"§।§ राजधानी में तहलका मचा हुआ था । रानी 5000 रुपये का सूट पहनकर पालम के हवाई अड्डे पर आनेवाली है यह सोचकर दिल्ली में धूम मची थी । किंतु एक मुश्किल आ पड़ी । इंडिया गेट के सामने वाली जार्ज पंचम की लाट की नाक गायब हो गई थी । अंतत: सब राजनीतिक पार्टियों ने तय किया कि एक मूर्तिकार को बुलवाकर नाक बनवा ली जाए । मूर्तिकार तो आ गया । मूर्तिकार जानना चाहता था कि लाट कब और कहां बनी थी ? इस लाट के लिए पत्थर कहां से लाया गया था ? पुरातत्व विभाग की फाइलों से यह जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया, परंतु प्रयत्न व्यर्थ गया । फाइलों से कुछ भी पता नहीं चला । मूर्तिकार ने देश के सभी पर्वतों का दौरा किया, लेकिन उस किस्म का पत्थर कहीं नहीं मिला । तब मूर्तिकार ने सुझाव दिया कि देश में लगी नेताओं की मूर्तियों में से किसी की नाक उतारकर लगा दी जाए, लेकिन मूर्तिकार का यह प्रयत्न भी असफल हो गया, क्योंकि सभी नेताओं की नाक बड़ी निकली । सब की आशाओं पर पानी फिर गया था । अब तो जार्ज पंचम की मूर्ति की नाक दोबारा लग पाने की कोई उम्मीद ही नहीं बची थी । अचानक मूर्तिकार के दिमाग में एक बात आई कि क्यों न किसी व्यक्ति की जिंदा नाक ही लगा दी जाए । लेकिन यह काम कठिन था, परंतु मूर्तिकार ने

- -

§।§ "श्रेष्ठ कहानियां" - कमलेश्वर - पृष्ठ-44.

इस काम को करने का उत्तरदायित्व स्वयं ले लिया । मूर्तिकार को यह काम करने की इजाजत दे दी गई । अखबारों में छप गया कि नाक का मसला हल हो गया है तथा जार्ज पंचम की नाक लगाई जा रही है । एक विशेष दिन लाट पर नाक लग गई । चर्चा यह थी कि जार्ज पंचम के जिंदा नाक लगाई गई है । यानि ऐसी नाक जो कतई पत्थर की नहीं लगती ।

यह कहानी भ्रष्ट राजतंत्र, सरकारी कामकाज की टालू नीति, लाल फीताशाही के बीच संघर्ष करते हुए व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत करती है । इस कहानी में सरकारी काम काज की नीति, दफ्तरी दुनियां का माहौल चित्रित किया गया है । किसी विदेशी विशिष्ट अतिथि को लेकर भारतीय मानसिकता पर व्यंग्य किया गया है । इस कहानी में आधुनिक शासनतंत्र को प्रतीकात्मक रूप में चित्रित किया गया है । लाल फिताशाही की शिकार फाइलों में गर्क शासन व्यवस्था समिति बना देने में कृतकृत्यता आदि आज के प्रशासन की विशेषताएं हैं । "अपने देश में विदेशी सभ्यता जीवन के तौर तरीके आदि के अपनाए जाने पर आधुनिकता के नाम पर हो रहा पश्चिमीकरण की स्थिति पर कहानीकार ने बहुत सुंदर व्यंग्य किया है : "सभा-पति ने तैश में आकर कहा- लानत है आपकी अक्ल पर । विदेशों की सारी चीजें हम अपना चुके हैं- दिल दिमाग, तौर तरीके औररहन सहन जब हिंदुस्तान में बाल डांस तक मिल जाता है तो पत्थर क्यों नहीं मिल सकता।"॥1॥

प्रशासन तंत्र की अकुशलता व निष्क्रियता पर व्यंग्य के माध्यम से इस कहानी में करारी चोट की गई है और इस प्रकार व्यवस्था के प्रति जनता के मोह भंग को अभिव्यंजित किया गया है ।

"जार्ज पंचम की नाक" कहानी में राजनैतिक स्तर पर रूपयों का कैसा बिगाड़ होता है यह स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है । इस कहानी का उद्देश्य सिर्फ इतना है कि रानी आनेवाली है और जार्ज पंचम की लाट पर नाक किसी भी प्रकार लगानी है क्योंकि इन्डिया की नाक नहीं तो हमारी भी नाक नहीं है ।

॥1॥ "कमलेश्वर कहानी का संदर्भ" - पुष्पपाल सिंह - पृष्ठ-37.

§2§ स्मारक :-

"स्मारक" इस संग्रह की दूसरी कहानी है । एक निर्धन साहित्यकार की मृत्यु हो गई । अपने जीवन में उसने अपने परिवार का भरण-पोषण बहुत कठिनाई से किया था तथा अपने जीवन के अंतिम दिनों में अर्थाभाव के कारण बीमारी में काटे थे । मृत्यु से पूर्व उसकी अवस्था बहुत दयनीय हो गई थी । अंत में उसकी मृत्यु हो गई । उसकी मृत्यु के बाद शहर भर में लोग शोक सभा के लिए जुटे । शोक-सभा में शोक प्रकट करने के साथ-साथ अपने गुणों का गान भी करते जा रहे थे । चंद्रभानजी, एक खद्दरधारी नेता, प्रकाशक महोदय, बिहारी बाबू व भुवनेशजी ने शोक संवेदना के भाषण दिए । उसमें से सलिम साहब ने उनके अंतिम वाक्य पढ़कर सुनाया कि-
"और तब तुम मेरी लाश को कब्र से निकालकर तमगे पिन्हाओगे । मुझे वहां भी आराम से सोने नहीं दोगे । तुमने मुझे जिंदगी-भर परेशान किया । मैं अपने बच्चों के पेट की खातिर एक-एक टुकड़े के लिए मारा-मारा फिरता रहा । जब मैंने सच्ची बात कहीं तब तुमने मुझे जेल के सीकचों के भीतर ढकेल दिया । मुझ पर मुकदमे चलाए और मेरा जीना मुश्किल कर दिया । और मौत की खबर पाकर तुम तकरीरे करोगे...... घडियाल के आंसू बहाओगे और मेरी यादगारें खड़ी करने की बातें करोगे...... लेकिन मैं तुम्हें जानता हूँ..... तुम मेरे चैन से सोए हुए दिल में बेइज्जती का एक खंजर और मारोगे........।"§1§

यह सुनकर सभा में लोगों के दिल भर आए, पलकें और गर्दन झूकी हुई थी । कई मिन्टों तक सन्नाटा छाया रहा । बाद में सभी ने अपने भाषणों में खुद का ही बखान करना शुरु किया कि उन्होंने किस प्रकार मरहूम साहित्यकार की सहायता की । सभी लोग अपनी प्रशंसा ही करते रहे ।

अंत में दु:खी साहित्यिकों का प्रस्ताव आया कि स्वर्गवासी लेखक की स्मृति में एक स्मारक की स्थापना की जाए । विदेशों में भी अपने साहित्यकारों को याद रखने की ऐसी ही परंपरा है । तब बिहारीजी ने भी यही सुझाव दिया कि वह अपना मकान स्मारक निधि को दान दे देंगे । सब ने अपना-अपना चंदा लिखाया और शोक सभा भंग हो गई ।

---

§1§ "स्मारक" - पृष्ठ-

-=: 43 :=-

लोग चलने के लिए उतावले थे कि बिहारी बाबू ने चाय-पान का आग्रह किया तुरन्त ही सभा का स्वरूप बदल गया । पता नहीं चल रहा था कि अभी ही यहां कोई शोक सभा हुई है । कुछ दिन बाद वह मकान स्मारक निधि के लिए दान दिया गया था उस पर बोर्ड टंगा हुआ था - "मकान किराए के लिए खाली है ।"

यह कहानी आज के समाज के खोखलेपन और विद्रूपता को चित्रित करती है । हर व्यक्ति बस अपनी ही प्रतिष्ठा बनाने का अवसर खोजता है । फिर वह चाहे कोई शोक सभा ही क्यों न हो । निर्धन तथा प्रतिभाशाली लेखक की मृत्यु पर शोक संवेदना के लिए एकत्रित हुए लोग भी अवसर का लाभ लेने से नहीं चूकते । सब इसी अवसर की तलाश में बैठे हैं कि वे बता सकें कि उन्होंने उस साहित्यकार की कितनी सहायता की ।

लेकिन इन बातों में सच्चाई का प्रतिशत कितना होगा, यह इस बात से सिद्ध हो जाता है कि स्मारक निधि का पैसा जमा होने के बाद स्मारक निधि के लिए दान दे दिए मकान के बाहर "किराए के लिए खाली" का बोर्ड लगा होता है ।

वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में साहित्यकार का संघर्ष आम जनता की दयनीय अवस्था के प्रतीक के रूप में उभारा गया है । इस प्रकार आर्थिक कष्टों को झेल कर साहित्य-सर्जन करने वाले रचनाकार की समाज कितनी उपेक्षा करता है, इसका विवरण भी इस कहानी में सुलभ है । यह कहानी भी व्यवस्था की विद्रूपता को प्रकट करती है, हमारे सामाजिक यथार्थ को प्रकट करती है तथा हमारा मोह भंग करती है । इस कहानी का उद्देश्य सिर्फ इतना है कि किसी महान आत्मा के नाम चंदा इकट्ठा करना और कोई मकान दान में दे कर उसे किराए पर उठाकर अपनी स्वार्थ सिद्धि कर लेना है । "स्मारक" में साहित्यकार की नियति का वर्णन है ।

§3§ <u>नाच</u> :-

यह कहानी इस संग्रह की तीसरी कहानी है । "नाच" एक बहुत ही बचकानी-सी कहानी है । यह कहानी व्यंग्यात्मक कहानी है । मिस लिली

चंद्रकांत की स्टेनो थी । लिली चंद्रकांत से प्रेम करती थी । उसका विवाह किसी और के साथ तय हो गया था । चंद्रकांत को यह बात पता थी पर वह लिली के सुख में सब कुछ सह लेता था ।

एक दिन लिली के ससुराल वाले बड़ा दिन मनाने के लिए आ रहे थे । लिली ने पार्टी का आयोजन किया । चंद्रकांत ने पार्टी को सफल बनाने के लिए सब काम किए । चंद्रकांत ने इतना सब काम कर दिया था किंतु जब भी लिली से बिछड़ ने का ख्याल आते ही वह उदास हो जाता है । चंद्रकांत को बहुत दुःख था कि उसे लिली का सान्निध्य प्राप्त नहीं हो सका । चंद्रकांत जब तैयार होकर पार्टी में पहुंचा तब लिली अपने पति के साथ लोन पर टहल रही थी यह देखकर चंद्रकांत का मन बैठ सा गया था किन्तु उसे लिली की एक बात याद आई थी कि विवाह के बाद उसके संबंध और अच्छे हो जाएँगे । यह सोचकर वह थोड़ा खुश होता था । डांस हुआ बाद में सब लोग क्रिसमस ट्री वाले रूम में गये उस ट्री पर सब के नाम के उपहार रखे हुए थे । चंद्रकांत की नजर एक नीला लिफाफे पर अटकी थी । जब चंद्रकांत की बारी आई तब चंद्रकांत ने लिफाफे को एक बार चूमा फिर लिखावट पर अपना नाम पढ़ा और धड़कते दिल से खोल डाला । उस लिफाफे में जशन पार्टी का बिल था उसमें लिखा था "प्लीज एटेण्ड टू इट - लिली ।"

प्रेम के नाम पर अवसरवादिता का साक्षात उदाहरण इस कहानी की आधुनिकता को उजागर करता है । प्रेम में त्याग नामक तत्त्व समाप्त हो गया है । अब प्रेम के माध्यम से अपने स्वार्थ पूर्ण करने की पद्धति उभर कर सामने आई है । आज के लोग स्वार्थी मनोवृत्ति के हो गये हैं । आधुनिक मानव बहुत भौतिकवादी है । प्रेम में सभी उपकरणों की प्राप्ति को प्रेम कहा जाता है । प्रेम संबंधों का बदला हुआ यथार्थ इस कहानी में मूल संवेदना है । मानवीय सरोकार की जगह स्वार्थ और लाभ की मनोवृत्ति ने ले ली है । यह बदलाव ही आधुनिकता को सूचित करता है ।

{4} <u>शरीफ आदमी</u> :-

यह इस संग्रह की चौथी कहानी है । रामानंद नामक सुशिक्षित युवक ओटोरिक्षा में बैठकर साउथ एवन्यू जाता है । रामानंद की ओटोरिक्षा वाले से

लड़ाई हो जाती है । रामानंद शराफत और सुशिक्षितता का आवरण उतारकर ओटो रिक्शा वाले से लड़ाई के लिए उतारू हो जाता है ।

मानव व्यक्तित्व का दोहरा रूप हमें इस कहानी में देखने को मिलता है । व्यक्तित्व के छद्म से बुनी हुई हमारी उपरी सभ्यता कितनी खोखली है, यही एहसास इस कहानी की संवेदना में व्याप्त है । ऊपरी टीमटाम के बीच मानवीय सरोकार गायब हो गया है । मानव-मूल्यों के ध्वंस को इस कहानी में उजागर किया गया है ।""शरीफ आदमी" भी बहुत हलकी कहानी है जिसमें दिल्ली के ओटो रिक्शा वालों से एक सफेद पोश समझे जाने वाले बाबू के व्यवहार की चर्चा है ।"(1)

(5) <u>आत्मा अमर है</u> :-

इस कहानी में क्लब जीवन का व्यंग्यात्मक वर्णन है । यह कहानी संग्रह की पांचवीं कहानी है । क्लब में पार्टी चल रही थी और कर्नल परमार मिसेज वासवानी को बुरी नजर से देख रहा था । श्री वासवानी को भी क्रोध आ गया और उन्होंने अपने कांटे से परमार की नाक नोंच ली । धीरे-धीरे शोर होना आरंभ हो गया । मिस्टर वासवानी ने खड़े होकर आत्मा पर भाषण देना आरंभ किया, तथा कहा कि कर्नल परमार की आत्मा मर रही है इसी कारण उन्हें यह कदम उठाना पड़ा है । ताकि उनकी आत्मा को बताया जा सके कि सभ्यता व कुलीनता क्या है ? क्लबों में कैसे आया जाया जाता है तथा एक सम्भ्रान्त महिला के साथ कैसा व्यवहार किया जाता हैं । इसके बाद परमार भी उठे और उन्होंने कहा कि जब आत्मा अमर है न जलती है न काटी जा सकती है, तब ऐसे में आत्मा पर मिस्टर वासवानी के इस कृत्य का क्या प्रभाव होगा । साथ ही उन्होंने यह भी जानना चाहा कि नाक का आत्मा से क्या संबंध है ? मिस्टर परमार ने कहा कि वे उसकी नाक लौटा दें । लेकिन डांस खत्म हुआ और मिस्टर वासवानी कांटे से नाक उठाए बाहर आए तो बेयरे ने कांटा वापिस मांगा । पति का इशारा समझकर मिसेज वासवानी ने परमार की नाक रूमाल में रख ली तथा अगले ही क्षण वह परमार के पास पहुंची तथा उसने परमार की नाक पिचका दी । यह इस प्रकार अविस्मरणीय घटना बनगई ।

---

(1) "कमलेश्वर कहानी का संदर्भ" - पुष्पपाल सिंह - पृष्ठ-68.

आधुनिकता की होड़ में क्लबों की अनैतिकताओं को सभ्यता का नाम दिया जाने लगा है । यह प्रवृत्ति भी हमें पश्चिम से ही प्राप्त हुई है । इसके साथ ही देश में अभी भी ऐसे तत्व देखने को मिलते हैं जो इस अनैतिकता का विरोध करते हैं । वास्तव में आधुनिकता के नाम पर ऐसी बेहूदगियां इस सभ्यता के लिए अभिशाप हैं । यही इस कहानी की संवेदना है । आज समाज की समस्त नैतिकताएं समाप्त होती जा रही हैं । यह कहानी भी सत्य को प्रतिपादित करती है ।

§6§ ब्रांच लाइन का सफर :-

यह कहानी छद्म सन्यासियों और उनके द्वारा किये जा रहे अनैतिक कार्य-कलापों का पर्दाफाश किया गया है । ब्रांच लाइन की गाड़ी में कतई भीड़ नहीं थी । आठ-दस मुसाफिर दुबके हुए इधर-उधर आराम से लेटे या बैठे थे । एक स्वामीजी भी डिब्बे में बैठे थे । उनके पास एक बोरा था । दो सहयात्री स्वामीजी से मज़ाक कर रहे थे तथा बोरे के बारे में पूछ रहे थे । स्वामीजी को उन यात्रियों के व्यवहार पर क्रोध आ रहा था ।

गाड़ी रुकने के बाद टिकट बाबू गाड़ी में आ गया था । उसने सबके टिकट देखने शुरू किए । स्वामीजी का भी टिकट देखा । एक व्यापारी ने टिकट बाबू को आँख से बोरे की ओर संकेत किया । टिकट बाबू जब बोरा खोलने लगे तो स्वामीजी ने उसे रोकना चाहा । बोरे में से एक पोटली में गांजा, अफीम, दो जनानी धोतियां तथा सोने चांदी के गहने निकले । स्वामीजी ने पूछने पर बताया कि वह सारा सामान एक माताजी का है तथा वह हरिद्वार में दान करने के लिए जा रही हैं । स्वामीजी से पूछताछ हुई तो डिब्बे से एक सोलह-सत्रह वर्ष की लड़की उतर कर आई तथा उसने बताया कि उसे स्वामी ने तीन सौ रूपयों में खरीद कर आठ सौ में बेच दिया है । यह बात सुनकर दोनों व्यापारी फिर अश्लील बाते करने लगे । लड़की ने बताया कि वह उसे आगरा में बाईजी के यहां रखने जा रहे हैं । यह सुनकर व्यापारी ने कहा हम हजार रूपये देते हैं । पुलिस ने उन्हें धमकाकर बैठा दिया । लेखक ने सोचा कि -"इन ब्रह्मचारियों ने वेश्याओं को जन्म दिया है और व्यभिचारियों ने इन्हें ज़िन्दा रखा है । और इन ब्रह्मचारियों तथा व्यभिचारियों के कई स्तर तथा दर्जे हैं ।"§1§

---

§1§ "जार्ज पंचम की नाक"-"ब्रांच लाइन का सफर"- कमलेश्वर, पृष्ठ-52.

-=: 47 :=-

इस कहानी में व्यापारियों तथा छद्म सन्यासियों के चरित्र की विद्रूपता और अनैतिकता को उभारा गया है । इस कहानी में नारी का शोषण किस प्रकार होता है यह देखने को मिलता है । पाखंड़ी साधु व्यापारियों से भी अधिक शोषक और अन्यायी होते हैं । और संत साधु लड़कियों को सप्लाय करके वेश्यावृत्ति को बढ़ाते हैं । यह इस कहानी का कथ्य है ।

§7§ अपने देश के लोग :-

इस कहानी में दिल्ली जैसे महानगर के एक साधारण क्लर्क के जीवन की झांकी है । इस कहानी का कथा सार यह है : एक जगह बहुत से लोग एकत्रित थे । उनके गलों में पट्टे पड़े हुए थे जिन पर उनका नाम तथा मर्ज लिखा हुआ था । वे सब लोग कार्यालय की गतिविधियों से संतुष्ट नहीं थे । लेखक जब वहां पहुंचकर कार्यालय के जनसंपर्क अधिकारी से मिले, तब अधिकारी ने बताया कि कर्मचारियों को अनुशासन प्रिय बनाने के लिए एक नया विभाग खोला गया है । उस विभाग में उन सब लोगों की मर्ज §इच्छा§ के बारे में पूछताछ की जा रही है । लेखक उस कमरे में गया जहां मरीज़ों की पूछताछ हो रही थी । उस व्यक्ति को बुलाया गया जो सोचता था कि उसका वेतन कम है । उसके असंतुष्ट होने का कारण सिर्फ इतना था कि उसने अपने बेटे को पढ़ाने तथा घर के सदस्यों की बीमारी पर खर्च होने के कारण ऋण लिया था । उसकी आर्थिक व्यवस्था एकदम टूट गई थी । "डोक्टरों ने हिसाब लगाया, बाईस वर्ष की नौकरी में उसकी तनखवाह में कुल एक सौ दस रुपया बढ़ा था । पच्चीस रुपये से उसने नौकरी शुरू की थी और अब एक सौ पच्चानवे पा रहा था ।"§1§ और जब उसकी आँखें फाड़कर पुतलियों के साथ रील निकली तो यह उसके स्वप्नों की इतनी लंबी, न खत्म होने वाली रील है जिसे डोक्टरों को काटना पड़ा । इस रील में उसके सारे अधूरे स्वप्नों की तस्वीरें हैं- "अच्छे साफ-सुथरे मकानों की सजी हुई दुकानों के शोकेसों में सुंदर-सुंदर साडियाँ लटक रही थीं । कमीजों, पैंटों की भी तस्वीरें थीं । जूतों की भी और अच्छे होटलें थीं । सेहमत बच्चों और उनके कपड़ें की थीं ।"§2§

- -

§1§ "जिन्दा मुर्दे - अपने देश के लोग" - कमलेश्वर - पृष्ठ-63.
§2§ पूर्वोक्त - पृष्ठ-64.

इस प्रकार यह कहानी बहुत खूबसूरती से सामान्य क्लर्क के दुःख-दर्द भरे जीवन को साक्षात करती है ।

सब लोग असंतोष से भरे हुए हैं । उन्हें इतने कम साधन उपलब्ध हैं कि उससे उनका जीवन भावनाशून्य बन गया है तथा विवशताओं ने उनमें असंतोष भर दिया है । इस कहानी में वर्तमान समाज के मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों का चित्रण किया गया है । दूसरी ओर सरकार द्वारा किए जाने वाले सहायता उपायों के खोखलेपन को भी उजागर किया गया है ।

§8§ नया किसान :-

यह कहानी संग्रह की आठवीं कहानी है । इसका कथासार इस प्रकार है : शहर के पुराने ज़मींदार घराने के सबसे बड़े लड़के कुंवरजी प्रय: अपनी होनेवाली पत्नियों के वैभव की चर्चा करते रहते थे । वे लोग दूसरों की बातों में आ जाते थे । वे हमेशा अपनी प्रशंसा में ही बाते करते तथा लोगों पर झूठा रोब झाड़ते । कभी तो सीमेंट-लोहे का व्यापार करने की सोचते तो कभी होटल खोलने का प्रचार करते । कभी-कभी योजना बनाते कि कपड़ें का व्यापार किया जाए । उन्होंने एक बार वनस्पति घी की एजंसी प्राप्त करने की बात सोची । कभी कोई उन्हें बताता था कि वे अपनी बंजर पड़ी जमीन में ईंटों का भट्ठा खोल लें । और मुखिया ने सलाह दी कि वे फार्म खोल लें ।

उन्हें मुखिया की सलाह बहुत पसंद आई । बाद में उन्होंने फार्म खोल लिया था । वे तीन महिने तक दिखाई नहीं दिए । एक दिन वे गांव के डाक खाने की ओर जा रहे थे । लोगो ने पूछा कि डाकखाने क्यों जा रहे हो ? तब उन्होंने बताया कि कृषि संबंधी पुस्तकों की वी.पी.पी. लेने गए थे । कुंवरजी ने बताया कि उन्होंने फार्म में एक कमरा बना लिया है । वे खुद ट्रेक्टर चलाते हैं तथा उन्होंने फार्म को बीस पच्चीस हिस्सों में बांट दिया है । गेहूं, कपास, चना, मक्का, गन्ना, आलू, प्याज़, मटर, जवार तथा बाजरा की खेती कर रहे हैं । यह सुनकर एक व्यक्ति ने पूछा कि क्या रबी व खरीफ दोनों की फसलें लगाई है तब कुंवर साहब जो कि नए-नए किसान बने थे उन्होंने उत्तर दिया कि क्या पच्चीस फसलें लगाई हैं ।

यहां किसान एक व्यंग्यात्मक स्थिति में उभरा है । ज़मीदारों के बिगड़े बेटे किस प्रकार धन, समय तथा शक्ति को व्यर्थ कर रहे हैं जो कि एक विकासशील राष्ट्र के लिए हानिकारक है । यही इस कहानी कि मूल संवेदना है । ज़मींदार परिवार, सामंती परिवार की ज्ञानशून्यता किंतु वैभव संपन्नता के आधार पर भारतीय समाज के वर्ग वैषम्य को इस कहानी में वाणी दी गई है और समाज के धनाढ्य वर्ग पर चोट की गई है ।

§9§ भरे पूरे अधूरे :-

इस कहानी में सामान्य आदमी के जीवन के दु:ख-दर्द को वाणी दी गई है । इसमें एक ओर जीवन के अभावों की ओर संकेत करते हैं तो दूसरी ओर कुछ ऐसे स्वप्न पूरे होते दिखाए गए है जो जीवन की आवश्यकताओं के बदले में खरीदे जाते हैं ।

जयप्रकाश बाबू ने मोटर साईकल खरीद ली । उसके बाद उनके घर में मोटर साईकल की वजह से घर में रौनक आ जाती है । अब उनकी पत्नी ज्यादा सलीके से रहने लगती है तथा बच्चों को संवार कर रखती है । एक दिन मोटर-साईकल कहीं टकरा गई और जयप्रकाश बाबू को चोट लगी । एक्सीडेंट होने पर जब उसकी मरम्मत का लंबा-चौड़ा खर्चा बताया जाता है तब वह आठ सौ रूपए में बेच दी जाती हैं । उन्हीं पैसों में से रेडिया खरीदा गया । उनकी पत्नी रेडियों के आने से प्रसन्न थीं । एक दिन रेडियो बच्चों ने गिरा दिया । बाद में पांच सौ रूपये रह जाते हैं, साढे चार सौ का रेडियो आता है । फिर वह रेडियो एक दिन मोटर साइकल के समान ही इसलिए बेचा जाता है कि नब्बे रूपये मरम्मत के देने से कहीं अच्छा यह है कि इसके ढ़ाई सौ रूपए वसूल किए जाएं । फिर पत्नी के एबॉर्शन में इन ढ़ाई सौ में से भी एक सौ बीस ही बच पाते हैं बाद में बेटी की मांग पर लड़की के लिए हारमोनियम ले आते हैं । थोड़े ही दिनों बाद बेटी का भी मन भर जाता है । हारमोनियम को लपेट कर मेज़ के नीचे रख दिया गया । कुछ दिनों बाद उसे खोलकर देखा तब चुहों ने कुतर कर खा गया था । उसे भी बाद में सत्तर रूपये में बेच दिया गया । कुछ दिनों बाद उन रूपयों से ऊन खरीदी गई ।

कुछ रुपयों से उनकी पत्नी अपने लिए एक जूड़ा तथा जयप्रकाश बाबू के लिए बाल रंगने का रंग ले आई और इस प्रकार सब रुपये समाप्त हो गए ।

इस प्रकार यह कहानी मध्यवर्गीय घिसटती जिंदगी की सही तस्वीर सामने आती है । वैसे इस कहानी में संग्रह की अधिकांश कहानियों की तरह व्यंग्य का तीखा तेवर नहीं है । इस कहानी में एक क्लर्क का जीवन किस प्रकार बीतता है उसका सचोट वर्णन किया गया है । आधुनिकता के युग में एक सामान्य क्लर्क सीमित साधनों में कितनी कठिनाई से अपने परिवार के लिए सुविधाएं जुटाता है निम्न मध्यवर्गीय व्यक्ति के जीवन के सामाजिक और आर्थिक यथार्थ को इस कहानी में बहुत बारीकी से चित्रित किया गया है ।

§10§ अपने अजनबी देश में :-

इस कहानी में देश की भ्रष्ट व्यवस्था का पर्दाफाश हुआ है । चंद लोगों ने देश को प्रजातन्त्र के नाम पर किस प्रकार लूटा-खसोटा है, इसका जीवंत चित्रण कहानी में प्राप्त होता है । इस लोकराज में सब कुछ जायज जैसी बात है और लोकराज में प्रत्येक व्यक्ति ने अपने निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए अपने-अपने कार्य को लोकसेवा बताया है ।

आजादी के बाद हमारे देश में लोकतंत्र की स्थापना हो गई तथा जनता का अपना राज हो गया । लेखक को अपना ही देश अजनबी लगने लगा था । पहले रातों-रात सारे काम हो जाते थे लेकिन जब से जनता का राज हुआ सब काम जनता के सामने होता है । इसलिए सड़कें बनने में बरसों लग जाते हैं । ठेकेदार भी काम में दिलचस्पी नहीं लेते । मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है । जिस घर में लेखक ठहरे थे, वह लोक सेवकों का परिवार था । घर के सबसे बड़े व्यक्ति दीवानचंदजी एक फैक्टरी के मालिक थे । उनके भाई भगवानचंदजी कारपोरेशन के सदस्य थे । वह भी प्रत्येक मामले में हेरा-फेरी करते थे । इससे वह लोगों के काम भी करवा देता था । तथा स्वयं भी मुनाफा कमाता था । लोकतंत्र के नाम पर हेरा-फेरी की जाती थी । इसके साथ ही लोकसेवा का डंका पीटा जाता था ।

शाम को लेखक एक क्लर्क के घर जाते हैं । वह क्लर्क इस लोकतंत्र से बहुत दुःखी था तथा बहुत कठिनता से वक्त काट रहा था । फिर भी उसने लोकतंत्र पर कोई टिप्पणी नहीं की । वह सब मुसीबतें झेलकर भी सुखी था । वह अपने भाग्य पर भरोसा करता था । उसे एक बुरी लत थी शराब पीने की । चाहे कुछ भी हो जाए शराब अवश्य चाहिए । जब कभी शराब नहीं मिलती तब वह एक पुलिसवाले को रिश्वत देकर शराब मंगवा लेता था । लेखक लोकतंत्र की यह हालत देखकर बहुत दुःखी हुआ । लोकतंत्र की पुलिस भी बुरे कामों में जुटी हुई है । उसे लगा कि यह देश उसका नहीं है, उसका देश अब अजनबी हो गया है ।

इस कहानी में आधुनिक समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का चित्रण किया है । "अपने अजनबी देश" में प्रजातंत्र पर बहुत थोड़ा व्यंग्य है । प्रजातंत्र के नाम पर इस देश की स्थिति यह है कि "जो सोच रहा है वह काम नहीं कर रहा है और जो काम कर रहा है, वह सोच नहीं रहा है ।"§1§ इस प्रकार यह कहानी राष्ट्रीय जीवन में फैले व्यापक भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य करती है । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भ्रष्टाचार, मुनाफाखोरी तथा लालफीताशाही की प्रवृत्ति ने समाज को बुरी तरह से जकड़ लिया है । जो लोग सत्तारूढ़ है वे गलत काम करके मुनाफाखोरी करते हैं और साथ ही लोक सेवा का ढंका पीटते हैं । दूसरी ओर जो साधारण व्यक्ति है उन्हें शराबखोरी ने बरबाद कर दिया है । इस खराब काम में पुलिस उनकी मदद करती है । कितनी व्यंग्यात्मक स्थिति है कि पुलिस का काम होता है कि वह बुराई को मिटाए जब कि यहां पुलिसवाला खुद एक क्लर्क को शराब की बोतल उपलब्ध करवाता है । क्लर्क के रूप में आम जनता इस भ्रष्टाचार और कुव्यवस्था को मौन धारण कर सहती जा रही है और विद्रोह नहीं करती । §शराब का प्रतीक§ विद्रोह से विमुख किए रहती है । व्यवस्था के प्रति मोहभंग इस कहानी की संवेदना का केंद्र बंदु है ।

§11§ <u>जिन्दा मुर्दे</u> :-

यह कहानी इस संग्रह की अंतिम कहानी हैं । यह कहानी भारत-पाकिस्तान युद्ध की पृष्ठ भूमि पर लिखी गई है ।

---

§1§ "जिन्दा मुर्दे" - कमलेश्वर - पृष्ठ-44.

पाकिस्तान के सदर अयूब खाँ दिल्ली का दौरा करना चाहते थे। उनके दिल्ली के दौरे की तैयारियाँ की जा रही थी। पाकिस्तान के सरकारी क्षेत्रों में भागदौड़ चल रही थी। अखबारनवीसों को खास निर्देश दिए जा रहे थे कि वे अखबारों को किस प्रकार की रिपोर्ट देंगे। इसके बाद शायरों को बुलाया गया। उन्हें दौरे के लिए नज़्में व नग्में तैयार करने का काम सौंपा गया था। उन्हें कहा गया था कि वे नज़्मों व नग्मों को पहले ही जंचवा लें। यह भी कहा गया कि इन नज़्मों व नग्मों के लिए उन्हें मेहनताना भी दिया जाएगा। शायरों के बाद बैंड वालों को हुक्म दिया गया कि फौजी कांउसिल जिन नग्मों को चुनेगी, उनकी धुनें तैयार करनी होंगी। उन्हें यह भी निर्देश दिया गया कि बाजों में ढोल को अधिक महत्व दिया जाए और सुरीलें बाजों का प्रयोग न किया जाए।

बैंड वालों के बाद फोटोग्राफरों को बुलाया गया। उनसे कहा गया कि वे अखबार नवीसों का हाथ बटाएं तथा पाकिस्तानी फौज के अदना (छोटे) सिपाही से लेकर आला कमान तक के अफसरो की तसवीरें तैयार रखें। यह भी आदेश दिया गया कि कुछ ऐसी तस्वीरें भी तैयार रखी जाएं, जिसमें पाकिस्तान का झंडा हिन्दुस्तान की इमारतों पर फहरा रहा हो, क्योंकि ब्रिटेन व अमेरिका के अखबार ऐसी तसवीरों की मांग करेंगे। अतः ये तस्वीरें सदर के दौरे से पहले ही तैयार हो जानी चाहिए।

एक दिन सब तैयारी हो गई। अचानक सुबह-सुबह रावलपिंडी में ढोल बजाना शुरू हो गया। सदर दौरे पर जाने को तैयार थे। अखबार नवीस टूट पड़े। शायर लोग नग्में व नज़्में पढ़ रहे थे। वहां पर फौज उपस्थित नहीं थी। कुछ ही देर बाद पता चला कि भारतीय फौजों ने जवाबी हमला किया है तथा उनकी फौजें लगातार आगे बढ़ रही हैं। इच्छोगिल नामक नहर तक भारतीय फौजें बढ़ आई थीं और वहां जमकर युद्ध हुआ था। पाकिस्तानी कमांड का ब्रिगेडियर मारा गया। हिन्दुस्तानी फौजों ने उसकी लाश संभाल कर रख ली। फौज वालों ने लाश का अंतिम संस्कार करने से पहले एक फोटो खींचनी चाही ताकि उनकी फैमिली को भेजी जा सके। उसने फोटोग्राफर को ढूंढा। वह अपनी फौजों

की वीरता की चर्चा करता रहा । उसने अपने ब्रिगेडियर की लाश की फोटो खींची और फिर अपने में ही मस्त हो गए ।

इस कहानी में व्यवस्था के भ्रष्टाचार में किस प्रकार संलिप्त होकर बुद्धिजीवी, कलाकार अपनी आत्मा की आवाज़ को दबाकर अनुभूति से दूरस्थ प्रचारात्मक कार्य करते हैं, यह इस कहानी का केंद्र बिंदू है । हुकम करने वालों के आगे हम जीवित होते हुए भी मृत के समान है, क्योंकि हम उनके संकेतों पर नाचते चले जाते हैं । जहां हमें विरोध करना चाहिए, हम विरोध नहीं करते, जहां सत्य कहना चाहिए, हम सत्य भी नहीं कह पाते । इस साहस हीनता का उद्घाटन इस कहानी में किया गया है । इस कहानी का नाभिकेंद्र व्यवस्था का खोखलापन है और जनता के मोहभंग को इस कहानी में लेखकीय आकांक्षा बनाकर पेश किया गया है ।

"जिन्दा मुर्दे" जैसी कहानियाँ अपना एक स्तर रखती है । और ये किसी न किसी रूप में समकालीन सामाजिक विसंगतियों का पर्दाफाश करती है और यह एहसास दिलाती है कि कमलेश्वर अपने परिवेश के प्रति निरन्तर सचेत हैं । इन कहानियों में संवेदनात्मक गहराई का अभाव और सोच-विचार की प्रमुखता लक्षित होती है ।

§2§ <u>बयान तथा अन्य कहानियाँ</u> :-

इस कहानी संग्रह में जीवन के विविध क्षेत्रों के पहलुओं पर विचार किया गया है । व्यवस्था के खोखलेपन का चित्रण किया गया है । नारी स्वातंत्र्य, नए नैतिक मूल्यों की स्थापना की बात की गई है ।

बयान कहानी संग्रह की अन्य कहानियाँ इस प्रकार है :-

§1§ नागमणि
§2§ लाश
§3§ या कुछ और
§4§ अकाल
§5§ मेरी प्रेमिका

§6§ जोखिम

§7§ बयान

§8§ भूखे और नंगे लोक

§9§ फैसला

§10§ आसक्ति

§11§ रातें

§12§ अब और नहीं

§13§ मैं

§14§ लहर लौट गई

§15§ अपना एकांत

§16§ फटे पाल की नांव

§17§ लड़ाई

§18§ अजनबी

§19§ दुनिया बहुत बड़ी है

§20§ उस रात वह मुझे बीच कैण्डी पर मिली थी और ताज्जुब की बात यह है कि दूसरी सुबह सूरज पश्चिम से निकला था ।

§1§ <u>नागमणि</u> :-

यह कहानी इस संग्रह की पहली कहानी है । "नागमणि" कमलेश्वर की तीसरे दौर की प्रसिद्ध और सशक्त कहानी है । इस कहानी में विश्वनाथ नामक युवक हिंदी प्रचारक था । गांधी जी से प्रभावित होकर उसने हिंदी प्रचार में ही अपना जीवन बिता दिया था । हिंदी प्रचार ही उसका धर्म था । विश्वनाथ ने हिंदी शिक्षण के लिए क्या-क्या त्याग नहीं किया था । सुशीला जैसी भाभी की शादी के दिन ही रेल के डिब्बे में तरह-तरह से उसे प्रेमनिवेदन मिला था किंतु वह उस सबको छोड़, अपनी "नागमणि" को छोड़ कालीकट-कोचीन-हैदराबाद आदि के लिए चला गया था । किंतु उसकी इस निष्ठा का क्या लाभ ? उसने स्वप्न पाला था : "अपनी भाषा अपना देश, अपना राजा अपना वेश ।" किंतु जब वह अपने शहर लौटकर आया तब उसका यह स्वप्न टूटा मिला : कहां है हिंदी ? इतने वर्षों

के बाद भी हिंदी कहीं नहीं थी । देश में हिंदी प्रचार-प्रसार के नाम पर यही तो हुआ कि हिंदी प्रदेश पूरी तरह अंग्रेजियत में रंग गया । उसने हिंदी प्रचार के लिए एक कार्यालय स्थापित करने का विचार बनाया । उसका उद्घाटन ज़िला कमिश्नर द्वारा करवाना चाहता था परंतु उसे कमिश्नर से मिलने भी न दिया गया । इससे उसे बहुत आघात लगा । वह पागल हो गया । एक दिन मरणावस्था में उसे हिंदी भवन से निकाला गया । एक दिन अपने रिश्ते के भाई के विवाह में गया । उसकी पत्नी सुशीला ने विश्वनाथ को बताया कि पहले उसकी शादी विश्वनाथ से ही करना चाहते थे । यह सुनकर विश्वनाथ की भटकन बढ़ गई । विश्वनाथ को लगा कि उसकी स्थिति सर्पमणि जैसी है और वह सांप की तरह ही अपनी मणि भूलकर पागल हो गया था । उसे लगा कि नागमणि वाले सांप की तरह वह अकेला ही रह गया । ऐसे निष्ठावान लोगों की नियति अंधकार में ही समाप्त होती हैं, इसी स्थिति पर उंगली रखकर यह कहानी आधुनिक जीवन के दर्द का एहसास व्यंग्यात्मक रूप में कराती है ।

यह कहानी सर्वप्रथम "धर्मयुग" के स्वाधिनता विशेषांक, 17 अगस्त 1963 ई. में प्रकाशित हुई तो इसमें यह जायजा भी स्वाभाविक रूप में लिया गया है कि इतने वर्षों बाद देश में हिंदी की क्या गति (या दुर्गति) है । कहानी के तीनों पात्र विश्वनाथ, बाकर मिस्त्री और सुशीला अपने-अपने घर की तलाश में है । इन तीनों पात्रों का ही बेगानापन कहानी में बहुत अच्छी तरह से उभारा गया है । सुशीला का विश्वनाथ के लिए संचित प्रेम यदि कहानी में अभिव्यंजित न हुआ होता तो प्रभावित हो सकती थी । उस रूप में कहानी जीवन यथार्थ के वृहत्तर (बड़े महान) संदर्भों से जुड़ी दिखती, पर नई कहानी के दौर के कमलेश्वर जी की यह रोमानी-वृत्ति जरा कहानी को कमजोर बना देती है । जिसके प्रभाव से कहानी की स्थितियों में सुशीला प्रसंग के लिए कोई स्थान न होते हुए भी उसे बैठा दिया गया है । इस कहानी में हुकुम करने वालों के आगे हम जीवित होते हुए भी मृत के समान हैं, क्योंकि हम उनके संकेतों पर नाचते चले जाते हैं । जहां हमें विरोध करना चाहिए, हम विरोध नहीं करते, जहां सत्य कहना चाहिए, हम सत्य भी नहीं कह पाते । इस साहसहीनता का उद्घाटन इस कहानी में किया गया है ।

§2§ लाश :-

यह इस संग्रह की दूसरी कहानी है । "लाश" देश की राजनीतिक स्थिति पर कटाक्ष करने वाली एक सशक्त कहानी है ।

शहर में प्रदर्शन कारियों का जुलूस निकलने वाला था । जुलूस के नेता भी शहर में पहुंच चुके थे । इस प्रदर्शन में भाग लेने के लिए बाहर से भी हज़ारों लोग आए थे । स्थिति को ठीक तरह से संभालने के लिए पुलिस जी-जान से जुटी थी । पुलिस कमिश्नर मुख्यमंत्री को सारे इंतजाम की सूचना देने पहुंचा, तब उसने देखा कि मुख्यमंत्री तथा गृहमंत्री निश्चिंत बैठे हैं । कमिश्नर पूरे प्रबंध के विषय में बता रहा था, लेकिन गृहमंत्री तथा मुख्यमंत्री ज़रा भी दिलचस्पी नहीं ले रहे थे ।

चार बजे मोर्चा आरंभ होकर शांति से अजगर की तरह आगे सरकता जा रहा था ।

तभी अचानक जुलूस के अगले हिस्से में भगदड़ मच गई । पुलिस ने गोली चलानी आरंभ कर दी । चारों तरफ आग, धुंआ व चीखें ही चीखें थी ।

सड़क पर जुते, चप्पल, फटे हुए कपड़े तथा टोपियां आदि ही बचे रह गए थे । घायल आदमी अस्पताल में भर्ती कर दिए गए । गुण्डों को तो पहले ही पकड़ लिया गया था ।

पता ही नहीं चला ये सब कैसे घटा । बहुत आश्चर्य की बात थी कि इतने बड़े दंगे के बाद भी एक ही आदमी मरा था । लोग उस लाश को देखने पहुंचे । उन्होंने कहा कि यह लाश उनकी नहीं है । तो फिर यह लाश किसकी है ? यह लाश आज के भ्रष्टतंत्र में लड़ी जाने वाली उस झूठी लड़ाई की है जिसमें विरोधी या सत्ताधारियों में अब कोई अंतर नहीं रह गया है ।

देश की राजनैतिक व्यवस्था में सरकार और विरोधी पक्ष अपने न्यस्त §मृत§ स्वार्थों की पूर्ति में लगे हुए हैं- सामान्य जनता के हित की चिंता किसी को नहीं है । सारी व्यवस्था ने जीवन मूल्यों की हत्या कर दी है और सरकार या

विपक्ष का कोई भी नेता उसका जिम्मेदार नहीं बनना चाहता । सभी सामान्य मानवी को लाश की स्थिति में लाने के दायित्व से कन्नी काटते हैं । इस लाश को चाहे जिस रूप में नकारा जाये लेकिन लाश, लाश है और वह किसकी है यह भी अब छिपा नहीं है ।

"लाश" अपनी सांकेतिकता के बावजूद इस देश के तमाम राजनीतिक प्रपंच को बेनकाब कर देने में समर्थ है । सत्ता प्रतिष्ठानों में जीनेवाले मंत्रियों-नेताओं तथा प्रचंड विरोध का तेवर अपनाकर शानदार जुलूसों का आयोजन कर व्यवस्था के विरुद्ध चीखनेवाले विरोधी नेताओं में क्या आज कोई प्रत्यक्ष-मौलिक अंतर रह गया है । प्रचंड विद्रोह का तेवर भी आज सत्ता में आते ही मंद पड़ जाता है, इसे अब कौन नहीं जानता ? अब तो जनता भी जानने लगी है । जनता छोटे- बड़े सभी नेताओं के द्वारा इस्तेमाल हो रही है, इसे आज सही लेखक भी जानता है ।

"लाश" देश की राजनैतिक स्थिति पर कटाक्ष करने वाली सशक्त कहानी है ।"﴾1﴿ यह कहानी हमारी सामाजिक व प्रशासनिक व्यवस्था का चिट्ठा है । राजनैतिक दलों की मिली भगत भी खुलकर सामने आई है । व्यवस्था के प्रति मोहभंग इस कहानी की केंद्रिय संवेदना है ।

﴾3﴿ <u>"या कुछ और"</u> :-

इस कहानी का पात्र रामनाथ एक वकील के साथ काम करता था । एक बार शकुंतला नामक स्त्री का मुकद्दमा वकील साहब के पास आया । शकुंतला विधवा थी । उसके रिश्तेदार संपत्ति के लिए बहुत तंग करते थे । इस मुकद्दमें के कारण रामनाथ को शकुंतला के घर आना जाना पड़ता था । धीरे-धीरे रामनाथ शकुंतला के साथ घुल-मिल गया । वह उसके हाल-चाल पूछने उसके घर भी चला जाता था । रामनाथ की पत्नी को इस बात का पता चल गया था । इस लिए रामनाथ को जली कटी सुनाती रहती थी । रामनाथ का मन गृहस्थी में नहीं

- -

﴾1﴿ "डॉ. पुष्पपाल सिंह": "कमलेश्वर कहानी का संदर्भ" - पृष्ठ-81.

लगता था । उसकी पत्नी का व्यवहार बहुत उपेक्षामय हो गया था । रामनाथ ने अपनी बेटी का विवाह तय किया । वह विवाह की तैयारियों में लग गया, जब की उनकी पत्नी हैं कि मौका मिलते ही उन्हें जली-कटी सुनाने लगती । मेहमान घर में आए हुए थे । रामनाथ ने पत्नी से पूछा शकुंतला के यहां बुलावा भिजवा दिया था या नहीं । उसकी पत्नी क्रोध में आकर बोली थी कि शकुंतला उसके घर में नहीं आएगी । रामनाथ थोड़ी ही देर बाद शकुंतला के यहां पहुंचा । वहां जाकर आंगन में खाट पर लेट गया । उसे बुलाने के लिए घर से ज्ञान दो बार आ चुका था । उसकी ज़िद्द थी कि वह अकेला नहीं जाएगा, शकुंतला भी साथ जाएगी । तीसरी बार जब ज्ञान आया तब रामनाथ ने कहा कि अम्मा से जाकर कहना कि शकुंतला आएगी और आरती का कन्यादान लेगी । ज्ञान ने कहा कि अम्मा ने पूछा है कि क्या वह स्वयं आकर उसे ले जाएं । वह भी चाहता था कि शकुंतला भी उसके घर आए । लेकिन रामनाथ सोचने लगा कि ऐसा क्यों होता है कि वह जो चाहता है वह सब मिल जाता है । पर वह सब वैसे नहीं चाहते जैसे आदमी चाहता है । शकुंतला ज्ञान के साथ चली गई । वह भी पीछे-पीछे घर पहुंचे । रामनाथ की पत्नी ने शकुंतला की बड़े स्नेह व प्रेम से स्वागत किया ।

"क्या कुछ और" में रामनाथ के माध्यम से व्यक्ति के निरर्थक, बेमानी, जीवन में सार्थकता की तलाश मिलती है । वह जीवन से घबराकर भाग जाने की छटपटाहट लिए हुए है । उसे अपना जीवन निरर्थक लगता है । वह जीवन दूसरों की शर्तों पर जीता है । "जो उनके जैसे हैं उनके पास भी कोई खास शर्तें नहीं हैं । शर्तों का भ्रम है ।"§1§ रामनाथ घर के माहौल से घबराकर शकुंतला के पास शरण लेता है किंतु शकुंतला से उसका यह लगाव प्रेम की संज्ञा है या कुछ और.....। वस्तुतः वह एक अनाम आकर्षण है जो पचपन वर्षीय प्रौढ़ रामनाथ को शकुंतला से बांधता है । यह कहानी व्यक्ति की निजी स्वतन्त्रता और उससे प्राप्त व्यक्तित्व की सार्थकता की अनुभूति को अभिव्यक्त करती है ।

"या कुछ और...." कहानी में नर-नारी संबंधों को यौन की एक मात्र धुरी से ही परखा जाता है, इसी यथार्थ को इस कहानी में दर्शाया गया है । कन्यादान जैसी परंपराओं की अपरिहार्यता§अनिवार्य§ को भी यहां रेखांकित किया गया है ।

---

§1§ "बयान तथा अन्य कहानियां" - कमलेश्वर - पृष्ठ-106.

§4§ अकाल :-

यह इस संग्रह की चौथी कहानी है । रघुनंदनलाल अपने किसी संबंधी के विवाह की दावत में जाने के लिए साफ-सुथरे होकर बच्चों को साथ में ले जाते हैं । ताकि बच्चे भी दावत का स्वाद चख सकें । निर्धनता के कारण वे अपने बच्चों को अच्छा खाना और अच्छे कपड़े नहीं दे सकते थे । दावत में पहुंचकर बच्चों ने खाना तो खाया लेकिन बूढ़े रघुनंदन लाल का पोपला मुख कुछ भी न खा सका तथा घर वापिस आकर पत्नी से खाना मांगा ।

आर्थिक अभावों से ग्रस्त व्यक्ति अपने जीवन में स्वादिस्ट भोजन भी प्राप्त नहीं कर सकता । उसके मन में एक इच्छा रह जाती है तथा जैसे ही कभी किसी दावत में जाने का अवसर प्राप्त होता है तब वह अपने पोतों को भी साथ ले जाता है ताकि बच्चे भी दावत का आनंद उठा सकें । लेकिन दावतों में खान-पान की उचित व्यवस्था न होने के कारण सूखी या ठंडी पूरियां नहीं खा पाता । घर वापस पहुंचकर अपनी पत्नी से खाने की मांग करता है । वास्तव में निर्धन व्यक्ति के जीवन की ये स्थितियां बहुत कारुणिक हैं ।

इस कहानी में आर्थिक तंगी में पिस रही भारतीय जनता के उस यथार्थ को खोला गया है, जिसमें बच्चों और बूढ़ों को मन चाहा खाना तक भर पेट नसीब नहीं हो पाता । व्यवस्था की विद्रूपता को उदघाटित करने वाली यह यथार्थ बोध की कहानी है ।

§5§ मेरी प्रेमिका :-

शांता ने लेखक को पत्र लिखकर कहा कि उसके नारी पात्र बहुत कमजोर है वे आत्म हत्या कर लेते हैं । उसने लेखक को बताया कि सुप्रकाश नामक लेखक ने विवाहित होते हुए भी उससे छल किया है । देवव्रत नामक साहित्यकार भी अनैतिक संबंध स्थापित करना चाहता है और पति शंकालु वृत्ति का होने के कारण उसे परेशान करता है । शांता ने पत्र लिखकर लेखक को बताया कि अब वह आत्महत्या कर लेगी । परंतु जिजिविषा उसे मरने नहीं देती ।

अचानक एक दिन रात को शांता ने लेखक का दरवाज़ा खटखटाया। लेखक उसे देखकर हैरान हो गया। उसने शांता से पूछा कि उसने तो आत्महत्या कर ली थी। शांता ने बताया कि वास्तव में उसने आत्महत्या नहीं की। वह लेखक के घर के पास से जा रही थी, अतः वह उससे मिलने चली आई।

"मेरी प्रेमिका" कहानी में उलझी-उलझी, टूटी-टूटी संवेदनाए हैं। वैयक्तिक चेतना से युक्त नारी स्वयं को संवेदना का पात्र नहीं बनाना चाहती। आत्महत्या को निन्दनीय समझती है। दुःख, शोक, पीड़ा से बचने का उपाय खोजती रहती है। कहानी लेखक और उसके पत्र-मित्र के बीच लिखे गये पात्रों के माध्यम से चलती है अन्ततः साक्षात्कार भी होता है।

अपने पात्रों में शान्ता ने पुरुष की अधिकार-भावना, खोखले अहम् तथा अन्यो को पराजित कर देने की भावना पर अच्छा व्यंग्य किया है। "अधिकार हिन पुरुष बेहद शालीन और कोमल होता है पर अधिकार प्राप्त करते ही वह भयानक और बर्बर हो जाता है। शंकाओं के सर्प-फन उठकर मेरे चारो और खड़े हो गए और अब इन सर्पदशों से मैं काली पड़ गयी हूँ। मेरे शरीर की जानी-अनजानी जगहों पर नील पड़े हुए हैं।"(1) अपने पति द्वारा किए गए अत्याचार जहाँ तक सह सकती है, सहती है, अंततः अस्पताल पहुंच जाती है। संवेदना के पात्र होते हुए भी जिजीविषा के प्रति अग्रशील है- "मैं इतनी आसानी से मरना नहीं चाहती और जो मरना नहीं चाहता वह मर भी नहीं सकता। बताओ मैं क्यों मरु ? मैंने ऐसा क्या किया है कि मर जाऊँ ? अब तो जिन्दा रहने की तमन्ना और बढ़ती जाती है।"(2)

इस कहानी में बौद्धिक कहे जाने वाले लेखक भोली स्त्रियों से किस प्रकार छल करते हैं। विवाहित होने पर भी प्रेम का नाटक रचते हैं। ऐसे लोगों का चित्रण किया है जो पारिवारिक विघटन के तनाव से त्रस्त होकर अपनी कुंठा की प्रतिपूर्ति वासना द्वारा करते हैं। देवव्रत ऐसे ही वर्ग का प्रतिनिधि है।

- -

(1) "मेरी प्रेमिका" - "बयान और अन्य कहानियाँ" - पृष्ठ-87.
(2) पूर्वोक्त - पृष्ठ-88.

वह दोहरा व्यक्तित्व जीता है । बाहर उत्तरदायी भाई की भूमिका निभाता है लेकिन भीतर ही शांता को अपनी वासना का शिकार बनाना चाहता है । शांता के विद्रोह करने पर उसकी बदनामी करता है । इतनी नीचता पूर्ण व्यक्तित्व स्वतंत्रता के बाद ही इस समाज में पनपे हैं ।

§6§ जोखिम :-

यह कहानी आर्थिक कष्टों से जूझते, कहीं पनाह पाने की नाकाम कोशिश है । जोखिम का नायक आर्थिक दबावों से ग्रस्त है । कस्बे से बंबई जैसे महानगर में जीविका की खोज में आये व्यक्ति का दोहरा दर्द चित्रित है । युवा नायक बेरोज़गार था । उसे कभी काम मिल जाता था । जब काम उसके पास नहीं होता तब उसका वक्त तंगहाली में कटता था । या ऐसी स्थिति जो सिर्फ न सुख की है, न दुःख की, सिर्फ एक ठहराव की । दोगली अर्थव्यवस्था के कसते शिकंजे की । या बेकारी से परेशान उस युवक की जिसके आगे अँधेरा है । उसे तस्करों को देखने की कल्पना थी । धीरे-धीरे वह इच्छा बलवती होती गई । बहुत धन कमाते हैं । इस इच्छा को पूर्ण करने के लिए वह समुद्र के तट पर निरुद्देश्य भटकता रहता था । उसकी मां के खत आते हैं । हर पत्र में आग्रह होता कि वह गाँव लौट आए । एक बार पत्र आया उसमें मां बीमार है ऐसा लिखा था । नायक के पास इतने पैसे नहीं थे कि वह अपनी बीमार मां को देखने जा सके । बाद में वह मां को देखने पहुंचा तब मां बहुत बीमार थी । खर्च बढ़ता जा रहा था । उसकी मां बीमारी में भी चिन्तित थी कि बाज़ार दिन-प्रतिदिन महंगा क्यों होता जा रहा है ।

नायक की मां मृत प्राय हो चुकी थी । नायक बहुत परेशान था कि अब उसके भविष्य का क्या होगा । नायक ने वित्तमंत्री मोरारजी देसाई को पत्र लिखा । वित्तमंत्री उसकी बीमार मां को देखने आए । वह नायक की बाते सुनकर खीझ गए तथा वापस चले गए । नायक की मां का शरीर और भी पथरा गया था । मां मर गई । मां के चेहरे पर कितनी शांती है । लेकिन उसकी अंतिम व्यवस्था का चेहरा अभी भी लेखक की आँखों के आगे से नहीं हटता ।

इस कहानी के कथानक के माध्यम से यहां देश के हर मामूली आदमी की तकलीफ को जुबान दे दी गई है किंतु देश का वित्तमंत्री भी उस सामान्य जन की मुसीबत को हल नहीं कर पाता है, यह स्थिति का क्रूर व्यंग्य है । इस प्रकार की कहानी आज के मनुष्य की जिंदगी का जोखिम भरा आलेख है । "डॉ. विनय के अनुसार : "सबसे बड़ा कटु सत्य इस कहानी में उभरा है कि समानांतर ईमानदारी का जीवन जीने की लालसा लिए भी आदमी भटकता है और दूसरी स्थिति में भी उनका भटकाव खत्म नहीं होता ।"§1§ डॉ. रामदरश मिश्र को इस कहानी में मोरारजी देसाई की उपस्थिति के फंतासी शिल्प से एक दैवी चमत्कार सा लगता है जिससे "कहानी एक मजाक सी लगने लगती है ।"§2§ इस कहानी में अबजों नारेबाजी का किंचित रंग है वह है "सामान्य जन" या "मामूली आदमी" जिसकी आवृत्ति कहानी में कई बार हुई है । ऐसा लगने लगता है कि "समांतर" कहानी आंदोलन का कहानीकार इस शब्द को बार-बार ला रहा है ।

आधुनिकता में व्यक्ति ऐसे फँस गया है कि उसके पास इतना भी धन नहीं है कि वह अपने जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें । वह अपनी बीमार मां को देखने भी नहीं जा पाता । आर्थिक तनावों ने उसे इतना कुंठित कर दिया है कि वह तस्करों की खोज में समुद्र तट पर भटकता है । सोचता ही रहता है कि उसे धन कैसे प्राप्त हो । यह हमारे स्वतंत्र व आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी रही है कि बेरोजगारी के दिए अर्थाभाव से हमारा युवा वर्ग कुंठित होकर रह गया है । इस प्रकार निर्धनता और आर्थिक अभाव के विरोधी पक्ष पर कुप्रशासन और आर्थिक अपराधों को रखकर समकालीन यथार्थ को उद्घाटित किया है ।

§7§ बयान :-

§धर्मयुग : 29 जून, 69§ निजी और बाहरी दुनिया के ऐसे ही रिश्ते की कहानी है । यह कहानी स्वतन्त्रता से जिंदा रहने की इच्छा रखनेवाले एक सही व्यक्ति पर चारों तरफ से पड़नेवाले भ्रष्ट सामाजिक दबावों की कहानी है ।

---

§1§ डॉ. विनय, "समकालीन कहानी" - पृष्ठ-96.
§2§ "कमलेश्वर" §सं. मधुकर सिंह§ "कमलेश्वर की कुछ कहानियां - पृष्ठ-30.

-=: 63 :=-

इस कहानी का नायक फोटोग्राफर है, वह दिल्ली का था । उसने आत्महत्या की । आत्महत्या को अपराध माना जाता है । इस कारण मृत फोटोग्राफर की पत्नी को कानून ने अदालत के कटघरे तक खींच लिया । फोटोग्राफर की आत्महत्या के प्रमाण प्राप्त नहीं हो पा रहे थे इसलिए किसी तरह स्त्री पर कानून के दावपेचों द्वारा पति की हत्या का अपराधी सिद्ध करने का प्रयत्न किया जा रहा है । मृत व्यक्ति सरकारी पत्रिका में फोटोग्राफर था । उसने प्रेस इन्फारमेशन ब्यूरो में पांच वर्ष तक काम किया । उसने करीब छः सात साल एक सरकारी पत्रिका में फिर साढ़े चार साल एक विज्ञापन कंपनी में काम किया था । अदालत में स्त्री की व्यक्तिगत जिंदगी का इतिहास बार-बार दोहराया गया है । यह प्रयत्न किया गया कि उसके पूर्व जीवन में कहीं न कहीं इस आत्महत्या के कारणों के बीज प्राप्त हो जाएं । इसी कारण बाइस वर्ष पहले के विशन नामक युवक की चर्चा की गई । कानून ने सीधा तर्क लगाया कि विशन नामक यह युवक इस स्त्री की जिंदगी में दोबारा लौट आया होगा और इसी कारण उस स्त्री ने अपने पति की हत्या कर दी होगी । लेकिन ऐसा नहीं था । उस स्त्री ने बयान दिया कि वह अपने पति से बेहद प्रेम करती थी और उसका पति भी उसे उतना ही प्यार करता था । शादी से पहले की घटना का सूत्र पकड़ कर उसे अपमानित किया जा रहा है वह इस सारी स्थिति को समझ रही है । वह कहती है कि- "उन्होंने मुझे ब्रेसरी उतारने को कहा था । मैं थोडा सकुचाई थी । दिन का वक्त था । वे कैमरा लिये बैठे थे । फिर उन्होंने मुझे वायल की झीनी साड़ी पहनने को कहा था । मुझे तरह-तरह से बैठाया और लिटाया था और तस्वीरें ली थीं । उस वक्त उनकी एक आँख पहले की तरह काँप रही थी । मैं समझ गयी थी- वे सिर्फ मुझे देख रहे थे । उस वक्त जब वे तन्मय थे.... जी, यानी अपने में डूबे हुए थे, तब भी आठ-दस बार उनकी आँखों से खून के कतरे टपके थे ।"(1) फिर भी उसे बार-बार गलत सवाल करके उसे परेशान कर रहे थे । इसलिए वह अदालत से कह देती है कि गलत और व्यर्थ के प्रश्नों से ठीक निर्णय तक नहीं पहुंचा जा सकता । वह सारी स्थिति स्पष्ट करती है कि उन दोनों में कोई झगडालूं भी नहीं था कि किसी झगड़े की वजह से उस व्यक्ति ने आत्महत्या की है । वह बताती है की जब सरकारी

---

(1) कमलेश्वर "बयान" - पृष्ठ-103.

पत्रिका में नौकरी करता था तब उसके पति के साथ एक ऐसी घटना घटित हुई थी कि उस घटना के कारण ही जितनी स्थितियाँ व तनाव उत्पन्न हुए, उससे तंग आकर ही उसके पति ने आत्महत्या की ।

इस कहानी में मध्यवर्ग का नौकरी-पेशा व्यक्ति इस व्यवस्था में किस प्रकार पिसता है, इसका प्रमाण इस कहानी का फोटोग्राफर उसकी पत्नी है । न्याय व्यवस्था की पंगुता शिक्षा संस्थाओं की गैर-ईमानदारी, पत्रिकाओं की सस्ती पत्रकारिता ऐसे बिन्दु हैं जिनके विवरण हमारी व्यवस्था के खोखलेपन को सिद्ध करते हैं । व्यवस्था के प्रति मोहभंग इस कहानी की संवेदना का नाभिकेंद्र है । एक ईमानदार और संवेदनशील व्यक्ति (फोटोग्राफर) की आत्महत्या ईमानदार शक्तियों की असहाय दशा तथा भ्रष्टाचार की दुर्दम जकड़ दर्शाती है । यह कहानी पूरी तरह समकालीन यथार्थ को उजागर करती है ।

"फैसला....... कुछ तो होगा ही । और वह व्यक्ति के खिलाफ ही हो सकता है । जी, व्यक्ति माने अकेला आदमी, जैसे अकेली मैं....... या आप ।"(1) कहानी का यह अंतिम वाक्य किसी भी पाठक को सहसा सन्नाटे में छोड़ देता है और इस व्यवस्था में जी रहे लोगों की नियति पर बार-बार सोचने को मजबूर भी कर देता है ।

(8) <u>भूखे और नंगे लोग</u> :-

इस कहानी का कथासार यह है : श्रीमती सरीन और शांता कश्मीर में एक कोटेज में रुकी हुई थीं । श्रीमती सरीन चित्रकार थी और शांता लेखिका । जयदेव गब्बों का व्यापारी था । अपने व्यापार के सिलसिले में ही उसे आगे जाना था । वैसे भी वह इन महिलाओं के बीच अटपटा महसूस कर रहा था । उसने श्रीमती सरीन को बता दिया था कि उसे वापसी के बाद भी एक महीने के लिए कश्मीर में ही ठहरना है । श्रीमती सरीन ने उसे निमंत्रण दिया था कि वह उनके साथ ही ठहरे । शांता तो वापिस चली गई थी । श्रीमती सरीन के साथ दो

---

(1) कमलेश्वर "बयान" - पृष्ठ 106.

व्यक्ति और थे । एक कमला नामक पुरुष जो रसोई का काम करता था दूसरा उसका सिपाही भाई । वह रात में चौकीदारी करता था । श्रीमती सरीन को इन लोगों पर विश्वास नहीं होता था । उन्हें न तो कमला की ईमानदारी पर विश्वास था और न ही सिपाही के चरित्र पर । श्रीमती सरीन चित्र बनाने में व्यस्त रहती थीं । जयदेव भी अपना काम निपटाकर वापस लौट आया था, तथा श्रीमती सरीन के साथ ही रह रहा था । एक दिन श्रीमती सरीन ने सिपाही को निकाल दिया । उन्हें संदेह हो गया था कि वह रात को उनके कमरे में घुस आता था । लेकिन कमला कोटेज के बाहर ही शहतूत के पेड़ के नीचे सो जाता था । सुबह होते ही वह चला जाता था । एक दिन सरीन ने कमला को सामान खरीदने भेजा । उसने दस रुपये का नोट कहीं खो दिया सरीने ने उसे डांटा तथा चोर कहा । उन्होंने उससे कहा कि वह अपने बाप को बुला लाए ताकि वह उनका हिसाब करदें । रात को सिपाही लड़ने आया कि उन्होंने उसके भाई को चोर क्यों कहा ? उसके बाद वह चला गया । रात हो गई थी । जयदेव भी सो गया । थोड़ी देर बाद ही जयदेव को गर्दन पर गर्म साँसों का स्पर्श हुआ । अपने कमरे से एक छाया जाती हुई भी दिखाई दी । उसने मोमबत्ती जलाई तो हैरान रह गया । श्रीमती सरीन के जूड़े का केतकी का फूल फर्श पर पड़ा था ।

थोड़ी देर बाद ही श्रीमती सरीन दरवाजा पीट रही थी । जयदेव उठा, और उसने देखा कि सिपाही ठंड में किटकिटाता हुआ एकदम भीगा खड़ा था । मिसेज़ सरीन कह रही थीं कि वह किसी खास कारण से यहाँ आया था । कुछ देर पहले वह उनके कमरे के दरवाजे पर खड़ा था । लेकिन सिपाही ने बताया कि वह सामने वाले शहतूत के पेड़ तले सोता है बारिश बहुत होने के कारण वह भीग गया तथा यहां आ गया । जयदेव सरीन को अंदर ले आया । उसने सिपाही को भी भीतर बुला लिया । श्रीमती सरीन ने उससे कम्बल ओढ़ लेने के लिए कहा । कम्बल लेते समय सिपाही ने फर्श पर पड़ा फूल तकिए पर रख दिया । सुबह होते ही कमला का बाप आया था । सरीन ने वापस दोनों को काम पर रखा लिया था ।

इस कहानी में अमीर और गरीब वर्ग के सामाजिक वर्ग-वैषम्य को

उद्घाटित किया गया है । श्रीमती सरीन, शांता और जयदेव पहले वर्ग को अभिव्यक्त करते हैं जो धनाढ्य है । दूसरे वर्ग में कमाला, सिपाही है, जो निर्धन वर्ग है । भयंकर गरीबी के मार के कारण वे पानी में भीगते हैं और रात भर पेड़ के नीचे पड़े रहते हैं । इस पर उनको चोर और अविश्वसनीय समझा जाता हैं । इस कहानी के यथार्थ बोध के दो आयाम हैं । एक आयाम आर्थिक संदर्भ का है और दूसरा आयाम अनैतिक संदर्भ का है ।

§9§ फैसला :-

यह कहानी बयान नामक कहानी-संग्रह की ग्यारवी कहानी है ।

यह कहानी जयकरन और सूरजभान के बीच की कहानी है । जयकरन बहुत दिनों के बाद कलेजी खरीदने आया था । उसी समय इक्के के अड्डे पर सूरजभान लेटा-लेटा मालिश करवा रहा था । जयकरन को देखते ही उसने आवाज दी- "मालिक" । सूरजभान जयकरन के हाल-चाल पूछता है । बाद में हिसाब निपटा ने की बात करता है । जयकरन कहता है जब चाहो तब निपटा लो । सूरज़भान मंगल का दिन तय करते है । और वही भूड़ के मैदान में । उस मंगल की दोपहर को इक्को की खड़खड़ाहट ने खामोशी तोड़ दी थी । सूरजभान के दसों आदमी मैदान में थे । जयकरन अपने आदमी के साथ कुछ देर बाद पहुँचा था । खोड़े खोल दिये गये थे । इक्के तोपों की तरह टिके हुए थे । सबके सब आदमी गोल बनाकर खड़े हो गये । लाठियाँ इक्कों के सहारे टिकी हुई थीं । सब की नज़रें एक-दूसरे में कुछ टटोल रही थीं । जयकरन ने अपने दसों को इशारा किया । दोनों गोल अलग-अलग हो गये थे । सबने लाठियाँ उठा ली थी । "होंशियार" कहने पर सबने हथेलियों को थूक से गीला करके लाठियाँ पकड़ ली थीं । "बोल बजरंगबली की जय" कहके लाठियाँ चमक उठी थी । पांच मिनट में ही सात-आठ रह गये थे । दो के और गिर जाने पर लाठियाँ रुक गई थीं । दोनों गोल के आदमीयों को सबको इक्कों में भर कर अपने अपने रास्ते पर चले गये । सूरजभान को टाँग पर ज्यादा चोट आयी थी । जयकरन उसकी टाँग को सीधी करने में लगा था । दोनों विचार कर रहे थे कि इससे फैसला तो नहीं हुआ । सूरजभान ने कहा

फैसला : गुलाबो पर छोड़ दो । गुलाबो एक वेश्या है और दोनो उसके पास जाते थे । फैसला गुलाबों पर छोड़कर दोनों निश्चिंत सो जाते हैं ।

इस कहानी में फैसला तो होता नहीं किंतु दूसरे पर छोड़ दिया जाता है । इस कहानी में गाँव के पहेलवान व्यक्तियों का वर्णन किया है ।

§10§ आसक्ति :-

यह कहानी बेकार युवकों की गंभीर स्थिति को चित्रित करती है ।

इस कहानी में सुजाता व विनोद दोनों भाई-बहन दोनों एक ही कमरे में रहते हैं । बस्ती के लोग दोनों के बारे में बातें बनाना शुरू कर देते हैं । सुजाता भी आफिस के कुछ गंदे लोगों की हरकतों से परेशान होती है लेकिन विनोद उसे समझाता रहता है कि यह सब तो होता ही रहता है । वह सोचता है कि वह सुजाता से पैसे नहीं लेगा । वह सारा दिन नौकरी के लिए भटकता रहता है । लेकिन निराश होकर घर लौटता है । लोग उसे सुना-सुनाकर बातें करते हैं । उन्हें भाई-बहन के संबंधों पर भी विश्वास नहीं होता । विनोद चाहता है कि सुजाता शादी कर ले । सुजाता को लगता है कि शादी के बाद वह भाई का अधिक ध्यान नहीं रख सकेगी ।

धीरे-धीरे कुछ समय के बाद सुजाता वीरेन्द्र नामक युवक के संपर्क में आई । दोनों के संबंध आगे बढ़ने लगे । वीरेन्द्र को लगा कि वह फालतू की चीज़ बनता जा रहा है । वीरेन्द्र जब भी आता था तब विनोद घर से बाहर चला जाता । उसके लिए यह स्थिति असह्य हो चुकी थी, पर उसे कहीं भी काम नहीं मिल रहा था । एक दिन वीरेन्द्र और सुजाता कोर्ट में जाकर विवाह कर लेते हैं । वीरेन्द्र भी अब सुजाता के घर में रहने लगा । विनोद को अभी तक कहीं नौकरी नहीं मिली थी । अतः वह स्वयं को दोनों पर भार समझता था । वह अपने ही भीतर एक विचित्र अपमान व अलगाव महसूस करता था । उसे अपने ही भीतर अपनी उपेक्षा का अहसास होता रहता था । कुछ दिन बाद बरसात का मौसम आ गया । रात को विनोद गली में सोया था कि वर्षा होने लगी । विनोद ने उपर जाकर

दरवाजा खटखटाया लेकिन वे गहरी नींद में सो रहे थे । अतः उन्होंने दरवाजा नहीं खोला । विनोद रात भर चारपाई पर चादर लपेटे बैठा रहा और भीगता रहा । सुजाता से भाई की यह हालत देखी नहीं गई । वह प्यार व झल्लाहट में कह रही थी कि उसने दरवाजा क्यों नहीं खुलवाया । विनोद उसे समझाजा रहा कि उसने इसके लिए कितनी कोशिश की थी । फिर प्यार से सुजाता ने कहा कि चाय पी लो नहीं तो सर्दी लग जाएगी । विनोद ने चाय के साथ-साथ आँसू भी पीए ।

विनोद वास्तव में बेरोज़गार युवकों का प्रतिनिधित्व कर रहा है । जो विवशता के कारण दूसरों पर बोझ बनकर रहता है । वह अपनी बेकारी के कारण अपने अपमान, उपेक्षा व विवशता को झेलते रहते हैं । भारतीय समाज अभी बहुत परंपरावादी है । इसी कारण पुरुष सत्ता वाले समाज में भाई-बहन के आश्रय पर जी रहा है, तो उसे बहुत घटिया समझा जाता है । लोगों की मानसिकता कितनी गंदी है कि वे उनके भाई-बहन होने पर संदेह करते हैं ।

यह कहानी बेकार युवकों की गंभीर स्थिति को चित्रित करती है । बेकारी के कारण युवक कितनी निराशा से भर गया है । बेकार युवक गलत मूल्यों को अपना लेता है । अपमान सह कर भी उसे जीना पड़ता है और इतना ही नहीं, इस लगातार की बेरोज़गारी ने सिर्फ विनोद को ही नहीं भारतीय युवा समाज के एक बड़े वर्ग को निष्क्रिय बना दिया है और इस निष्क्रियता से वह स्वयं को उबार नहीं पाता । यह स्थिति भारतीय युवा वर्ग के लिए बहुत घातक सिद्ध हो रही है । महानगरीय यथार्थबोध की कहानी में आधुनिकता के कई संदर्भ हैं, जैसे- प्रेम विवाह, महानगरीय अभावग्रस्त मध्यवर्ग, कार्यालयों की जिंदगी, भाई-बहन का रिश्ता, बेकारी और युवकों की मानसिकता, पड़ोस का संदर्भ आदि । इन्हीं संदर्भों से इस कहानी का परिवेश जीवन्त और यथार्थ बना है ।

§11§ रातें :-

इस कहानी में पूँजीवाद की नंगी तस्वीर पेश की गयी है जो अर्थ या पूँजी के बल पर तीन-तीन पीढ़ियों का सौंदर्य खरीद कर भोगने में समर्थ है । इस

कहानी में वेश्याओं का जीवन क्रम अभिव्यक्त हुआ है । शारदाबाई भी वेश्या थी । उसकी बेटी सुंदरीबाई भी वेश्या थी । उसकी बेटी ताराबाई भी वेश्या बनी । यहां तीन पीढ़ियां थीं लेकिन ग्राहक नहीं बदला था । समस्त देश तथा विश्व में शताधिक महत्वपूर्ण घटनाएँ घटती है- "स्वतंत्रता की लड़ाई से लेकर बिहार के भूकंप या जलियाँवाला हत्याकांड से लेकर आजादी तक या अणुबम परीक्षण, द्वितीय विश्वयुद्ध, बाड़ुंग सम्मेलन, वियतनाम की लड़ाई तथा गुजरात की बाढ़ तक, - लेकिन मगनलाल छगनलाल दारुवाला लगातार शारदाबाई, सुंदरीबाई, ताराबाई (माँ, बेटी तथा पोती) के साथ सुहागरात मनाने या उनकी "रातें" खरीद लेने की स्थिति में है । जाहिर है कि उनके क्रांतियों, महत्वपूर्ण घटनाओं, निर्णयों के बावजूद पूंजीवाद के पंजे आज भी विश्व तथा देश में यथावत हैं, उसकी सुविधा या सबलता में कोई परिवर्तन नहीं आया है । इस प्रकार पूँजीपति का विकराल मुँह सब चीजों को अपने में समेटता चलता है । यूँ यह कहानी प्रतीकात्मक नहीं है, पर यदि वेश्या और जनता का प्रतीक मान लिया जाये तो अनायास अनेकों अर्थ खुलने लगते हैं ।

इस कहानी के द्वारा यह भी स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में कभी भी कोई ऐसा कालखण्ड नहीं गुज़रा जब समाज में वेश्या नहीं रही हो । इस वर्ग के अस्तित्व के लिए धनी वर्ग मुख्य रूप से उत्तरदायी है । धनिकों के द्वारा पीढ़ी-दर पीढ़ी नारी का अपनी वासना-पूर्ति में उपयोग सामंती संस्कृति के अवशेषों को सूचित करता है । नारी मुक्ति के इस युग-संदर्भ में वेश्यावृत्ति के सूत्र से बुनी हुई इस कहानी में धनिकों की मानसिक कुरूपता और उनके घिनौने रूप को उद्घाटित किया है ।

(12) <u>अब और नहीं</u> :-

इस कहानी का नायक पत्रकार है । वह शहर के विभिन्न कार्यक्रमों पर रिपोर्ट लिखने के लिए कार्यक्रम देखने जाता है । प्रत्येक रात को देर से ही घर लौटता है । उसकी पत्नी को भी अब आदत हो गई है । उसके बूढ़े पिता भी

उसकी प्रतीक्षा में सड़क की आहटें लेते रहते हैं । आर्थिक स्थिति के कारण वह अपने बूढ़े पिता की आँखों की जांच नहीं करवा पाता । वह चाहता है कि उनके लिए चश्मा बनवा दे । एक दिन उसे आफिस में मनीआर्डर प्राप्त हुआ तथा अपनी पहली प्रेमिका गीता का पत्र भी मिला । उसने पत्र में शिकायत की थी कि वह उसे पत्र क्यों नहीं लिखता । नायक चाहता था कि वह गीता से विवाह कर लें । लेकिन गीता ही यह संबंध बढ़ाने के लिए आगे न बढ़ सकी । उसने सोचा कि इस मनीआर्डर के पैसों से वह कुछ किताबें खरीद कर गीता को भेजे गा तथा कुछ रूपये पिताजी की आँखों की जांच करवाने तथा चश्मा बनवाने पर लग जाएंगे । उसने कुछ किताबें खरीदीं । वह उन किताबों का पार्सल करने डाकखाने पहुंचा था । डाकखाने में ही उसका पुराना दोस्त मिल गया था जिसने आग्रह किया था कि वह उसे शाम को जरूर मिले ।

शेष रूपये जेब में ही पड़े थे तथा वह दोस्त से मिलने पहुंचा । दोस्त ने आग्रह किया था कि कुछ जरूरी खर्चा आ पड़ा है अतः वह रूपये देकर उसकी सहायता कर दे । नायक को उसकी विवशता पर क्रोध आया था । लेकिन उसने रूपये दोस्त को दे दिए तथा वह घर लौट आया । घर लौटकर वह सोच रहा था कि एक बहुत अच्छा दिन गुजरते-गुजरते रह गया ।

महानगरीय जीवन की विसंगतियां यहां बहुत खुल कर सामने आई हैं । सभी आयोजकों को यह विशेष चिंता रहती है कि कहीं पत्रकार कार्यक्रम समाप्त होने से पहले ही न चले जाएं । लगभग यही क्रम प्रतिदिन चलता है और वह रात को कभी भी जल्दी घर नहीं पहुंच पाता ।

उपर से आर्थिक अभाव इतना कष्टकर है कि वेतन में से वह इतने पैसे भी नहीं बचा पाता कि पिता की आँख की जांच करवा सके तथा उनके लिए चश्मा बनवा सके । इस कहानी में आधुनिकता बोध की पहचान के दो सूत्र है- महानगरीय जीवन की यातनाएँ तथा नौकरी-पेशा मध्यविता वर्ग की आर्थिक पीड़ाएं । पिता के लिए भी चश्मा न बनवा पाना आर्थिक विवशता की पराकाष्ठा का जीवन्त अहसास है ।

§13§ मैं :-

यह कहानी पश्चिमीकरण की प्रवृत्ति को यथार्थ के धरातल पर उद्घाटित करती है । इस कहानी का कथासार यह है : एक दिन बहुत ही अभिजात ड्रिंक पार्टी थी । पार्टी में शराब का दौर चल उठा था तब मेजबान ने यह किस्सा सुनाया ।

एक साहब थे । वे किसी पार्टी से लौटे थे । वह हर पार्टी में बहुत शराब पीते थे । प्रायः सभी मेजबानों को उन्हें घर तक पहुंचाने का कष्ट भी करना पड़ता था । वे एक बार ऐसी ही किसी पार्टी में बहुत शराब पीकर घर लौटे । उन्होंने अपने घर की सीढ़ियां चढ़कर दरवाज़े में चाबी लगाई । पुलिस वाला गश्त लगा रहा था । उसे कुछ संदेह हुआ तो वह उनके पास आया । पुलिस वाले ने उन साहब से कहा कि वे अपने घर जाएं । इस पर उन्होंने पुलिस वाले को यकीन दिलवाने के लिए कहा कि यह मेरा ही घर है । उसके एक कमरे में किताबें पड़ी हैं, एक तस्वीर पड़ी है । पुलिस वाले को शरारत सूझी उसने कहा ठीक है दरवाज़ा खोलिए । दरवाज़ा खुल गया । कमरा देखकर उसने मज़ाक किया कि यह तस्वीर चोरी की है । साहब ने और सबूत देने के लिए कहा कि वह एक और सबूत दे रहा है । यह कहकर उसने अपने शयन कक्ष का दरवाज़ा खोला और कहा कि वह मेरी बीबी है । परंतु पुलिस वाले ने कहा कि वह तो ठीक है पर साथ सोया हुआ आदमी कौन है । शराब में धुत उन साहब ने जवाब दिया कि वह मैं ही हूँ ।

इस कहानी में पुरुष वर्ग अपने मद में व्यस्त दिखाया गया है । शराब पीना उच्च स्तर का फैशन बन गया है । नारी भी नैतिकता का आवरण उतारकर फैंक चुकी है । इस प्रकार इस कहानी में महानगरीय बोध के साथ-साथ अनैतिक यौन संबंधों तथा अभिजात वर्ग में आगत पश्चिमी करण की प्रवृत्ति को यथार्थ के धरातल पर उदघाटित किया गया है ।

§14§ <u>लहर लौट गई</u> :-

इस कहानी में मध्यवित्त वर्ग की मानसिकता को प्रकट किया है । यह इस संग्रह की चौदहवीं कहानी है । इसका कथासार यह है : सविता एक

मध्यवर्गीय परिवार की बेटी थी । उसके तीन भाई थे और एक संबंधी का बेटा कैलाश भी उनके घर में ही रहता था । सविता के पिता को आशा थी कि बेटों के दहेज में मिले धन से सविता का विवाह हो जाएगा । लेकिन एक बेटा शादी के बाद अलग हो गया दूसरा घर जमाई बन गया । तीसरी बहू के माँ-बाप ने दहेज का पैसा अपनी लड़की के नाम बैंक में डाल दिया । कैलाश भी तीसरे भाई की शादी में आया था । उसकी पत्नी और बेटी भी उसके साथ आई थी । विवाह की रेलपेल के कारण सविता की माँ कैलाश से खुलकर बात भी नहीं कर पाई । आज वह भी जाने वाला था । सविता की माँ कैलाश की बहू को मुहल्ले में मिलवाने ले गई थी । कैलाश ने सविता से पूछा कि उसने अपनी क्या हालत बना रखी है । कैलाश ने यह भी पूछा कि उसने अपने विवाह के लिए अभी तक किसी को पसंद क्यों नहीं किया । सविता को हैरानी हुई कि कैलाश क्या कह रहा है । तब कैलाश ने बताया कि जब उसने बारह वर्ष पहले सविता के पिता से उसका हाथ माँगा था तब तो शायद सविता ने उसे नापसंद कर दिया था । सविता यह सुन कर उदास हो गई । लेकिन अब इन बातों से क्या फायदा था । कैलाश और उसकी पत्नी वापस चले गए । लेकिन सविता सोचती रह गई कि कितना अच्छा होता यदि बारह साल पहले ही कैलाश ने सविता से बात पूछी होती तो उसके जीवन की तसवीर ही कुछ और होती और वह अब तक अविवाहित न होती ।

इस कहानी में विवाह, दहेज आदि के संदर्भ में समकालीन यथार्थ को अभिव्यक्त किया है । इस कहानी का नाभिकेंद्र अलगाव है, जिसे असफल प्रेम और अनब्याहे रह गए व्यक्ति के जीवन से जोड़कर पेश किया गया है । लड़की का ब्याह अपने भाईयों पर आश्रित रहता है । सविता के पिता को आशा थी कि बेटों के दहेज में मिले धन से सविता का विवाह हो जाएगा किंतु ऐसा नहीं हुआ । यह एक मध्यमवर्ग में जन्म लेने वाली हरेक पुत्री की कहानी है ।

﴾15﴿ अपना एकांत :-

इस कहानी में "अपने भीतर ही भीतर पूर्ण होते रहने की प्रक्रिया" में निरन्तर अकेले होते आदमी की यातना गूंजती है । इस कहानी का "लोकेल" बम्बई

है- जहां सागर जितना फैला और चौपाटी की शाम जितनी सुहागन है, आम आदमी की जिन्दगी में उतना ही संकोच, अँधेरा और दुर्भाग्य है । कहानी खासे रूमानी ढंग से शुरू होती है ।

इस कहानी में नायक का एक मित्र था । उसका नाम था सोम । वह लखनऊ का रहने वाला था किन्तु बम्बई में बस गया था । सोम का परिचय बंबई की रहने वाली हंसा से हुआ । हंसा कॉलेज में व्याख्याता थी । वह सोम से कई बार मिलने आती थी । हंसा ने विवाह कर लिया था लेकिन उसने सोम को नहीं बताया था । फिर भी सोम को इस बात का अनुमान लग गया था । हंसा जब भी सोम से मिलने आती, तब वह मंगलसूत्र पहनकर नहीं आती थी । लेकिन हंसा से विवाह के बारे में न तो सोम न कभी पूछा और न ही हंसा ने बताया । एक दिन अचानक सोम की एक कार से दुर्घटना हो गई । वह घटना स्थल पर ही कराहता रहा । बहुत मुश्किल से वह अपने आपको अस्पताल तक लाया । उसकी हालत बहुत ही नाजुक थी । जब तक डाक्टर आपरेशन के लिए आए, उसने दम तोड़ दिया था । उसकी लाश लेने भी कोई नहीं पहुंचा । अतः शवदागृह के आदमी ने उसका अंतिम संस्कार किया ।

सोम की मृत्यु के बाद एक दिन सोम का मित्र चौपाटी पर घूम रहा था । वहीं उसे हंसा मिल गई थी । सोम के मित्र ने हंसा को बताया कि सोम नहीं रहा । हंसा को यह सुनकर गहरा धक्का लगा । हंसा ने सोम के मित्र से सब कुछ पूछा कि यह हादसा कैसे हुआ था । हादसे के बारे में सुनकर वह बहुत खामोश व उदास हो गई थी । चौपाटी से वापिस जाते समय उसने अपना पर्स खोला और एक माला सी समुद्र में फेंक दी । नायक ने अनुमान लगाया कि वह माला जैसी वस्तु मंगलसूत्र के अतिरिक्त और क्या हो सकती है ।

इस कहानी में व्यक्ति की भावना और संवेदना की मौत हो गयी है । इस मौत के लिए कौन जिम्मेदार है ? क्या कहीं ऊपरी सतह की भागमभाग और रोजमर्रा की जद्दोजहद ने हमारे भीतरी मानवीय एहसास का गला तो नहीं घोंट दिया है ? सोम अपरिचित की तरह क्यों जीना चाहता है ? क्यों "जीलेना"

उसके लिए सबसे बड़ा काम लगता है ? फिर एक छोटे-से हादसे से सब कुछ खत्म हो जाता है । यहां तक यह कहानी भी खासी मामूली लगती है । लेकिन फिर अन्तिम मोड़ में सोम की लाश की शिनाख्त में भटकता कहानी का "मैं", जिन-जिन स्थितियों से गुजरता है वे फिर एक भयावह फैण्टेसी की तरह लगती हैं- शव का उठकर चलना, उसका श्मशान के दफ्तर में आना आदि । कहानी में बाहरी और भीतरी, सामाजिक और वैयक्तिक दुनिया में खासा अन्तर्विरोध है ।

महानगरीय जीवन में दूरियां तथा समय की कमी व्यक्ति के जीवन को अस्त-व्यस्त बनाकर रख देती है । महानगर में साधारण व्यक्ति कितनी गुमनामी व असुविधा का जीवन जीता है ।

§16§ <u>फटे पाल की नाव :-</u>

इस कहानी में थोथे और निरर्थक सिद्धांतों और कर्म-कांडों की खिल्ली उड़ाई गई है । इसका कथासार यह है : सदाशिव नामक व्यक्ति गांधीजी के आग्रह पर स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में कूद पड़े थे । अपनी युवावस्था में सदानंद स्वयं में एक उदाहरण बन गए थे । उनका शरीर गठा हुआ था । उनके व्यक्तित्त्व में एक भयानक आकर्षण था । उन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन किया था । यह नियम ही उनकी संपूर्ण शक्ति का स्त्रोत था । अब सदाशिव की महत्ता कम हो गई थी । भारत आज़ाद हो गया था । अब उनकी शक्ति व क्षमता आज़ादी मिल जाने के कारण उनके जीवन की महत्ता जाग उठी थी । आज़ादी के लिए काम करना ही उनके जीवन का उद्देश्य था । उनका एक बेटा था । उसका नाम ब्रह्मानंद रखा । वह सब को ब्रह्मचर्य का उपदेश देते थे । इसी ब्रह्मचर्य व्रत के कारण ही वह अपने पुत्र का विवाह भी शीघ्र नहीं करना चाहते थे, उनकी पत्नी यह इच्छा लेकर ही स्वर्ग सिधार गई थीं । उन्होंने अपनी पत्नी की इच्छा पूर्ण करने के लिए ब्रह्मानंद का विवाह कर दिया था । इसी कारण वह हर वक्त सदानंद को ब्रह्मचर्य का उपदेश पिलाते रहते थे । ब्रह्मानंद अपने पिता को संतुष्ट रखने के लिए बड़े जोश से अपने काम में लगा रहता ।

एक दिन अचानक सदानंद का सारा विश्वास टूट गया । उन्हें लगा कि बहू गर्भवती है । उनके मर्म पर आघात हुआ था । सदानंद जी बहू को उसके मायके छोड़ आए । थोड़े दिन बाद सदानंद ने भी गेरूए वस्त्र धारण कर लिए । सदानंद के बेटे ने ही उनका विश्वास तोड़ दिया था और वह बहुत गुस्से हो गए थे । उसके पिता ने उसकी एक भी बात नहीं सुनी और वे घर छोड़ कर चले गए । पिता का गृहत्याग उससे सहा नहीं गया और वह अखंड ब्रह्मचर्य का व्रत ले लेता है । और वैद्यजी की दवाइयां कूटता हुआ अपनी जवानी होम कर देता है ।

इस कहानी में पुराने मूल्यों में आगत, बदलाव, प्राचीन रूढियों की निस्सारता, बाल-विवाह की कुप्रथा तथा दमन के दुष्प्रभावों से अभिव्यक्त असामान्य जीवन की विसंगतियों को इस कहानी में प्रकट किया गया है ।

"फैसला", "फटे पाल की नाव", "अजनबी" के संदर्भ में डॉ॰ विनय का यह कथन द्रष्टव्य है : "उनमें अनुभव की सघनता और कलात्मक रचाव की उपेक्षाकृत कमी है, साथ ही अर्थ के संप्रेषण की समस्या भी । ऐसा लगता है कि इनकी रचना के समय कलम लेखक के बाएं हाथ में रही हो ।"§1§

§17§ <u>लड़ाई</u> :-

यह कहानी साप्ताहिक हिन्दुस्तान 12 मई, 1966 में छपी थी । लडाई की दुनिया यही है । सीमा पर लड़ाई होती है । आदमी की कीमत वहाँ कुछ गोलियों से अधिक नहीं है । औसतन तीस हजार गोलियाँ । याने कि वह सिर्फ आँकड़ा होकर रह गया है । उसकी मौत से दुनिया समझदार तो खैर क्या होगी, वह जरूर छोटा, बेकार और "कुछ नहीं" होकर रह जाता है ।

कहानी के नायक फौजी डॉक्टर को अभी पता नहीं चला था कि उसकी रेजीमेंट किस मोर्चे पर लड़ रही है तथा उसे कहां भेजा जा रहा है । कुछ लड़कियां देश के फौजियों के लिए काम कर रही थीं । फौजियों की तरफ से पत्र लिखकर उनके संबंधियों को भेज रही थीं । नायक सोचने लगा कि ये लड़कियां मौत के मुंह में

---

§1§ समकालीन कहानी : समांतर कहानी - पृष्ठ-30.

पड़े लोगों में कैसे विश्वास भर रही हैं । नायक को उसकी रेजीमेंट में भेज दिया गया । वह मोर्चे पर युद्ध में घायल सिपाहियों की देखभाल करता था । जब किसी मृत फौजी को देखता तो उसको यही खयाल आता कि यदि इस फौजी का खत उस लड़की ने लिखा होगा तो वह क्या उत्तर देगी । नायक सोचता रह गया कि उस लड़की ने यह जिम्मेवारी क्यों ली होगी । जिम्मेदारी की धारणा से ही उसे घबराहट होने लगती । इसका कारण था कि वह अपने दो भाइयों में बीच के नंबर पर है । उनके एक बड़े भाई मन्त्री हैं : निर्माण मन्त्री और इसीलिए छोटा ठेकेदार है । दोनों भाई जनता की सेवा करते हैं । जनता की सेवा करेके ही दोनों भाइयों ने बहुत यश कमाया था । बीच के इस आदमी को मध्यवर्ग का आदमी समझ सकते हैं । उसने एक लड़ाई लड़ी थी लेकिन उसके बाद उसने देखा कि सब-कुछ बदल गया है । अब वह जो लड़ाई लड़ रहा है वह अघोषित है और कहीं अपने ही भाइयों से है, इसीलिए यह लड़ाई अधिक निर्णायक और जानलेवा है । बड़े भाई निर्माण मंत्री ने शहर के खज़ाने को पुख्ता करने की मांग उठाई थी और उस प्रस्ताव को समर्थन प्राप्त हुआ । बड़े और छोटे भाई मिलकर षड्यन्त्र करते हैं और खजाना खाली होता जाता है । लुटेरे पहचाने नहीं जाते, उन्होंने जिम्मेदारी और जनसेवा का मुखौटा जो लगा लिया है और चारों ओर, सैंकड़ों की तादाद में उनसे मिलते-जुलते लोग पैदा हो रहे हैं । आप किसे पकड़ेंगे ? कौन कह सकता है कि सरकारी खजाना लूटने वाला कौन है ? आप किसे भाई कहेंगे और किसे दुश्मन ? अधिकारियों ने चोर को पकड ने के लिए खज़ाने में जाल बिछा दिया, ताकि जो भी आए, वह उस जाल में फंस जाए । रात को जाल बिछा दिया गया । छोटा भाई बाहर पहरा देता रहा और बड़ा भाई भीतर चोरी करने पहुंचा । भीतर जाते ही वह जाल में फंस गया । उसने सोचा कि सुबह जब पकड़ा जायेगा तब अपमान होगा । उसने छोटे भाई को सलाह दी कि वह उसका सिर काट ले ताकि पता न चले । छोटे भाई ने सुझाव दिया कि सिर काटने की आवश्यकता नहीं है बल्कि कल तक वह उसकी शक्ल जैसे सैंकड़ों आदमी पैदा कर देगा और ऐसे में पता नहीं चलेगा कि वास्तविक चोर कौन है ? डॉक्टर जब आया तब वह अपने भाईयों को भी पहचान नहीं पाता ।

इस कहानी में सामाजिक भ्रष्टाचार का चित्रण किया गया है । मंत्री लोग सत्ता का कितना दुरुपयोग करते हैं यह स्पष्ट रूप से पता चलता है । अन्य योग्य लोगों को वह अवसर प्राप्त नहीं होता । रातों-रात ठेकेदार बन जाने का प्रसंग भाई भतीजावाद को उजागर करता है । आर्थिक अपराध और भ्रष्टाचार का कच्चा चिट्ठा इस कहानी में खोला गया है । हमारी शासन-व्यवस्था पर इसमें करारी चोट की गई है तथा हमारे शासन-तंत्र की विद्रूपता को उजागर किया गया है । वस्तुतः आज जैसे हवा के बगैर साँस लेना कठिन है, वैसे ही "भ्रष्टाचार" हमारे खून में रच-बस गया है ।

आप गौर करें तो यह "लड़ाई" फिर व्यवस्था से है । उलझन भरी है । इसकी तुलना में युद्ध के मैदान का खतरा कहीं कम है । युद्ध में दुश्मन आमने-सामने होता है पर यहाँ तो सब कुछ गडमड और अनिर्णीत है ।

§18§ <u>अजनबी</u> :-

इस कहानी में बताया गया है कि बम्बई जैसे बड़े शहर में यदि कोई व्यक्ति किसी का अधूरा पता लेकर पहुंच जाए तो उसे कितनी दिक्कतें उठानी पड़ती है ।

इस कहानी का नायक बेरोज़गार था । उसके एक मित्र ने बम्बई में रहने वाले एक मित्र बतरा के माध्यम से उसकी नौकरी का प्रबंध किया था । बतरा ने भी पत्र लिखकर उसे बुलाया था । नायक जब बम्बई पहुंचा तो वह इमारतों का ठेका लेने वाले बतरा को ढूंढने निकला । एक स्थान पर बहुत सारी उंची इमारतें बन रही थी । बतरा का पता पूछने के लिए उसने एक झोपड़ी का द्वारा खटखटाया । एक मज़दूरनी तथा मज़दूर उसमें रहते थे । बहुत खोजने पर भी बतरा का पता नहीं चला । रात हो रही थी । मजदूर दंपत्ति ने उसे सहारा दिया और उसे कच्ची शराब भी पिलाई । साथ ही साथ वह अपने जीवन के बारे में भी बताते रहे । जहां-जहां इमारते बनती हैं वहीं उन्हें जाना पड़ता है तथा वहीं वे लोग अपना घर बना लेते हैं । फिर जब काम खत्म हो जाता है तब वह लोग आगे बढ़ जाते हैं । रात बहुत हो चुकी थी । मज़दूर दंपत्ति ने उसे वहीं सो जाने को कह दिया और स्वयं भी वे दोनों निश्चिंत होकर सो गए ।

कहानी बहुत ही साधारण और बचकानी सी लगती है । कहानी में महानगरीय जीवन की विद्रूपता धनी और निर्धन वर्ग की अजनबीयत को भी रेखांकित करते हुए नगरीकरण के दुष्प्रभावों और युवकों की बेरोजगारी और असहाय दशा को चित्रित किया गया है ।

§19§ दुनिया बहुत बड़ी है :-

इस कहानी की नायिका अन्नपूर्णा के गांव में पहली बार डाकखाना खुला था । सालिगराम वहां के डाकबाबू बनकर आए थे । डाक से गांव के लोगों को अपने दूर के संबंधियों से समाचार प्राप्त हो जाते थे । अन्नपूर्णा भी डाकबाबू से [illegible] अपने भाई के लिए पत्र लिखवाती थी । धीरे-धीरे दोनों निकट आ गए । एक दिन बहुत साहसिक कदम उठाकर दोनों ने आर्य समाज मंदिर जाकर ब्याह रचा लिया था । गांव के लोगों ने इस बात का बहुत विरोध किया । अंततः सालिगराम को नौकरी छोड़ कर अपने गांव वापस जाना पड़ा । वहां ससुराल में भी किसी ने उसे नहीं अपनाया । बाबू सालिगराम ने एक दुकान खोल ली थी । उसी से उसका खर्चा चलता था । शादी के दसवें वर्ष में सालिगराम का देहांत हो गया था । तब से तीस बरस बीत जाने पर भी अन्नपूर्णा को परिवार वालों का स्नेह नहीं मिल पाया था । सभी उससे सदैव उपेक्षापूर्ण व्यवहार करते थे । वह बीमार हो जाती थी तो उसकी देखभाल करना सबको झंझट जैसा लगता था । उसके परिवार के लोग उसे अस्पताल में भर्ती करवाकर निश्चिंत हो जाते । कोई खबर तक लेने नहीं आता था । वह अपने घर न जाकर अपने गांव गई । जब उसके घर के पास पहुची तो घर खण्डहर में बदल चुका था । उसने अपने गांव के भाई के बेटे को पहचान लिया । वह एक रात घर रही । भतीजे के पूछने पर वह शाम की गाड़ी से वापस चली आई थी । वह घर नहीं जाना चाहती थी । वह सोच में पड़ गई कि यदि घर भी न जाए तो फिर कहां जाए । वह घर के किसी सदस्य की इंतजार में स्टेशन पर बैठी रह गई ।

इस कहानी की मूल संवेदना एक विद्रोही नारी के अकेलेपन का चित्रण करती है । उसे बुढ़ापे में कहीं आश्रय प्राप्त नहीं हो पाया । आज यह स्थितियां अपरिहार्य बन गई हैं । अलगाव होते हुए संबंधों से उत्पन्न अकेलापन आज की त्रासदी का ऐसा यथार्थ है, जो बहुत ही कलात्मकता के साथ इस कहानी में प्रकट हुआ है ।

§20§ उस रात वह मुझे बीच कैण्डी पर मिली थी और ताज्जुब की बात यह है कि दूसरी सुबह सूरज पश्चिम में निकला था :-

यह कहानी कमलेश्वर की एक बहु चर्चित कहानी है । सर्व प्रथम जब यह कहानी "धर्मयुग" §16 अगस्त, 1970 ई• § में प्रकाशित हुई थी उसका शीर्षक यही था जो "बयान" में दिया गया है : यह शीर्षक चौंकाता है, कितना सुदीर्घ, तीन छोटी पंक्तियों में अंटने वाला ।

लेखक ने रात के सन्नाटे में बम्बई के समुद्र के किनारे बैठकर उस वाताबरण का चित्र खींचा है । समुद्र के किनारे बैठकर पास की विशाल इमारतों और उसकी खिड़कियां, दरवाज़े जो एक विशेष वातावरण की रचना को निहारते हैं । लेखक की दृष्टि हर तरफ जाती है किंतु कहीं भी ठहर नहीं पाती । बारिश के दिन में बारिश शुरू हो गई है । बारिश के बूंदा-बांदी में झीना- झीना सब कुछ नजर आ रहा है । रात के अंधेरे में मकान लंगर डाले हुए विशाल जहाज की तरह लग रहे हैं । इन मकानों से छन कर रोशनी ऐसे आ रही थी, मानो दूधिया धूल ही हो ।

बीच कैंडी की खाली पड़ी बेंचे आइस्क्रीम की तरह चमक रही थी । संपूर्ण वातावरण में एक अजीब सी खामोशी थी । इसी समय एक टैक्सी अचानक समुद्र के किनारे आकर रुक गयी । उसके रुकने की पद्धति से स्पष्ट था कि वह इस स्थान पर अचानक रोकी गई है । टैक्सी के रुकते ही एक दरवाज़ा खुला और एक आदमी बरसाती ओढ़े हुए उसमें से निकला । उसके बाद एक औरत निकली । जहां पर वे एक थे, वहां न कोई मकान था न होटल । समुद्र के किनारे एकदम अकेले इतनी रात में उस पुरुष व स्त्री का वहां उतरना संशयास्पद ही था । पुरुष व स्त्री को इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी । शायद उन दोनों को कहीं और जाना था पर वे वहीं उतर गए थे । आसपास का वातावरण खामोशी से भरा रहता था । आदमी और औरत किनारे पर पड़े एक बैंच पर बैठ गए । वे दोनों समुद्र को देखते रहे । तभी थोडी दूरी पर समुद्र में तीन नावें किनारे आ लगी । बारिश अब भी हो रही थी और वे दोनों अभी भी बैठे भीग रहे थे । नावें किनारे पर आ लगी । एक नांव में से कुछ उतारा जा रहा था । वह एक औरत की लाश थी । नाव में

से उतरते ही लोग खामोश होकर पुतले की तरह काम कर रहे थे । उस समय भी पुरुष और स्त्री शांत बैठे हुए थे ।

कमलेश्वर के अतिरिक्त यदि किसी अन्य नए लेखक ने अपनी किसी कहानी को यह शीर्षक दिया होता तो कदाचित वह कहानी प्रकाशन का अवसर नहीं पाती । कहानी का शीर्षक वक्तव्य ﴾स्टेट मेंट﴿ जैसा हो गया है । चन्द्र प्रकाश पाण्डेय ने ""वह का पत्र कमलेश्वर के नाम" शीर्षक लेख में इस कहानी को एक स्टंट मात्र माना जिसमें कहानीकार ने यह स्पष्ट करने ﴾या दिखावा करने﴿ का प्रयास किया कि उनकी कला का सूरज एक नई दिशा से ही उगा है ।"﴾1﴿ कहानी के साथ "धर्मयुग" संपादक की टिप्पणी ने इस खुशफहमी को बढ़ावा देने का आधार दिया । किंतु कहानीकार कहानी में कुछ कहने के बजाय चौंकाना चाहता है । इसलिए हमारी दृष्टि में यह एक अत्यंत सामान्य-सी कहानी है । डॉ॰ विश्वम्भरनाथ उपाध्याय भी इस कहानी के संबंध में ऐसा ही सोचते हैं : "कमलेश्वर की प्रतिभा रेखाचित्रात्मक है, अतः यह कहानी भी दृश्य रेखाचित्र बनकर रह जाती है । कहानी बनाने के लिए लेखक को या तो अपने अनुचिंतन का विस्तार करना चाहिए था अथवा पात्र के सोच को फैलाव देना चाहिए था, पर ऐसा नहीं हो सका ।"﴾2﴿

- -

﴾1﴿ "द्रष्टव्य" तटस्थ अंक 6 फरवरी 1971.

﴾2﴿ समकालीन सिद्धांत और साहित्य पृ॰ 218.

§3§ <u>श्रेष्ठ कहानियाँ</u> :-

इस संग्रह की कहानियों में जीवन की विसंगतियों का कटु यथार्थ चित्रित हुआ है । इस संग्रह में वैचारिक क्रांति का सूत्रपात हुआ है । विभाजन की विभिषिका तथा राजनीति के स्वार्थ व्यैक्तिक चेतना जागृत करते हैं । श्रमिक वर्ग की स्थितियों का यथार्थ चित्रण किया गया है । दांपत्य संबंधों का चित्रण किया गया है :-

§1§ इतने अच्छे दिन
§2§ हवा है, हवा की आवाज नहीं है
§3§ कितने पाकिस्तान
§4§ मानसरोवर के हंस
§5§ जार्ज पंचम की नाक
§6§ आधी दुनिया
§7§ साँप
§8§ लड़ाई
§9§ तलाश
§10§ उपर उठता हुआ मकान
§11§ नागमणि
§12§ लाश
§13§ या कुछ और
§14§ जोखिम
§15§ बयान
§16§ रातें

§1§ इतने अच्छे दिन :-

यह कहानी अकाल और सूखाग्रस्त क्षेत्र के जीवन का "कटु" भयावह और त्रासद यथार्थ है ।

बाला और कमली भाई-बहन थे । बाला चीनी की मिलों के लिए हड्डियाँ जुटाता था । चंद्र हड्डियां तौलता था । वह कमली से प्रेम भी करता था । तथा उससे विवाह करके घर बसाना चाहता था । अचानक अकाल पड़ गया । कब्रों से हड्डियां निकाल कर बेचने के अतिरिक्त जीविका चलाने के अतिरिक्त कोई उपाय भी नहीं बचा । तब हड्डियों के पीछे लडाइयां होने लगी थीं । "बाला" जब कोई भी काम नहीं पाता है तो पेट की आग उसे हड्डियों का व्यापारी बना देती है । अचानक उसके लिए रिश्तेदारों और ढोर-ढँगरों §पशुओं§ की हड्डियां बहुत मूल्यवान बन जाती हैं । स्थितियों पर कितना क्रूर व्यंग्य है कि जीवित से अधिक मृतक, मृतकों को शव से अधिक उनकी हड्डियां अधिक मूल्यवान बन जाती है । इसीलिए बाला कमला को हड्डियों की रखवाली पर छोड़ गया था । उसी दिन रात को बंत्तासिंह ट्रक ड्राइवर कमला को उठा ले जाता है । बाला सोचता कि यह सब ठीक ही हुआ नहीं तो इतने अच्छे दिन कहां से आते । बाला के मां-बाप, दादा-दादी सब मर गए । कमली ने वहां देह व्यापार आरंभ कर दिया था । कमली भी चार-पांच रुपये बना लेती है । एक-सवा रुपया बोरे भर हड्डियों का मिल जाता है । बाला इस स्थिति से बहुत तुष्ट और तृप्त है । धीरे-धीरे हड्डियां समाप्त होती जा रही थी । अंतत: वह दादी की हड्डियों का पिंजर ही बोरे में भर कर ले आया था । बोरा उसके सिरहाने ही रखा था । बोरे से बहुत दुर्गंध आ रही थीं । इसके कारण बाला को नींद नहीं आ रही थी । वह चाहता था कि उठकर कमली को बता दें कि बोरे में दादी की हड्डियां है । लेकिन कमली बस्ती के लाला के साथ सो रही थी । कमली को जब पता चला कि बाला दादी की हड्डियां लाया है तब कमली ने बाला से कहा कि वह दादी की हड्डियां नदी पर जाकर पानी में सिरा दे । उसने कहा कि बुरे दिन होते तब तो और बात थी, तब वह चाहे गोदाम में ही दे आता । बाला को भी बात पसंद आई थी और उसने हड्डियां नदी में सिरा दी थी ।

"इतने अच्छे दिन" कहानी हमारी समाज व्यवस्था और अर्थतंत्र पर जबरजस्त प्रहार करती हुई अकाल और सूखाग्रस्त क्षेत्र में भूख द्वारा मानवमूल्यों के लील लिए जाने का यथार्थ चित्रित करती है ।

इस कहानी में यह भी स्पष्ट किया गया है कि अकाल में सरकार की योजनाएं किस प्रकार केंचुए की गति से रेंग-रेंग कर आगे बढ़ती हैं । योजनाएं बनती है और कागज़ पर ही रह जाती हैं । आधुनिक प्रशासन तंत्र के खोखलेपन की पोल भी इसमें खोली गई है ।

इसके अतिरिक्त हमारे समाज का आर्थिक वर्ग-वैषम्य भी सामने आया है । अच्छी जाति के लोग समृद्ध है । अकाल भी पड़े तो भी, उन्हें कठिनाई नहीं होती, "अकाल तो हम लोगों के लिए पड़ता है, बाकी सबके पास तो वरसों के लिए दाना है ।"﴾1﴿ यदि इस सारे चिंतन का फलक अकाल न होकर समृद्धि होता, तो ये सारी बातें निंदनीय लगती । परंतु विसंगति पूर्ण जीवन में कम त्रासद घटनाओं ने भी जीवन को अर्थ दिया । इस कहानी की आधुनिकता के मूल में यही संवेदना है ।

﴾2﴿ <u>हवा है हवा की आवाज नहीं है :-</u>

इसका नायक स्विज़रलैंड के एक कम्यून में रह रहा है । कम्यून में दस लोग रह रहे हैं - चार लड़कियां मारियाने, रीथ, मार्टी, एनीलिज़े और छः लड़के हयूबन्ट, जार्ज, पियरे, एलबर्ट, कोरे और वरगान । लेखक इन दस लोगों के साथ रह रहा है । लेखक ने जेनेवा में एक भाषण दिया, उस भाषण में उसने बंगला देश की क्रांति की बात की थी । पुलिस को ये सब बातें खतरनाक लगी थीं । पुलिस का कहना था कि बंगला देश की क्रांति के माध्यम से यहां की सरकार के खिलाफ बात की गई है । इसलिए पुलिस ने कहा कि नायक को रातों रात फ्रांस की सीमा पर छोड़ दिया जाए । मरियाने यही बताने के लिए नायक के पास आई थी । उसने नायक को बताया कि पुलिस का सार्जेंट उसे मिलने आ रहा है । मरियाने ने उसे यह भी बताया था कि पियरे का मामला भी बहुत गंभीर है । पियरे ने मिलिटरी

﴾1﴿ कमलेश्वर "श्रेष्ठ कहानियां" - "इतने अच्छे दिन" - पृष्ठ-1.

ट्रेनिंग पर जाने से साफ इंकार कर दिया था । थोड़ी देर में सार्जेंट आ गया । सार्जेंट ने नायक से कुछ नहीं कहा । थोड़ी देर बाद ही सार्जेंट और लोगों से बातें करने लगा । नायक ने देखा कि पियरे चिल्ला रहा था । मार्टी ने नायक को बताया कि पियरे इस बात के लिए ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा है कि वह कंपलसरी मिलटरी ट्रेनिंग के लिए क्यों नहीं जाना चाहता । उसके बाद खाना शुरू हो गया । उस खाने के दौरान सार्जेन्ट ने नायक से कहा कि उसने जेनेवा मीटिंग में जो कुछ भी कहा था वह सच है तथा वह उससे सहमत है । लेकिन सार्जेंट ने बताया कि वह पुलिस में है इसलिए वह खुलकर विद्रोह नहीं कर सकता । सार्जेंट ने रात को वापस जाते समय नायक से कहा था कि वह आराम से उसके देश में रह सकता है । जब खतरा होगा तो वह स्वयं नायक को फ्रांस की सीमा तक छोड़ आएगा । वह जाते-जाते यह भी कह गया कि पियरे को समझाया जाए कि वह कम्पलसरी मिलटरी ट्रेनिंग पर चला जाए । उसने समझाते हुए कहा कि मजबूरियों को तोड़ने का वक्त भी आएगा । सब चले गए थे । सुबह हुई तो पियरे की कार वहाँ नहीं थी । पियरे ब्लैक बोर्ड पर "गुड़ बाई" कह कर चला गया था । पता नहीं वह कहाँ चला गया था ट्रेनिंग पर गया था या ट्रेनिंग से बचने के लिए कहीं भाग गया था ।

यह कहानी विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में बसे विभिन्न जातियों के मनुष्यों की मानसिकता का चित्रण करती है । सारे विश्व के विभिन्न सत्ताधारी दल अपने ही मद में चूर हैं । कानून बनाकर आर्मी ट्रेनिंग जरूरी बना दी गई है । लेकिन पियरे कहता है- "इस सड़ी हुई मुनाफाखोर और जंगखोर सोसायटी के लिए आर्मी ट्रेनिंग लेने से इंकार करता हूँ ।"(1) यह विद्रोह व जागृति अपनी जगह है चाहे वह अमेरिका है या भारतवर्ष । इस कहानी की आधुनिकता बहुत सशक्त रूप में तब प्रकट होती है जब पियरे अनिवार्य मिलिट्री ट्रेनिंग न लेने की सजा की परवाह नहीं करता । इसी प्रकार यदि विश्व के प्रत्येक कोने में जागृति आ जाए तो विश्व-समाज में क्रांति लाना कठिन काम नहीं है । इस कहानी में एक ओर व्यवस्था की जकड़ दिखाई गई है, जिसमें मनुष्य को क्रांति की बात करने तक की छूट नहीं है, दूसरी ओर कसमकाती हुई क्रांतिकारी शक्तियों को प्रदर्शित किया गया है । इन दोनों के बीच की स्थिति इस कहानी में प्रकट हुई है । कहानीकार की सहानुभूति क्रांति के पक्ष में हैं ।

---

(1) कमलेश्वर : पूर्वोक्त - पृष्ठ-15.

§3§ कितने पाकिस्तान :-

इस कहानी में मानवीय रिश्तों के टूटने और बिखरने को बहुत अच्छी तरह व्यक्त किया गया है । भारत-पाक विभाजन की पृष्ठभूमि पर लिखी कमलेश्वर की एक अच्छी कहानी है ।

बन्नो और मंगल बचपन के साथी थे । बन्नो मुसलमान थी और मंगल हिंदू था । उन्हीं दिनों पाकिस्तान बनने का आंदोलन चला । मार-काट शुरू हुई और हिंदू-मुसलमान एक दूसरे के बैरी बन गए । बन्नो और मंगल की मित्रता को आधार बनाकर दंगा भड़काने की धमकियां दी जाने लगी । मंगल के दादाजी ने इसी भय से मंगल को बंबई भेज दिया । मंगल को पूना में नौकरी मिल गई थी । कुछ दिनों बाद उसके दादा भी भिवण्डी आ गए थे । बन्नों के पिता व मंगल के दादा की गहरी दोस्ती थी । मंगल के पिता को भी भिवण्डी के स्कूल में जगह मिल गई थी, अतः वह भी वहां आ गया । बन्नों की शादी मुनीर नामक युवक से हो गई थी । मंगल भिवण्डी आकर अपने दादा का पता पूछकर घर पहुंचा तो बन्नो के पिता मिले । उन्होंने बताया कि भिवण्डी में भी हिंदू-मुसलमान का दंगा हो गया था और उस दंगल में मंगल के दादा ने ही उसे बचाया था । मंगल के दादा की एक बाजू कट गई थी और वे चुनार चले गए थे । उसने मंगल को दादा के घर की चाबी दी, पर मंगल रात भर ठीक से सो भी नहीं पाया । वह बन्नों के बारे में जानने को उत्सुक था । उसने अपना बिस्तर छत पर बिछा लिया । उसने अचानक नीचे आंगन में झांक कर देखा तो पाया कि एक स्त्री बेहोशी की हालत में नंगी पड़ी है । उसका पति तब भी मारता जा रहा था । वह यह दृश्य देखकर हैरान रह गया । दूसरे दिन बन्नो के पिता ने बताया कि दंगे के तीन दिन पहले बन्नो ने एक बच्चे को जन्म दिया था । दंगों ने घर में भी आग लगा दी थी । जान बचाने के लिए बच्चे को दूसरी मंजिल से फेंका गया । बन्नो का बच्चा गली में गिर कर मर गया । इसी कारण बन्नों की हालत काफी खराब हो गई थी । मंगल वहां ज्यादा दिन नहीं रूक सका । वह वापस बंबई चला गया ।

पांच महीने बाद वह अपने मित्र के पास बंबई आया । ताकि मन बहल जाए । दोनों मित्रों ने एक शराब घर में शराब पी । उसके बाद मंगल ने बन्नों को वेश्या के रूप में देखा तो उसके भीतर आग में जलता हुआ पाकिस्तान उभर आया

और वह चुपचाप वहां की सीढ़ियां उतरता हुआ वापस आ गया ।

विभाजन और दंगों ने आदमी-आदमी के बीच बहुत दूरी स्थापित कर दी । बच्चों की मैत्री को भी सांप्रदायिकता का विषधर निगल गया । इन दंगों ने ही एक स्त्री का जीवन बरबाद किया । न दंगे होते न उसका बच्चा गली में गिर कर मरता और वह इस कदर अर्धविक्षिप्त न बनती कि उसका पति उसे पीटता जाता और उस सब ने ही उसे वेश्या बना दिया । कितनी घातक है दंगों की तासीर ।

कहानी के पात्रों- मंगल, बन्नों, "भरथरी-नाम" लिखने वाले ड्रिल मास्टर और मंगल के दादा के माध्यम से पाकिस्तान बनाने के निर्णय को बिलकुल बेमानी सिद्ध किया गया है । भौगोलिक सीमाएं इंसानी रिश्तों को नहीं बांट सकतीं, मानवीय करूणा, दया, ममता को सांप्रदायिक तंग दीवारों में कैद कर हिंदू-मुस्लिम के बीच नहीं बांटा जा सकता । कहानी इन सब बातों को बहुत अच्छी तरह व्यक्त करती है । कहानी तीन खंडों में विभाजित होकर समय और स्थान के तीन इकाइयों को अपने में समेटती हुई अपने कथ्य को संप्रेषित करती है । कमलेश्वरजी इस प्रथम अंश के प्रेमचित्रण में अपने पहले कथा दौर वाली उसी रोमानी प्रवृत्ति को नहीं छोड़ पाए हैं जो न्यूनाधिक रूप में हमेशा उनके साथ रही है, यथा: "उन सांसों की याद है बन्नो, जिनमें तुम्हारे मुंह की गंध और मेंहदी के फूलों की खुशबू मिली रहती थी । अब मेरी नाक के पास मेंहदी के फूल लाकर तुम मुंह से उन्हें फूंका करती थी कि महक उड़ने लगे और कहा करती थी......।"(1) खतरों से आगार करता लेखक "कितने पाकिस्मान" में यह सब क्यों लिख रहा है-

"चाहे जितनी गर्मी हो पर औरत को तो आदमी के साथ ही लेटना पड़ता है । एक औरत कमर तक नंगी थी । दूसरी उसी के पास बैठी बार-बार उसके गले तक हाथ ले जाती थी और नंगी छातियों से कमर तक लाती थी ।

उसकी नंगी छातियां पानी भरे गुब्बारे की तरह मचल रही थीं और वह मछली की तरह आहिस्ता-आहिस्ता विछल रही थी ।"(2)

---

(1) "नया" -- जनवरी-मार्च 1972 अंक ।
(2) कमलेश्वर "श्रेष्ठ कहानियां" - पृष्ठ-

इन वर्णनों से अलग हट कर कहानी एक मार्मिक प्रभाव पाठक पर छोड़ती है । कमलेश्वरजी ने व्यंग्य के स्थान पर मानवीय करुणा जगाने का मार्ग अपनाया है जिसमें कहानी का प्रथम खंड कुछ कमजोर रह गया है । इस कहानी में सांप्रदायिकता के साथ दलित वर्ग की अधिक यातनाओं को जोड़ दिया गया है । जिसका परिणाम वेश्यावृत्ति के रूप में उभरता है । पुरुष के द्वारा नारी का शोषण है । इन्हीं आयामों में इस कहानी का यथार्थ प्रकट हुआ है ।

§4§ मान सरोवर के हंस :-

"सारिका" के अप्रैल-1973 अंक में प्रकाशित "मान सरोवर के हंस" कमलेश्वरजी की इस दौर की एक और सफल रचना है जिसमें पत्र शैली में सामान्य मनुष्य के दुख-दर्द और संघर्षशील स्थिति को अभिव्यक्ति दी गई है कि देश का सामान्य आदमी पहले अंग्रेजों की दास्ता में पिस रहा था और अब वह अपने देश की गलत व्यवस्था का शिकार होकर दासत्व जैसी यन्त्रणा भोग रहा है । समस्त कहानी में सेनापति चाचा की कथा दृष्टांत कथा का कार्य करती है । वह फतांसी-शिल्प का रंग लिए हुए हैं ।

इसका कथासार यह है : तीस वर्षों बाद सेनापति चाचा घर लौटे थे । घर लौटने पर उनकी भाभी ने उन पर व्यंग्य वर्षा की थी कि वह रानी का गुलाम बन गया । तब दु:खी होकर उन्होंने बताया कि रानी को गठिया हो गया है और वैद्य ने कहा कि यदि हंस का मांस मिल जाए, तो रानी ठीक हो सकती है । रानी के प्रति वफादारी का सबूत देने के लिए सेनापति चाचा छः सिपाही लेकर मान सरोवर गए । हंसों को मारना तो आसान था, लेकिन निकाल कर बाहर लाना असंभव । अतः उन्होंने साधू का वेश धारण कर हंसों को फुसलाया । हंस छले गए और किनारे आ गए । और पकड़कर उसे मार दिया गया ।

कमलेश्वरजी की इस कहानी में सामान्य मनुष्य के दु:ख-दर्द और संघर्षशील स्थिति को अभिव्यक्ति दी गई है । "देश का सामान्य आदमी पहले अंग्रेजों की दासता में पिस रहा था और अब वह अपने देश की गलत व्यवस्था का शिकार होकर यंत्रणा भोग रहा है ।"§1§ डॉ. पुष्पपाल सिंह लिखते हैं कि जिन जीवन

§1§ पुष्पपाल सिंह : कमलेश्वर कहानी का संदर्भ - पृष्ठ-74.

मूल्यों के लिए "मैं" का परिवार तबाह हो गया है वे मूल्य सेनापति चाचा के वर्ग के लोगों ने लील लिए हैं । "अंग्रेज अवश्य चले गए पर उनके वर्ग से §अधिकारी§ लोग तो दिल्ली और लखनऊ में हैं । जो अब राज चला रहे हैं.......तुम गायब न होते, तो शायद तुम भी राजकाज में हाथ बटा रहे होते ।"§1§ यहां स्पष्ट होता है कि विदेशी शासक व अपने देश के शासकों में कोई अंतर नहीं है । भारतीय अधिकारी भी उन्हीं प्रवृत्तियों के शिकार हैं । ये अधिकारी भी समाज का शोषण करते हैं । इस प्रकार यहां वर्तमान राजनीतिक परिवेश का सशक्त चित्रण किया गया है ।

सामाजिक, राजनैतिक विसंगतियों व छल हमारी शासन व्यवस्था की विशेषता बन गई है । "आज की जिंदगी छदम से भरी है । आम आदमी छल-कपट से दूर हैं । विडम्बना तो यह है कि छलने वाला ही सत्ता प्रतिष्ठान की बड़ी हिस्सेदारी में है, या फिर सत्ता से अलग होकर सिद्धांतों का झण्डा बरदार बन गया है । कभी मानसरोवर के हंस छले जा रहे थे, आज समाज §मान सरोवर§ के सामान्य जन छले जा रहे हैं ।"§2§ व्यवस्था के प्रति असंतोष इस कहानी की मूल संवदना है ।

§5§ <u>जार्ज पंचम की नाक</u> :-

यह इस संग्रह की पांचवी कहानी है । इस कहानी की चर्चा "जिंदा-मुर्दे" के अंतर्गत की जा चुकी है ।

§6§ <u>आधी दुनिया</u> :-

कथासार यह है : लंदन से आस्टेड़ तक की यात्रा में लेखक व उसके मित्र की भेंट एक ग्रीक युवती और उसके पति से हुई । युवती मार्था के साथ उसके तीन डरावने कुत्ते थे । उसके बाद उसने अपने पति से लेखक का परिचय कराया था । मार्था का पति बहुत बूढ़ा था । मार्था के पति ने लेखक से अनुरोध किया कि वह मार्था को समझाए । लेखक को मामला समझ में नहीं आया । तब मार्था ने बताया

- -

§1§ पूर्वोक्त : पुष्पपाल सिंह - पृष्ठ-74.
§2§ मधुकर सिंह - "कमलेश्वर" - पृष्ठ-152.

कि वह अपने देश यूना वापस जाना चाहती है, क्योंकि उसके देश को क्रांति की आवश्यकता है और वहां विचारों का अभाव है, तथा वह अपने विचार अपने देश को देना चाहती है । मार्था का पति नहीं चाहता था कि वह ग्रीस जाए और उसका विचार था कि वह अेस्टेड् पहुंच कर वहां से अपने पति को वापस भेज दे तथा स्वयं जर्मनी, आस्ट्रिया, युगोस्लाविया होती हुई ग्रीस चली जाए । उसने लेखक से पूछा कि उसका क्या विचार है कि उसे जाना चाहिए या नहीं ? लेखक ने कहा कि वह क्या कह सकता है । यह तो मार्था को स्वयं निर्णय लेना चाहिए । जहाज अेस्टेड पहुंच गया था । सब यात्री उतर गए । लेखक व उसका मित्र भी उतर गया । मार्था ने अपने पति की वापसी का टिकट बुक करा दिया था और स्वयं ग्रीस जा रही थी ।

इस कहानी में विदेशी पृष्ठभूमि में एक जहाज यात्रा में एक ग्रीक युवती और भारतीय युवक की बातचीत दी गई है जिसमें कहीं ग्रीस के सैनिक शासन से छुटकारा पाने की शिकायत है तो कहीं नर-नारी संबंधों की चर्चा । पूरी कहानी बहुत बिखरी-बिखरी है । यह कहानी निर्मल वर्मा की कहानियों का-सा आस्वाद देती है । कहानी का कथ्य अत्यंत कमजोर है । श्री पुष्पपाल सिंह का कहना है कि कमलेश्वरजी ने यह कहानी किसी मज़बूरी में फंसकर लिखी है । यह मज़बूरी कभी "मित्र" संपादक को कहानी अवश्य ही देनी है, जैसी भी हो ।

इस कहानी का मूल संवेदना मानव-जागृति है । यदि समस्त मानव जाति इस चिंतन को समग्र रूप से अपना ले, तो इस धरती पर ही स्वर्ग की स्थापना हो सकती है ।

§7§ साँप :-

"साँप" मधुकर सिंह द्वारा संपादित "कमलेश्वर" में ही पहली बार आई है । इससे पूर्व के उनके किसी कहानी संग्रह में नहीं ।

इसका कथासार है : पी.डब्ल्यू.डी. के गेंग नंबर दस का काम चल रहा था । सब मजदूर मस्ती में भर कर काम करते, इकट्ठे होकर भोजन करते और सो जाते । इनके काम का निरीक्षण करने वाला मेट मज़दूरों से बहुत प्यार करता

था लेकिन वह उनसे काम भी कसाई की तरह कस कर लेता था । मज़दूरों के दो ही काम थे मेहनत करना और सरकारी सामान की देख-भाल करना । खुदाई का काम समाप्त हो चुका था और अब पुलिया बनाने की तैयारी हो रही थी । पुलिया के लिए ईंट, पत्थर तथा सीमेंट आदि सामान आ गया था और साथ ही सामान की चौकीदारी के लिए एक चौकीदार भी आ गया था । बंसी चौकीदार के आने से मजदूर बेफिक्र हो गए थे । चौकीदार के आने के चार पांच दिन बाद ही मज़दूरों और चौकीदार में लड़ाई हो गयी । मज़दूरों को लगता कि चौकीदार ओवरसीयर बाबू का आदमी है और उससे उनकी शिकायत करता रहता है।

बंसी चौकीदार ने राउटी की मांग की । उसका तर्क था कि बारिश में सीमेंट पत्थर बन जाएगी । मज़दूरों को लगता कि वह बहाने से अपने लिए राउटी मंगवा रहा है । बरसात में कीड़े मकोड़े तथा सांप भी निकल आए थे । चौकीदार को अपनी पत्नी तथा बेटे की फिक्र रहती थी । वह अपने बच्चों तथा पत्नी को ले आया था । रात में सब राउटी में सोये रहते । एक दिन सुबह सभी मज़दूर उठे, पर रामबरन नहीं उठा । उसे सांप ने काट लिया था । उसका सारा शरीर नीला पड़ गया था । सब लोगों में शोक छा गया था । शाम को रामबरन की लाश गंगा मैया को सौंप कर लौटे, तो राउटी के पास ही बैठ गए । तभी एक मज़दूर ने बंसी चौकीदार को सुझाव दिया कि वह बच्चों को लेकर डाक बंगले में रहने के लिए चला जाए । बंसी की पत्नी ने वहां से जाने के लिए इंकार कर दिया । रात को सब सो गए । चौकीदार ज़रा सी भी सरसराहट होने पर लालटेन उठा कर मज़दूरों को देखता रहता था ।

इस कहानी में कमलेश्वर जी ने फणीश्वरनाथ "रेणु" की शैली पर पत्रों की बोलचाल में आंचलिकता का पुट देखकर पी. डब्ल्यू. डी. के मजदूरों की जिंदगी की तस्वीर पेश करने की चेष्टा की है । इस कहानी में मानवीय प्रवृत्तियों का चित्रण किया गया है । रोज़ाना की मज़दूरी पर काम करनेवाले श्रमिकों की दुरावस्था के साथ मानव-मनोविज्ञान को गहराई के साथ चित्रित किया गया है । मज़दूरों का जीवन कितना यातनामय है, सिर छिपाने तक के लिए उनके पास साधन नहीं है, यह एकसास पूरी कहानी में व्याप्त है । दरिद्रता इस कहानी की मूल संवेदना का आधार है ।

§8§ लड़ाई :-

इस संग्रह की आठवीं कहानी है । इसकी चर्चा "बयान" के अंतर्गत की जा चुकी है ।

§9§ तलाश :-

इसका कथासार यह है :- इस कहानी की नायिका सुमी की मम्मी विधवा है और वह एक कॉलेज में पढ़ाती है सुमी की उम्र लगभग बीस वर्ष है तथा वह एक आफिस में टेलीफोन आपरेटर है । आठ वर्ष पूर्व उसके पिता की मृत्यु के बाद भी अपनी नौकरी जारी रखती है।कालेज में पढ़ाने वाली सुमी की मम्मी बुद्धिवादी है तथा पुरुषों के बीच भी उठती-बैठती हैं । बड़े शहरों के वातावरण में स्त्री-पुरुषों में अधिक दूरी नहीं होती । अत: अब सुमी की मम्मी शारीरिक इच्छाएं पूर्ण करना चाहती है तथा स्वयं को रोक नहीं पाती । दूसरी ओर उसकी बेटी भी युवा है । अत: वह अपनी बेटी से छुप कर अपनी शारीरिक इच्छायें पूरी करने लगती हैं । सुमी को अपनी मां के व्यवहार में एक विचित्र परिवर्तन अनुभव होता है । धीरे-धीरे सारी स्थिति सुमी के सामने प्रगट हो जाती है । पहले तो सुमी को अपनी मां का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगता और वह उदास हो जाती है, लेकिन अंतत: वह परिस्थितियों से समझौता कर लेती है । वह स्वयं होस्टेल में चली जाती है ताकि अपनी मां के जीवन क्रम में विघ्न न बने । सुमी सोचती है कि उसके होस्टेल आ जाने के बाद उसकी मां को पूर्ण स्वतंत्रता मिल गई होगी तथा वह बहुत खुश होगी । सुमी की मां यदि नारी है तो मां भी है । अत: सुमी के होस्टेल जाते ही वह बहुत अकेली पड़ जाती है । मम्मी के जन्मदिन पर जब सुमी फूलों का गुच्छा लेकर उससे मिलने आती है तो उसे बहुत हैरानी होती है कि उसकी मां उसके बिना बहुत उदास तथा अकेली हो गई है । स्वयं सुमी की भी यही स्थिति है । एक दूसरे की स्थिति को देखकर दोनों का मन भर जाता है और वे अत्यंत औपचारिक रूप से बात करती हैं । वह दोनों चाहकर भी किसी भी विषय पर खुल कर नहीं बोल पातीं ।

इस आधुनिक युग में व्यक्ति की सबसे बड़ी तलाश है- व्यक्तिगत सुखों की तलाश । इस युग में सुख की तलाश ही रहती है वह प्राप्ति या उपलब्धि

नहीं बन पाती । इस कहानी में युगानुरूप परिवर्तित मूल्य उभर कर हमारे सामने आए हैं । तलाश कहानी के माध्यम से लेखक यह बताना चाहता है कि इस वैज्ञानिक युग में संबंध बिखरते जा रहे हैं और नैतिक मूल्य टूट रहे हैं, नैतिक, पारिवारिक संबंध सभी अर्थ हीन हो गए हैं । बौद्धिकता ने हर मूल्यों को अपनी तार्किकता की कसौटी पर परखने के लिए उसकी परीक्षा ली है । मृत्युहीन वातावरण में मूल्यों की तलाश जारी है । प्रस्तुत कहानी में शारीरिक सुख के मोह में पड़ कर नारी मातृत्व को भूल जाती है लेकिन उसे अपनी यह तलाश भी सार्थक रूप में नहीं मिल पाती । भौतिक सुखों के बाद भी एक ऐसा अकेलापन है जो बहुत भयंकर है । तब सुमी की माँ बहुत अकेलापन महसूस करती है । इस कहानी की तलाश सुख, तृप्ति, आनंद तथा नये मूल्यों की तलाश है । आधुनिकता ने यही सिखाया है कि पुराने मूल्यों को नकार कर सुख को अन्य भौतिक वस्तुओं में पाने की कोशिश करना यही इस वैज्ञानिक युग के व्यक्तित्व की उपलब्धि है ।

§10§ उपर उठता हुआ मकान :-

यह इस संग्रह की दसवीं कहानी है । इसकी चर्चा "माँस का दरिया" में आगे की जाएगी ।

§11§ नागमणि :-

यह इस संग्रह की ग्यारहवीं कहानी है । इस कहानी की चर्चा "बयान तथा अन्य कहानियां" कहानी संग्रह के अंतर्गत की जा चुकी है ।

§12§ लाश :-

यह इस संग्रह की बारहवीं कहानी है । इसकी चर्चा भी "बयान और अन्य कहानियां" कहानी संग्रह में की जा चुकी है ।

§13§ या कुछ और :-

यह इस संग्रह की तेरहवीं कहानी है । इसकी चर्चा "बयान तथा अन्य कहानियां" में हो चुकी है ।

§14§ <u>जोखिम</u> :-

यह इस संग्रह की चौदहवीं कहानी है । "बयान तथा अन्य कहानियां" कहानी संग्रह में इसकी चर्चा की जा चुकी है ।

§15§ <u>बयान</u> :-

यह इस संग्रह की पंद्रहवीं कहानी है । इसकी चर्चा भी "बयान तथा अन्य कहानियां" कहानी संग्रह में की जा चुकी है ।

§16§ <u>रातें</u> :-

यह इस संग्रह की अंतिम कहानी है । इसकी चर्चा भी "बयान तथा अन्य कहानियां" कहानी संग्रह के अंतर्गत की जा चुकी है ।

0

§4§ माँस का दरिया :-

इस संकलन की कहानियों में वेश्या जीवन का मार्मिक चित्रण हुआ है। असफल दांपत्य जीवन के कारण क्षरित होते हुए संबंधों का भी चित्रण किया गया है। युद्धों की भयावहता तथा संवेदनहीनता का चित्रण किया गया है :-

§1§ युद्ध
§2§ तलाश
§3§ माँस का दरिया
§4§ दु:खों के रास्ते
§5§ उपर उठता हुआ मकान
§6§ जो लिखा नहीं जाता
§7§ दूसरे
§8§ कुछ नहीं कोई नहीं
§9§ दिल्ली में एक और मौत
§10§ फालतू आदमी
§11§ नीली झील
§12§ बदनाम बस्ती

§1§ युद्ध :-

युद्ध "माँस का दरिया" कहानी संग्रह की पहली कहानी है। इस कहानी में युद्ध के समय की मन:स्थिति का चित्रण है।

इसका कथासार यह है :- भारत और पाकिस्तान का युद्ध चल रहा है। लोग हर तरफ युद्ध की ही बातें कर रहे हैं। नायक अकेला भटक रहा है। इस त्रस्त माहौल में उसे घर से आए पत्र की याद आती है जिसमें उसके पिता ने लिखा है कि जब तक लड़ाई का खतरा है वह दिल्ली में वापस आ जाए। युद्ध की विभीषिका तथा बेकारी की मार उसे घर लौटने के लिए विवश कर देती है। उसके पास तो ढंग के कपड़े भी नहीं है। उसके पास एक दिन एन.सी.सी. की वर्दी है। उसे पहनकर वह घर की ओर रवाना होता है। रेल के सफर में वह सोचता है कि वह घर क्यों जा रहा है। युद्ध के डर से या बेकारी के कारण। हर बार यही

वर्दी पहनकर घर जाता है । इन्हीं विचारों में वह सो जाता है । जब सुबह उसकी आंख खुलती है तो वह अपने उपर चादर देखता है । सामने वाले व्यक्ति ने उसको चादर ओढ़ा दी थी । वह व्यक्ति बड़ी आत्मीयता से उसे पूछता है कि क्या वह छुट्टी आया है तथा किस मोर्चे पर हैं ? वह समझ जाता है कि चादर उसी व्यक्ति की है । वह व्यक्ति बताता है कि उसके गांव के दो तीन व्यक्ति मोर्चे पर हैं।

यह कहानी दो महत्त्वपूर्ण बातों के आसपास घुमती है । बेकारी तथा युद्धों की भयावहता, युवक को बेकारी भी उतना ही त्रस्त करती है जितना युद्ध । स्वतंत्रता के बाद बेकारी ने हमारे युवा वर्ग को अपनी गिरफ्त में ले लिया है । बेकारी ने युवकों को हीनता बोध से भर दिया है । यहां तक कि वे घर तक जाने का भी साहस नहीं जुटा पाते । इस कहानी का नायक सोचता रह जाता है कि कहीं घर वाले यह तो नहीं सोचेंगे कि वह बेकारी के कारण तो घर नहीं लौटा । इस कहानी का नायक भी सोचता है, "घर चला ही जाए....... पर वहां जाकर भी क्या होगा ? शायद आस-पड़ोस वाले सोचें कि बमबारी के डर से ही भागकर आया है ।"§1§ जिसको बेकारी ने नहीं सताया वह युद्धों से त्रस्त होकर बैठा है "..........भूख और बेकारी से जो नहीं भागा, वह बमबारी के कारण भाग जाए ।"§2§ युद्ध के दौरान हर वरदीधारी किस प्रकार जनता की सहानुभूति का पात्र बन जाता है । रेलगाड़ी में एन.सी.सी. की खाकी वरदी में एक सामान्य व्यक्ति को भी लोग मोर्चे से आया सिपाही ही समझते हैं और उससे युद्ध संबंधी समाचार पूछने को उत्सुक हैं । इस प्रकार इस कहानी में युद्ध कालीन मानसिकता के साथ-साथ बेकारी का सामाजिक यथार्थ उदघाटित किया गया है । यह सामाजिक यथार्थ बोध की कहानी है ।

§2§ तलाश :-

यह इस संग्रह की दूसरी कहानी है । इसकी चर्चा "श्रेष्ठ कहानियां" के अंतर्गत की जा चुकी है ।

§3§ माँस का दरिया :-

यह कहानी वेश्या जीवन पर लिखी कमलेश्वर की एक प्रसिद्ध और

---

§1§ कमलेश्वर "माँस का दरिया", "युद्ध" - पृष्ठ-16.
§2§ पूर्वोक्त - पृष्ठ-16.

विवादास्पद कहानी है । मैक्सिम गोर्की, हेनरी मिलर जैसे प्रसिद्ध कथा-शिल्पियों ने वेश्या जीवन को आधार बनाकर सशक्त कहानियों की रचना की है । "सारिका" के "विश्व साहित्य में गणिका विशेषांक-2 में "माँस का दरिया" के प्रकाशन पर परेश ने टिप्पणी करते हुए लिखा कि "हिंदी की गणिका जीवन संबंधी यही कहानी ही क्यों चुनी गई ।"§1§ विजय मोहन सिंह ने इस कहानी को सेक्स के नाम पर बहता हुआ "माँस का दरिया" कहा है ।

जुगनु नामक वेश्या अपनी बीमारी से तंग रहती थी । उसे लगता था कि बुढ़ापा कैसे काटेगी । अपनी बीमारी के इलाज के लिए उसके पास पैसे नहीं थे । उसके अनेक ग्राहक बीमारी की वजह से मुंह मोड़ने लगे थे परंतु मदनलाल एक ऐसा आदमी था जो बिना स्वार्थ के उसके पास हमेंशा आता रहता था । एक दिन जुगनू की बीमारी बढ़ गई । उसे अस्पताल में दाखिल होना पड़ा । उसने अम्मा से कुछ रूपये उधार मागे थे । जब वह रूपये समाप्त हो गये तब उसने पुराने ग्राहकों से उधार माँगे । किसी भी आदमी ने उसे रूपये देने में हमदर्दी नहीं दिखाई । प्रत्येक आदमी ने रूपये देते समय गंदी व घटिया माँगे रखी थीं ।

जुगनू कुछ दिनों बाद ठीक होकर सेनेटोरियम से लौट आई । उसे कर्जा चुकाने की बहुत चिंता थी । फिर उसका धंधा भी ठीक से नहीं चल रहा था । एक तो अब भी शरीर में कमज़ोरी थी । दूसरे उसकी जांघ में फोड़ा निकल आया था । वह धीरे-धीरे पक रहा था । उसे बहुत दर्द हो रहा था लेकिन लोग उसकी परेशानी का तनिक भी ध्यान नहीं रखते थे । सोचते-सोचते वह परेशान हो जाती थी । कर्जे की चिंता होती तो उसके मन में आता कि ज़हर खाकर मर जाए । पिछले कुछ दिनों से कर्जदार आने शुरू हो गए थे । उसे लगता कि अच्छा है ऐसे ही कर्ज चुकाता हो जाए । एक दिन उसका फोड़ा बहुत अधिक दर्द कर रहा था और वह किसी को तंग करने की स्थिति में नहीं थी । उसी दिन मदनलाल आया । जुगनू ने कहा कि आज मेरा फोड़ा बहुत दर्द कर रहा है । मदनलाल ही ऐसा आदमी था जो कर्ज लेने नहीं आया था । मदनलाल वापस चला गया । तभी कंवरजीत

---

§1§ "विश्व साहित्य के वेश्या विशेषज्ञों में से केवल कमलेश्वर का नाम गिनाया गया है-- "आलोचना" जनवरी-मार्च-1974 - §कहानी का अतीत और वर्तमान§ पृष्ठ-31.

आया, जुगनू ने उसे भी अपनी हालत बताई लेकिन कंवरजीत नहीं माना । आखिर वह क्या करती । वह कर्जदार तो थी ही । कंवरजीत उसे परेशान करता रहा । दर्द के कारण वह चीखी थी । फोड़ा फट गया था अब उसे कुछ राहत मिली थी । उसे लगा कि उसने मदनलाल को यूं ही लौटा दिया । उसने फत्ते से कहा कि मदनलाल को बुला लाओ । उसने सोचा कि वह आदमी उसके साथ कितनी सहानुभूति रखता है, यही सोचकर उसे लगा कि उसने मदनलाल को लौटा कर अच्छा नहीं किया ।

कमलेश्वर द्वारा वेश्या जीवन पर लिखी गई यह कहानी हिंदी साहित्य में बहुत चर्चित हुई है । इस कहानी में समाज द्वारा उपेक्षित वेश्या का यथार्थ व सजीव चित्रण है । कमलेश्वरजी की विशेषता यह है कि कहानी में वेश्या जीवन का वर्णन चटखारे लेकर नहीं किया गया है अपितु यहां ढलती उम्र और बीमारियों से ग्रसित जर्जर वेश्या जुगनू की व्यथा-कथा और मजबूरियों का जीवंत आलेखन हुआ है । पुष्पपाल सिंह जी ने कहा है कि कहानी की खूबी यह है कि वेश्या के शरीर व्यापार का, कोठों और कोठेवालियों का खूब खुला चित्रण लेखक ने किया है किंतु कहीं भी अश्लीलता का नामो निशान कहानी में नहीं है । इस कहानी में पूरी इमानदारी से शरीर के मांस का व्यापार करने वाली वेश्या की ढलती जिंदगी की बेबसी और मजबूरियों का अत्यंत मार्मिक तथा सफल चित्रण हैं ।

19वीं शताबदी तक वेश्याएं शारीरिक वासना की पूर्ति से भी अधिक संगीत नृत्य और मृदु संभाष के लिए ही प्रसिद्ध थीं किंतु बाद में उन्हें "माँस" मात्र ही समझा जाने लगा । लेखक ने जुगनू के माध्यम से वेश्या जीवन का बड़ा भयानक चित्रण किया है । यहां किसी प्रकार का जीवन मूल्य नहीं है । मांस का मूल्य है । जीवन बिताने के लिए यहीं एक रास्ता है । प्यार, ममता व स्नेह नामक भावनाओं का यहां कोई अस्तित्व नहीं है । यहां तो पेट की भूख मिटाने के लिए किसी की वासना की भूख मिटानी पड़ती है ।

कितनी त्रासदी है कि जागरूक, स्वतंत्र व शिक्षित समाज वेश्याओं के भूतकाल व वर्तमान पीड़ा को समझ नहीं पाता । सभी पुरुष उन्हें मात्र खिलौना समझते हैं । वेश्या का वर्तमान भी भयावह, घृणास्पद, अपमान जनक, बिभत्स और

अपेक्षापूर्ण होता है । भविष्य होता है परंतु वर्तमान से भी अधिक क्रूर व भयानक । इस कहानी में एक वेश्या की छटपटाहट व पीड़ा का यथार्थ चित्र खींचा गया है । "मदनलाल" मज़दूर वर्ग का प्रतीक है । जो "माँस का दरिया" में नहीं उतरता और मानवीय सरोकार को अभिव्यक्त करता है । इसी प्रकार मदनलाल के अतिरिक्त सभी लोग शोषक वर्ग के प्रतीक बन जाते हैं और लेखकीय घृणा उन पर प्रक्षिप्त हो जाती है ।

§4§ दु:खों के रास्ते :-

इस कहानी में दांपत्यगत दूरियां और उलझनों का चित्रण हुआ है ।

बलराज और ललिता पति-पत्नी थे । उनके दो बच्चे सुनीता और संजू थे । ललिता अब बलराज के साथ नहीं रहना चाहती थी । बलराज ने भी सोचा कि यदि ललिता यही चाहती है तो वे दोनों तलाक ले लें । हालांकि उसे यह भी लगता रहता है कि इस तलाक का उसके बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ेगा । अंतत: ललिता ने बलराज से तलाक लेकर वीरेन्द्र से विवाह कर लिया ।

यह कहानी आधुनिक समाज में घटित पारिवारिक विघटन को प्रकट करती हैं । पत्नी किसी आकर्षण में बंध कर अपने पति के साथ न रह कर अन्य व्यक्ति के साथ रहना चाहती है, लेकिन पति चाहता है कि ऐसा न हो तो बहुत अच्छा होगा । वह अपने बच्चों के बारे में सोचता है कि उन पर कैसा प्रभाव पडेगा ? इस प्रकार की तनावमय स्थितियों में घिरकर व्यक्ति पलायनवादी हो जाता है, तथा अपने मूल्यों को भी तोड़ देता है । पति सोचता है कि "मुझे लगता है कि स्वीकृत मानदण्डों के आधार पर मैं दो ही निर्णय ले सकता हूं........ एक तो आत्महत्या और दूसरा....... ललिता की हत्या ।"§1§

महिलाएं भी पश्चिमी प्रभाव के प्रवाह में बहती चली जा रही हैं और अपना सही स्थान चुन पाने में असमर्थ है । महिलाओं की यह स्थिति समाज के लिए हानिकारक है । पति अपनी पत्नी की स्थिति बताते हुए लिखता है--"ललिता

§1§ कमलेश्वर : "माँस का दरिया" "दु:खों के रास्ते", पृष्ठ-59.

का संकट यही है....... कि वह शायद हम दोनों में से किसी को भी संपूर्णतया नहीं चाहती ।"§1§ इन स्थितियों में मानव बहुत अकेलापन व व्यर्थता का अनुभव करता है । प्रेम की असफलता में मानव टूट जाता है "दु:ख कभी नहीं बीतता । अगर बीता होता तो फिर लौटकर नहीं आता........ यह दु:खों के रास्ते हैं........ इन पर आदमी फिर-फिर लौटकर आता है ।"§2§

इस कहानी में बदलते हुए पारिवारिक तथा दाम्पत्य संबंधों का यथार्थ चित्रण किया है । तलाक के बाद भी बलराज सुस्थिर नहीं हो पाता, वह अपनी तलाकशुदा पत्नी से मिलने आता है । तलाक की औपचारिकता के एक ही झटके में सारे मधुर संबंध समाप्त नहीं हो पाते हैं ।

§5§ ऊपर उठता हुआ मकान :-

यह कहानी में वृद्धावस्था की बेबसी और मजबूरियों का अच्छा चित्रण हुआ है ।

मुरारीबाबू नामक युवक विवाह नहीं करना चाहते थे किंतु मां बाप ने उनका विवाह कर दिया । मुरारीबाबू तब जसवंत नगर में नौकरी करते थे । उनकी पत्नी गौरी को यह बात पता चल गयी थी । मुरारी बाबू ने कभी अपनी पत्नी की खबर नहीं ली । वे गांव ही नहीं आते थे । इन बातों से तंग आकर गौरी ने एक दिन फांसी लगाकर आत्महत्या का प्रयास किया था, लेकिन उसकी सास ने देख लिया और उसे बचा लिया । बस उसी दिन से वह सास ससुर की नज़रों में ही कैद रहती थी । एक दिन गौरी के ससुर जसवंत नगर जाकर जबरन मुरारी बाबू को लिवा लाए थे ।

जसवंत नगर में मुरारी बाबू के एक मित्र थे- वैद्यजी । उनकी पत्नी सतवंती बड़ी हसमुख औरत थी । प्राय: मुरारी बाबू उनके घर आते जाते रहते थे । वह कभी-कभी मुरारी बाबू की आर्थिक रूप से सहायता कर देते थे । मुरारी बाबू का गौरी से झगडा होने पर वे गांव चले आए थे । लेकिन वैद्यजी की तामझाम भी साथ आई थी । मुरारी ने गांव में उनकी दुकान खुलवा दी थी और उनकी दुकान चल निकली । बस रुपये पैसे की उनकी तंगी समाप्त हो गई थी ।

---

§1§ पूर्वोक्त - पृष्ठ-60. §2§

मुरारी बाबू का विवाह हुए 45 वर्ष हो गए । मुरारी बाबू का इकलौता बेटा किशन गांव छोड़कर शहर चला गया । वह वहां डोक्टर था । मुरारी बाबू और गौरी गांव में रहने लगे । मुरारी बाबू का सारा समय वैद्यजी के यहां कट जाता लेकिन गौरी को घर में अकेलापन बहुत काटता था । एक दिन गौरी मुरारी बाबू से लड़ पड़ी । उन्होंने क्रोध में आकर कह दिया कि वे हरिद्वार चले जाएंगे । उन्हें बेटे का मोह बहुत तंग करता था । किशन हर महीने मनीऑर्डर पैसे भेज देता था । उसने कभी भी कुशल क्षेम नहीं पूछा । उन्हें अकेलापन काटता था । इसी को वह झेल नहीं पाते थे और वैद्यजी के पास चले जाते थे । मुरारी बाबू और गौरी के बीच मन मुटाव होने पर गौरी कानपुर चली गई । एक दिन अचानक गौरी, किशन उसकी पत्नी तथा बच्चे घर आ पहुंचे । मुरारी बाबू सबको देखकर हैरान हो गए । किशन ने पूछा कि क्या वह सचमुच हरिद्वार जाने वाले थे । मुरारी बाबू ने कहा कि वह तो उन्होंने खीझ कर कह दिया था । किशन ने बताया कि वह तो यह योजना बनाकर आया है कि वह अपने माता-पिता को ऋषिकेश व हरिद्वार घुमा दे । उसी दिन से दोनों के संबंध सामान्य हो गए जैसे कि कुछ घटा ही न हो ।

मुरारी बाबू को शिकायत अपनी पत्नी से न रहकर पुत्र से हो जाती है, जो मनीऑर्डर के चंद रुपये भेजकर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेता है । किशन के पास जाकर जब भी वह लौटते हैं तब ही उन्हें एक प्रकार का बेगानापन या कष्ट और घेर लेता है । पुत्र के इस रूखे व्यवहार की इंतहा तब होती है जब वह "चलते वक्त सैंपुल वाली दवाइयों में से कोई शीशी दे देता है और बड़े चलताऊ ढंग से कहता है, वहां से लिखना कोई फायदा हुआ या नहीं ।"§1§ गौरी बहुत दिनों बाद लौटकर रात्रि के एकांत में ममत्व भरे अपनत्व से यह पूछ लेती है : "कोई तकलिफ तो नहीं हुई......." तब मानों उनके दाम्पत्य की सारी दरारों पर एक सीमेंट-सा लग जाता है, सारे जख्म पुर से जाते हैं । इस प्रकार यह कहानी दांपत्य संबंधों के बिखराव के साथ-साथ वृद्धावस्था की मजबूरियों को चित्रित करती है । वृद्धावस्था की इस "पृष्ठभूमि" पर बहुत-सी कहानियां हिंदी में आई है जिनमें

---

§1§ कमलेश्वर : "माँस का दरिया" "ऊपर उठता हुआ मकान" - पृष्ठ-60.

से कुछ जीवन के वृहत्तर आयामों को छुते हुए पीढ़ियों की परिवर्तित मूल्य दृष्टि को सुन्दर ढंग से रेखांकित करती है, यथा: "गोविन्द मिश्र की "कच कौंध"" §1§ किन्तु कमलेश्वर की कहानी "ऊपर उठता हुआ मकान" में पीढ़ियों की यह परिवर्तित दृष्टि रेखांकित होने से रह जाती है । लेकिन यह कहानी आधुनिक समाज के उपेक्षित वृद्ध वर्ग का दुखद चित्र प्रस्तुत करती है । वृद्ध पति-पत्नी अपने बेटे के मनीआॅर्डर के आस में ही जीवन धकेले जा रहे हैं । आजकल का युवा वर्ग भौतिकता के प्रवाह में बहकर माता-पिता को अपने सुख-दु:ख में वह अपने साथ नहीं रखता । और ना ही कभी उनके दु:ख-सुख की खबर लेता है, बस मनीआॅर्डर भेज कर ही वह अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेता है । युवा वर्ग की यह मानसिकता माता-पिता को बहुत कचौटती है । वह बेगानेपन में ही घिरे रहते हैं ।

अकेलेपन के साथ-साथ जुड़ा पारिवारिक तनाव भी इस कहानी में आया है । यह कहानी पूर्वदिप्ति शैली में लिखा गया है ।

§6§ जो लिखा नहीं जाता :-

इस कहानी में प्रेम से त्रिकोण "मैं" §चन्दर§, महेन्द्र और सुदर्शना द्वारा दाम्पत्य संबंधों के उलझाव पर प्रकाश डाला गया है ।

महेन्द्र और सुदर्शना पति-पत्नी थे । सुदर्शना विवाह से पूर्व चन्दर को चाहती थी । चन्दर भी उससे विवाह करना चाहता था । किंतु सुदर्शना का विवाह महेन्द्र से हुआ और चन्दर ने विवाह ही नहीं किया । महेन्द्र और सुदर्शना एक दूसरे से बहुत प्रेम करते थे । प्रेम के ही क्षणों में महेन्द्र ने सुदर्शना को अपने प्रेम-संबंधों के बारे में बताया । सुदर्शना ने भी बता दिया कि चन्दर नामक युवक उसे चाहता था । उसने अभी तक विवाह नहीं किया । बस उसके बाद से सुदर्शना का पति उसकी प्रत्यक्ष बात पर सन्देह करना आरंभ कर देता है । धीरे-धीरे स्थितियां बहुत तनावपूर्ण होती जा रही हैं । अंतत: वह एक दिन सब कुछ छोड़कर अपने पिता के पास लौट गई । पांच वर्ष तक अपने पति से वह अलग रही ।

---

§1§ "सारिका" - अप्रैल 1973.

अचानक उसके पिता का देहांत हो गया । चन्दर और महेन्द्र दोनों उसके पिता के अंतिम संस्कार में आये । चन्दर इस लिए आया था कि वह सुदर्शना से पूछ सके कि अब वह अपनी आने वाली जिंदगी किसके सहारे गुज़ारेगी । महेन्द्र भी शायद यही संभावना लिए था कि कहीं बिगड़ी बात नहीं कर सकी । स्वयं को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त न कर पाने के कारण ही उसका व्यक्तित्व व जीवन अधूरा रह गया । न वह चन्दर की हो सकी और न ही महेन्द्र की बन सकी ।

इस कहानी में पति-पत्नी के संबंधों का उलझाव बहुत स्पष्ट रूप से चित्रित हुआ है । इस कहानी से यह भी स्पष्ट होता है कि संदेह से सारा जीवन व्यर्थ हो जाता है । पिता की मृत्यु के बाद सुदर्शना को एक प्रकार का अकेलापन भोगना पड़ता है । इस अकेलेपन का दंश भी बहुत अच्छी तरह कहानी में उभारा है ।

§7§ <u>दूसरे</u> :-

यह कहानी में मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक विषमता और टुकड़ों में नौकरी करती एक लड़की सुनीता की बेबसी का चित्रण है ।

इसका कथासार है :- सुनीता गरीब परिवार की युवती थी । वह सभी भाई-बहनों में सबसे बड़ी थी । उसके पिता ने बहुत कठिनाईयों से उसे बी.ए. तक पढ़ाया था । वह घर का खर्चा चलाते रहने के लिए छोटी-छोटी नौकरियां करती रहती थी । कभी किसी के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती तो कभी दूध डिपो पर दूध बांटती थी । उसे इस तरह का जीवन कतई पसंद न था । वह शादी भी नहीं करना चाहती थी । बाद में उसे नौकरी मिल गई । तब से वह भाई-बहनों को सम्मानित जीवन दे सकेगी । अपनी निर्धनता की कुंठा में वह सोचती रहती कि यदि उसने अच्छा कपड़ा पहन लिया तो आस-पड़ोस के लोग क्या सोचेंगें । मुहल्ले की औरतें उसे क्या कहेंगी । वह हमेशा शादी का विरोध करती थी लेकिन जिन दिनों वह नौकरी कर रही थी उन दिनों उसके विरोध में वजन आ जाता था । इस विरोध में उसका अस्तित्व उसे बल देता रहता था तथा वह स्वयं को सार्थक भी अनुभव करती है । जब उसकी नौकरी छूट जाती है तब उसके मां बाप को उसके विवाह की चिंता सताने लगती है । बस उसके लिए वर की तलाश शुरू हो जाती है ।

एक दिन ऐसा ही हुआ । सुनीता की नौकरी छूट गई थी । मां-बाप ने एक लड़का देखकर सुनीता की सहमति के लिए उसे अपने पास बुलाया । सुनीता ने भी उनकी बात को स्वीकृति दे दी । इस समय नौकरी न होने की वजह से उसका अस्तित्व समाप्त हो गया था ।

इस कहानी में मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक विषमता और टुकडों में नौकरी करती एक लड़की सुनीता की बेबसी का चित्रण है । इस परिवार की आर्थिक मजबूरी ऐसी है कि इसके सदस्य पूरी तरह दूसरों पर निर्भर हैं, इसके सारे निर्णय "दूसरे" ही करते हैं । घर की आवश्यकता की छोटी-छोटी चीजें आएं या न आएं - इसका निर्णय उनके हाथ में नहीं है । अपितु उन्हें कर्ज देने वालों के हाथ में है । चुनाव में वोट किसे देना है उसका निर्णय भी दूसरे ही उनके लिए लेते हैं । इस घर के पात्रों को जिंदगी जीने की सुविधा कभी मिलती ही नहीं ।

मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक विषमता व्यक्ति के अस्तित्व को ही समाप्त कर देती है । व्यक्ति इस विषमता में स्वयं से संबंधित निर्णय भी नहीं ले सकता । विवशता की सीमा इस हद तक बढ़ जाती है कि वह दूसरों के सब निर्णय सहज होकर स्वीकार करके जीवन बिता देते हैं । यहां तक कि नायिका जीवन में विवाह के महत्वपूर्ण मामले में भी दूसरों का ही निर्णय स्वीकार कर लेती है ।

हमें आर्थिक दबाव के कारण वरण की स्वतंत्रता भी नहीं प्राप्त हो पाई है, यही इस कहानी का प्रतिपाद्य है ।

(4) <u>कुछ नहीं कोई नहीं</u> :-

यह एक विशिष्ट प्रकार की प्रेम कहानी है जिसमें बाप-बेटे में दुश्मनी हो जाती है और अंत में सूरज अपने बाप का खून कर देता है, क्योंकि उसका बाप उसकी मां से प्रेम न करके एक अन्य स्त्री से प्रेम करता है । इस मार्ग से उस स्त्री को हटाने के अनेक प्रयत्न जब सफल नहीं हो पाते तब वह अपने बाप का खून कर देता है ।

इसका कथासार यह है :- सूरजभान का पिता दीवान पुलिस में काम करता था । वह रात को पहरेदारी करता था तथा गांव में रहने वाली

गौरी से उसके अवैध संबंध थे । चौकीदारी के बहाने उसकी हर रात गौरी के घर ही बीतती थी । सूरज को इस बात का पता चल गया । वह अपने मां के प्रति इस अन्याय को सहन नहीं कर पाया । दीवान ने अपने बेटे पर झूठा आरोप लगाकर उसे पुलिस द्वारा पकड़वा दिया ताकि वह निश्चिंत होकर गौरी के साथ अपने संबंध बनाए रखे । गौरी ने ज़मानत करके सूरज को छुड़वाया । सूरज जमानत पर रिहा होने के बाद गौरी के घर पहुंचा । उसने गौरी से पूछा कि उसने उसकी जमानत क्यों करवाई । गौरी ने बताया कि उसके पास मंदिर बनवाने के लिए जो धन था उस धन को जमानत में लगा दिया । सूरज ने गौरी से कहा कि वह दीवान को कह दे कि वह आगे से उसके घर न आए । सूरज ने यह भी कहा कि वह गौरी को मंदिर बनवा देगा लेकिन वह दिवान को आने से सख्त मना कर दे । कभी-कभी छुप-छुप कर सूरज गौरी का हाल पूछने उसे बुला लेता । पुलिस उसके पीछे लगी थी । वह गौरी को अपनी मां के समान समझता था । वह नहीं चाहता था कि उसके पिता दीवान गौरी के साथ अन्याय करे । अतः वह सदैव ही गौरी का ध्यान रखता । वह चाहता था कि वह गौरी को मंदिर बनवा दें तथा दीवान के चंगुल से भी बचा लें । एक दिन वह गौरी को मिलने आया कि पुलिस को पता चल गया । पुलिस की गोलियां चलने लगीं । लेकिन दो तीन दिन बाद सूरज तो नहीं पर उसकी लाश आई थी । उस दिन वह पुलिस मुकाबले में मारा गया था और उसके मित्र पोष्टमार्टम के बाद उसकी लाश ले आए थे । लाश चरना के घर के चबूतरे पर पड़ी थी । सूरजभान का बाप अपने बेटे की लाश तग देखने नहीं आया था । जब सूरज की मां अपने बेटे की लाश देखने आई थी तो दीवान ने उसे डांट कर वापस बुला लिया । दोपहर में चार आदमी अर्थी उठाकर ले चले । गौरी सुबह से ही इंतजार कर रही थी । जब अर्थी गौरी के घर तक पहुंची तो उसने अर्थी रोकने के लिए कहा । चरना चुपचाप रुक गया । अर्थी नीचे रख दी गई । गौरी ने कफन उठाया । सूरज का चेहरा देखकर चुपचाप अपनी कोठरी में लौट गई ।

नैतिक मूल्यों का पतन किस कदर हो गया है कि पत्नी से झूठ बोलकर पति उसे बहकाता रहता है । पिता अपने बेटे को ही कांटा समझता है । मानवीय संबंध पतन के कगार पर है, एक बाप भी नैतिकता व रक्त संबंध को कुछ महत्त्व नहीं

देता । लेकिन कहीं अभी मानवीयता जिंदा ही है । बेटा सूरजभान गौरी पर दोष आरोपित नहीं करता बल्कि उसको मां की तरह ही मानता है । नारी होने के कारण उसका सम्मान करता है ।

इस कहानी का एक सुंदर मानवीय पक्ष गौरी, उसके पिता की प्रेमिका भी है जिसमें उसकी पुरुष पर निर्भरता, हर नारी की पुरुष पर निर्भरता, का अच्छा चित्रण हुआ है । इस कहानी में बदलते हुए पारिवारिक संबंधों के साथ काम-संबंधों का यथार्थ चित्रण किया गया है । पारिवारिक संबंधों में व्याप्त तनाव के साथ-साथ दांपत्य संबंध की असफलता भी इस कहानी में अभिव्यक्त हुई है । मानवमूल्यों का ध्वंस इस कहानी का नाभिकेंद्र है ।

§9§ दिल्ली में एक और मौत :-

"दिल्ली में एक और मौत" दिल्ली में हुई मौत के प्रति महानगरीय जनता के सर्द रुख को चित्रित करने वाली एक अच्छी कहानी है । किन्तु परिस्थितियों के परिवर्तन से महानगर के वे ही लोग एक और मौत पर कितने संवेद्य एवं मानवीय हो उठते है- इसका चित्रण कमलेश्वरजी ने किया है । "दिल्ली में एक और मौत" में दोनों स्थितियों के वैषम्य को गहराई से चित्रित करने के लिए कहानीकार ने दोनों कहानियों में पात्र वे ही रखे हैं ।

कथासार यह है :- एक ही जगह पास-पास के मकानों वाले सब लोग युद्ध की घड़ी में बहुत त्रस्त हैं । सरदार वासवानी व उसकी पत्नी, भवानी तथा लेखक युद्ध की त्रासदियां साथ-साथ भोग रहे हैं । युद्ध जारी है तथा प्रतिदिन मोर्चे पर मरने वाले वीर जवानों के नामों की सूची अखबार में छपती है । सब लोग फौजी बनकर ही जी रहे हैं । मिसेज वासवानी का भाई भी फौज में है तथा इसी कारण वे उदास व परेशान रहती हैं । तभी गली में से एक मेजर की अर्थी निकलती है । मिसेज वासवानी उसे देखते ही दु:ख में घिर जाती है । भवानी तथा लेखक भी शवयात्रा में शामिल हो जाते हैं । वे इससे अधिक कर भी क्या सकते हैं सिर्फ सहानुभूति ही तो जता सकते हैं । मेजर की आयु बहुत छोटी थी । उसके तीन बच्चे थे । युद्ध में इस मेजर ने सात पाकिस्तानी टैंक तोड़ कर बहुत वीरता दिखाई थी।

प्रधानमंत्री शास्त्रीजी ने भी उसकी प्रशंसा की थी । उसकी रेजिमेंट के कर्नल तथा अन्य अफसर भी आए हैं । मृतक के बूढ़े पिता भी शव यात्रा में शामिल है । जैसे ही मृतक को आखिरी सलामी दी गई, कर्नल फूट-फूट कर रो पड़ा । बूढे पिता ने दिलासा दिया । कर्नल को संबोधित करते हुए उसने कहा "तुम तो सबर करो......... मुझे देखो ।"§1§

इस कहानी में देशभक्त सैनिक की मृत्यु ने इस महानगरीय जिंदगी के स्वार्थी पात्रों को भी अन्दर से हिला दिया है । इस प्रकार यह कहानी पहली कहानी §दिल्ली में एक मौत§ के "कंट्रास्ट" में आकर मानवीय अच्छाइयों के प्रति एक आस्थाभाव प्रदान करती है । इस कहानी की आधुनिकता जिजीविषा का पाठ पढ़ाती है । युद्ध की त्रासमयी बेला में जब प्रत्येक प्राणी युद्ध व मृत्यु से आतंकित है उस समय भी मृतक का वृद्ध पिता रोते हुए कर्नल को सांत्वना देता है । इस कहानी में युद्ध के वातावरण में मानवीय संवेदना की समाप्ति के यथार्थ को खोला गया है । युद्ध से जुड़ी हुई व्यवस्था के लिए मनुष्यों में युद्ध में मृत्यु की कोई घटना ही नहीं बनती, यही इस कहानी का यथार्थबोध है ।

§10§ <u>फालतू आदमी</u> :-

इस कहानी में प्रतीकात्मक ढंग से प्रेम की मजबूरियों का और दूरियों का चित्रण हुआ है । इसका कथासार है :- नायक अपने माता-पिता की अनचाही संतान था । उसको लेकर उसके मां-बाप में संघर्ष छिड़ा रहता था । इस प्रकार मां-बाप के बीच उत्पन्न बनाव से उसे पता चल गया कि इस संघर्ष का कारण क्या है ? नायक का युवावस्था में सुजाता नामक युवती से प्रेम हो गया । वह नायक के शिशु की मां बनने वाली थी । सुजाता उस बच्चे को जन्म देना नहीं चाहती थी । नायक के समझाने पर भी सुजाता को किसी भी तर्क का उस पर कोई प्रभाव नहीं हुआ । इसी कारण नायक बहुत तनावग्रस्त हो गया । वह नहीं चाहता था कि अबोध शिशु को मार दिया जाए । दोनों प्रेमियों के संबंध इसी तनाव के कारण समाप्त हो गए ।

---

§1§ कमलेश्वर - "मांस का दरिया" "दिल्ली में एक और मौत" - पृ. 122

कुछ समय के बाद सुजाता का विवाह कहीं और हो गया । जब विवाह के बाद सुजाता नायक को मिली तब वह गर्भवती थी । तब भी उसने नायक को बताया कि वह जल्दी मां नहीं बनना चाहती । यह सुनकर नायक परेशान हो गया । उसे लगने लगा कि अब फिर हत्या और खून खराबे का दौरा शुरु होगा । उसके मन में संतान के प्रति अजीब सा मोह उमड़ आया था । इसी कारण वह सुजाता के मना करने के बाद भी कभी-कभी उससे मिलने पहुंच जाया करता था ।

कुछ दिन बाद सुजाता ने मेटर्निटी होम में एक बच्चे को जन्म दिया । नायक बच्चे को देखने मेटर्निटी होम गया । वह सुजाता को नहीं उस बच्चे को मिलने पहुंचा था । उसने सुजाता की बातों में मातृत्व झलकता हुआ देखा था । उसे यह सब देखकर प्रसन्नता भी हुई थी । वह यही सोचता था कि यह बच्चा खुद का होता तो अच्छा रहता ।

इस कहानी का नायक एक विचित्र ग्रंथि से ग्रस्त है । जब से उसे पता चलता है कि वह अपने मां बाप की अनचाही संतान है, तब से उसके मन में अजन्मी संतानों के प्रति बहुत विचित्र सा मोह पैदा हो जाता है । सुजाता जब बच्चे को जन्म देने से मना कर देती है तब नायक को समझ में नहीं आता कि जब वह मां नहीं बनना चाहती तो पत्नी क्यों बनना चाहती है । इसी कारण उनके संबंध समाप्त हो जाते हैं ।

इस कहानी में संबंधों के बीच आए विचित्र से बिंदू का चित्रांकन किया गया है । वह बिंदू आज की भौतिकतावादी आधुनिकतावादी आधुनिकता की ही देन है कि पति-पत्नी विवाहोपरांत भी शीघ्र ही संतान नहीं चाहते और उस संतान की हत्या करने के लिये तत्पर रहते हैं । इस कहानी में मनोवैज्ञानिक यथार्थ को बहुत बारीकी से उद्घाटित किया गया है ।

॥1॥ <u>नीली झील</u> :-

इस दौर की श्रेष्ठ और पर्याप्त चर्चित कहानी रही है । पच्चीस-छब्बीस का महेसा और चालीस की होकर भी चालीस की न लगनेवाली पारबती की प्रेमकथा का मार्मिक चित्रण इस कहानी में हुआ है ।

इसका कथासार है :- महेश पांडे - महेशा एक अशिक्षित व्यक्ति है । वह कानपुर की एक मिल में काम करता था । लेकिन बाद में उसने नौकरी छोड़ दी थी । अब वह किसी अन्य शहर से थोड़ी दूर पर स्थित नीली झील की ओर जाने वाले रास्ते पर मज़दूरी कर रहा है । उसके मन में सौंदर्य हो चाहे किसी स्त्री का सौंदर्य अथवा प्रकृति का सौंदर्य सभी उसको आकर्षित करता रहता है । अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण ही वह झील की तरफ आने वाली स्त्रियों की ओर देखता रहता है । उसे नीली झील बहुत अच्छी लगती है क्योंकि नीला रंग उसे बहुत प्रिय है । इसलिए नीली-झील की तरह उसे जो भी वस्तु दिखाई देती है वह उसी की तरफ आकृष्ट हो जाता है । मज़दूर होने के बावजूद भी वह गोरी मेमों को निडर होकर ताकता रहता है । इसी कारण उनके साथी मज़दूर उससे जलते हैं और उसे भी ऐसा न करने की उपदेश देते रहते हैं । परंतु महेश पांडे को अपनी ही इस प्रवृत्ति के अतिरिक्त कुछ नहीं समझता ।

एक दिन इस नीली झील की और हिन्दुस्तानी स्त्री-पुरुषों का एक दल आया । उस दल में बहुत सी औरतें थीं । एक महिला ने नीली साड़ी भी पहन रखी थी । महेश पांडे उस स्त्री की ओर आकर्षित हो गया । वह लगातार उसे देखता रहा । अब वह उससे बात करने का अवसर खोजने लगा । उस स्त्री के आकर्षण से ही उसने उस दल का सामान ढोया और जब एक व्यक्ति उसे पैसे देने लगा तो उसका सारा आकर्षण समाप्त हो गया । नीली झील पर आने वाले देश विदेश के पक्षी भी उसे बहुत प्रिय थे । इस झील के किनारे बैठकर घंटों इन पक्षियों की हलचल निहारा करता था । सैलानी इन पक्षियों की हत्याएं करते थे, उसे यह बात बहुत बुरी लगती थी । इस दल के व्यक्ति ने जब पक्षियों को मारने के लिए बंदूक तान ली, तो उसका मन उचाट हो गया । जैसे बंदूक चलने लगी, वह उदास हो गया ।

महेश ने नीली झील के पास के ही एक कस्बे की विधवा पण्डिताइन से विवाह कर लिया । अब उसे मज़दूरी करने की आवश्यकता नहीं रही, क्योंकि उसकी पत्नी बहुत अमीर है । वह विधवा महेसा की तरफ आकर्षित थी । अपने विवाह के बाद महेसा प्रसन्न था । दोनों की आयु में बहुत अंतर था लेकिन तब भी उसने किसी भी स्वार्थ के कारण उस विधवा से विवाह नहीं किया । वह अपनी पत्नी पारबती को किसी मेम की तरह बना कर रखना चाहता था । वह उसे

अच्छी-अच्छी चीजें लाकर देता और ढंग के कपड़े पहनना सिखाता है । पारबती की उम्र बहुत अधिक थी लेकिन तब भी वह महेसा के कारण इन सब वस्तुओं का उपयोग करती । पारबती को किसी प्रकार की भी आर्थिक चिंता नहीं थी क्योंकि पारबती रुपयों के लेने-देने का व्यापार करती थी । बस वह उस झील के पास जाकर घंटों बैठा रहता और पक्षियों को निहारता रहता । पारबती उसके इस सौंदर्य प्रेम को समझ नहीं पाती । उसे लगता है कि तीतर देखने के लिये इतनी दूर जाने की क्या आवश्यकता है ?

इधर पारबती मां बनने वाली थी । महेसा तो प्रकृति प्रेमी था वह इन बातों को गम्भीरता से नहीं लेता । पारबती को खतरा सा लग रहा था । इधर महेसा भी बहुत गम्भीर रहता है, उसे लगता कि वह झील पर ही बैठा रहे । महेसा झ ील के किनारे बैठा रहता । झील के सिवाय उसका मन कहीं भी नहीं लगता । महेसा पक्षियों के अण्डों का संग्रह करता । एक दिन बातों ही बातों में अण्डे पारबती को दिखाए । पहले तो पारबती उन अण्डों को स्पर्श करने में संकुचाई पर फिर उन अण्डों के सौंदर्य से प्रभावित होकर उसने एक अण्डा उठाया और दुर्दैव से वह अण्डा उसके हाथों से फूट गया । अण्डें का फूट जाना पारबती को सबसे बड़ा अपशुकन लगा है । उसे लगा कि मानों उसके गर्भ का बच्चा ही मृत हो गया है । अंतत: अस्पताल में एक मृत बच्चे को जन्म देकर मर गई ।

महेशा पांडे फिर से अकेला रह गया । अब इस "अकेलेपन" तथा "पहले के अकेलेपन" में काफी अंतर था । अब वह विधुर था और पारबती का काफी पैसा उसके पास जमा था । मरने से पहले पारबती ने बार-बार कहा था कि उसकी मृत्यु के बाद उसके नाम पर कस्बे में एक मंदिर और धर्मशाला बनवायी जाए । महेशा पांडे को अब उसी बात की फिक्र रहने लगी । वह पारबती की अंतिम इच्छा पूरी करने के लिए बड़ी क्रूरता से पैसा वसूलने लगा । उसके कठोर व्यवहार से लोग दु:खी हो गए । महेसा को इन सब बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता था । वह अपनी ही धुन में मस्त था ।

एक दिन झील के किनारे सैलानी पक्षीयों का शिकार कर रहे थे । पक्षीयों की चीख तथा पारबती की चीख में उसे समानता दिखाई दी । वह महसूस

करने लगा कि पारबती के बच्चे को तो वह बचा नहीं पाया पर वह इन पक्षीयों को तो बचा सकता हैं । अचानक उसे पता चला कि चुंगी की जगह नीलाम होने वाली है । वह उस जगह पर पारबती की इच्छानुसार एक मंदिर बनवाना चाहता था । उसके लिये रूपयों कम पड़ रहे थे । उसने मंदिर बनवाने के लिए चंदा इकट्ठा किया । उसके मन में द्वंद्व आरंभ हुआ । उसके मन में आया कि वह मंदिर बनवाए या नीली झील वाली जगह खरीद का पक्षियों को संरक्षण प्रदान करे । वह नीली झील या मंदिर दोनों में से क्या चुना जाये उसका निश्चय नहीं कर पाता था । उसे बहुत छटपटाहट होती थी वह झील के किनारे जाकर सुरखाब मुडार, सवनहंस, सर्प आदि पक्षियों को एक तक निहारता रहता । जिस दिन ज़मीन की नीलामी हुई उस दिन उसने चबूतरे के पास वाली ज़मीन नहीं खरीदी बल्कि दलदली नीली झील खरीद ली । लोगों की आँखें खुली रह गई कि यह महेसा ने क्या किया । महेसा ने लोगों की किसी बात पर ध्यान नहीं दिया। उसने झील खरीद कर सबसे पहला काम किया कि झील वाले मोड़ के रास्ते पर उसने एक तख्ती टांग दी । जिस पर लिखा था - "यहाँ शिकार करना मना है ।" नीचे एक और पंक्ति थी- दस्तखत झील का मालिक महेश पांडे ।

स्व. मोहन राकेश ने इस कहानी में नीली झील को पारबती से अधिक महत्त्व प्रदान किया था । उनका कथन है : "महेसा की वास्तविक प्रेमिका वह नीली झील ही है, जिसके दर्पण में वह सृष्टि के छिपे हुए रहस्य, जीवन और सौंदर्य का साक्षात्कार करता है, चाहे अपने चेतन में उसे समझ नहीं पाता है । "नीली झील" एक ऐसी ही कहानी है, जिसकी संवेदना कई-कई स्तरों पर एक साथ चलती है और अपने मूल में एक प्रतीकात्मक कहानी होते हुए भी वह यथार्थ की भूमि पर एक स्वाभाविक कहानी प्रतीत होती है । कहानी की वस्तु में सच्चाई हो चाहे न हो, परन्तु लेखक का चरित्र-चित्रण और वातावरण-चित्रण इतना सशक्त है कि वह नीली झील, पारबती, महेसा और सवनहंसों के झुंडो के साथ हमारे सामने साकार हो उठती है और हम उतने समय के लिए उसी वातावरण में जी लेते हैं । हिन्दी में ऐसी कहानियाँ बहुत कम है, जिनका दिया गया हर विस्तार इतना चित्रात्मक और साथ ही इतना सार्थक भी हो ।"(1)

---

(1) "बलकम सुद" - पृष्ठ-38.

-=: ||| :=-

हमारी दृष्टि में वहाँ नीली झील नहीं अपितु पारबती ही महेसा की प्रेमिका है । अंत में महेसा का यह प्रेम व्यापक मानवीय करूणा में परिवर्तित हो जाता है । "प्रिया की याद दिलवाने वाले इन पक्षियों को देखकर ही" पारबती की याद उसे फिर आई और नीलामवाले दिन उसने तीन हजार की बोली लगाकर चबूतरे के पास वाली जमीन नहीं, दलदली नीली झील खरीद ली ।"(1) उसकी आंखों के आगे ही सोनपतारी के झुंड में से एक पक्षी के शिकारी की गोली से आहत होकर गिर जाने पर उसे पारबती की याद फिर आई और फिर नीली झील का खरीदा जाना यह सिद्ध करता है कि उसने इसे इसलिए खरीदा है कि फिर कोई शिकारी सवनहंसों, गंधर्व देश से आए देव हंसों, सारसों, सोनपतारी के जोड़ों में से किसी पक्षी को अकेला न कर दे जैसे वह पारबती के बिना अकेला है । यहाँ उसकी पीड़ा व्यापक मानवीय करूणा का रूप धारण कर पक्षियों की पीड़ा से एकमेक हो जाती है । यह व्यक्ति की पीड़ा का व्यापक मानवीय करूणा में पर्यवसान है । इसलिए कहानी बहुत गहरे जाकर पाठक के मन को छूती है । यह कमलेश्वर की बेहतरीन कहानियों में से एक है । किन्तु इसका अन्त भी "राजा निरबंसिया" के अन्त की तरह एक रोमानी आदर्शपरकता का रंग लिये हुए है । यह अन्त सहज ही मानवीय करूणा तो जगाता है किन्तु यथार्थ की भयावह स्थिति से कन्नी काट कर निकल जाता है ।

इस कहानी में एक पुरूष की मानसिकता का विभिन्न स्तरों पर चित्रण किया गया है जो कि एक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है । इस कहानी का नायक शहर में मज़दूरी करता है । उसके मन में शहरी स्त्रियों के प्रति आकर्षण पैदा हो जाता है । स्त्रियों का शहरी रूप उसे प्रभावित करता है । इस प्रकार एक वर्ग विशेष के प्रति उसका मोह उत्पन्न होता है । यह परिवर्तित मानसिकता वस्तुत: पश्चिमी चिंतन के प्रभाव से ही उत्पन्न हुई है । जो धीरे-धीरे भारतीय ग्रामीण को भी अपनी ओर आकर्षित कर रही है । इस प्रकार यह कहानी व्यक्तित्व पर जनवाद की विजय दिखाती है । यहीं पर यह कहानी आधुनिकता को प्रकट करती है ।

---

(1) "मेरी प्रिय कहानियाँ", "नीली झील" - पृ. 109.

§12§ बदनाम बस्ती :-

यह कहानी "माँस का दरिया" संग्रह की अंतिम कहानी है । इसमें समानांतर कथानक शैली का अच्छा प्रयोग हुआ है जिसका पूर्ण उत्कर्ष बाद में चल कर उनकी प्रसिद्ध कहानी "रातें" में मिलता है । इसमें कसबाई जीवन के इस पहलू का वर्णन है कि किस प्रकार पुलिस वहाँ आकर जीवन की सुचारु व्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर देती है ।

कथासार यह है :- महारानी विक्टोरिया के शासन काल में इंग्लैंड ने आश्चर्यजनक उन्नति की थी । कई देशों में इंग्लैंड ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था । इसी काल में वहाँ शिक्षा तथा साहित्य की बहुत उन्नति हुई थीं । सन् 1899 में लार्ड कर्ज़न हिंदुस्तान का वायसराय बन कर आया था । वह महारानी का विश्वास-पात्र आदमी था । सन् 1911 ई. में जार्ज पंचम भारत आए थे । दिल्ली में एक दरबार हुआ था । लार्ड कर्ज़न के राज्य में सीमा प्रदेशों पर कबाइली विद्रोह हुए तो कर्ज़न ने उन्हें दबाने का प्रयत्न किया था । लेकिन उसे इस काम में सफलता नहीं मिली थी । अंततः लार्ड कर्ज़न ने नई चाल चली उसने कबाइली विद्रोहियों को सहयोग से अपने वश में किया था ।

उसके बाद लार्ड हार्डिंग आए । जनता में असंतोष बढ़ गया था । बंगला के साथ उन्होंने पक्षपात किया था । चांदनी चौक से एक दिन वायसराय की सवारी गुजर रही थी । उस समय उन पर एक बम फेंका गया था और वायसराय बुरी तरह घायल हो गया था । सन् 1916 ई. में चेम्सफोर्ड वायसराय बने । उसके बाद ही रौलेट ऐक्ट पास हुआ । पास होने के बाद ही आंदोलन तेजी से चला । जनता के इस आंदोलन को बहुत क्रूरता से कुचला गया था । जलियां वाला कांड इस बात का प्रमाण है । लार्ड इर्विन का जमाना आया । लाहौर कांग्रेस में नेहरू द्वारा पूर्ण स्वतंत्रता का आह्वान दिया गया था । आज़ादी का संघर्ष चलता रहा । देश का बटवारा हुआ, पाकिस्तान बना और भारत भी आज़ाद हुआ । तब भी इतिहास लिखा जाता रहा ।

ड्राइवर ने बताया था कि यह बस्ती बहुत संपन्न थी । इसे एक साधु ने बताया था । इस बस्ती में काम-धंधे खूब पनपे हुए थे । धरती सोना उगलती थी ।

-=: 113 :=-

बहुत अच्छा समय था । लोग एक दूसरे पर विश्वास करते थे । इस बस्ती में सरूपा नामक नौजवान सन्तो नामक खूबसूरत युवती से प्रेम करता था । दोनों की जाति अलग थी उन्हीं दिनों बस्ती में पुलिस चौकी बनने की बात हुई । आगरा जिला के हुक्कामों ने बस्ती में पुलिस की जरूरत नहीं थी । बस्ती में कभी कोई दंगा, चोरी व अन्य वारदात नहीं हुई थी । जिला अधिकारियों ने इन बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया । और गांव में चौकी बन गई । गांव में पुलिस आ गई तो पुलिस का दबदबा शुरू हुआ । बस्ती में लोगों के दो दल बन गए थे । एक वे जो पुलिस के पक्ष में थे और दूसरे विरोधी थे । पुलिस वाले [illegible] की तनखवाह कम थी । अपने परिवार का खर्चा वे बस्ती के सिर पर ही चलाते थे । एक दिन पता चला कि पुलिस इंस्पैक्टर दौरे पर आने वाले हैं । इसलिए बस्ती में पुलिस चौकी की सफाई के लिए लोगों को काम कर लगाया गया । सरूपा को भी बेगार के लिए पकड़ने का प्रयत्न किया गया लेकिन उसने काम करने से साफ इंकार कर दिया । बस्ती में आए लोगों की दावत की गई । सारा खर्चा महाजनों ने जुटाया था । पुलिस वाले सरूपा से चिढ़े बैठे थे । साहबों के जाते ही सरूपा को सरकारी लकड़ी काटने के अपराध में पकड़ा गया । गांव में वैद्य जी के घर चोरी हुई । मंदिर के पास आठ तोले गांजा निकला था ।

बस्ती में सरूपा की गिरफ्तारी का आतंक छाया हुआ था । उस पर मुकद्दमा चला पर वह छूट गया । फिर एकाएक सरूपा की पुलिस वालों से गहरी दोस्ती हो गई । उसकी दोस्ती का ऐसा रंग बस्ती वालों पर चढ़ा कि गांव में चोरी, बदमाशी होने लगी । मेलों में खुले आम गांजा-भांग बिकने लगी । देशी शराब की बोतलें आने लगी और पुलिस वालों का कमीशन बंध गया । एक दिन संतो ने जमना में डूबकर आत्महत्या कर ली । बस्ती में सन्नाटा छा गया । सरूपा भी नदी में कूद पड़ा वह सन्तों की लाश ढूंढने लगा । आखिर बहुत कठिनता से सरूपा को पकड़ कर किनारे लाया गया । इस घटना से चारों तरफ अजीब सी स्थिति हो गई । सरूपा गुमसुम रहने लगा । वह भीतर ही भीतर उबलता रहता । एक दिन दीवान जी की लाश पड़ी मिली । सरूपा उसके बाद दिखाई नहीं दिया ।

वह फरार हो गया था । दीवान जी की मृत्यु के बाद पुलिस ने बस्ती वालों पर जुल्म ढाने शुरु किए । निर्दोष लोगों को पीटा जाता । सल्मा की माँ को भी बहुत तंग किया गया । पूरी बस्ती में आतंक छा गया । धीरे-धीरे बस्ती को डाकुओं का इलाका करार दे दिया गया । बस बस्ती उजड़ती गई । काम-धंधे चौपट हो गए । लोग दूसरे गांवों में चले गए । सब तितर-बितर हो गया । बस्ती को बदनाम कर दिया गया था और बस्ती धीरे-धीरे उजड़ गयी ।

इस कहानी में स्वातंत्र्य-पूर्व भारत की जनता के मानवमूल्यों को प्रदर्शित कर स्वतंत्र भारत में व्याप्त भ्रष्टाचार का विवरण देकर मूल्यों का क्षरण चित्रित किया गया है । मूल्यों के ध्वंस की उत्तरदायी प्रशासनिक व्यवस्था है, यही इस कहानी का प्रतिपाद्य है । इस कहानी को प्राणवन्ता सामाजिक यथार्थ के उद्घाटन से मिली है । कहानी का कथ्य सामान्य होते हुए भी देश में घटित घटनाक्रम के समानांतर प्रस्तुतीकरण से कहानी में एक आकर्षण बना रहता है । इसमें देश के इतिहास को मद्देनजर रखते हुए कस्बे के विकास और पुलिस की कार्यव्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है ।

मेरी प्रिय कहानियाँ :-

इस संग्रह में आधुनिक युग व प्राचीन युग की परिवर्तित विचारधारा, नैतिक मूल्यों व स्थितियों का वर्णन किया गया है । व्यवस्था के खोखलेपन के प्रति विद्रोह का स्वर भी उभरा है । महानगरीय जीवन के अकेलेपन की संवेदना इस संग्रह की मुख्य विशेषता है ।

§1§ राजा निरबंसिया
§2§ खोई हुई दिशाएँ
§3§ गर्मियों के दिन
§4§ बयान
§5§ माँस का दरिया
§6§ नीली झील
§7§ नागमणि
§8§ तलाश
§9§ आसक्ति

§1§ राजा निरबंसिया :-

यह कहानी कमलेश्वरजी की इस दौर की सर्वाधिक प्रसिद्ध और चर्चित कहानी है । इस कहानी में आर्थिक विवशताओं द्वारा उत्पन्न दांपत्य संबंधों के तनाव, उन संबंधों का तिड़कना एवं आर्थिक मजबूरियों में अनुष्य की निस्सयता का बहुत सशक्त चित्रण हुआ है ।

यह कहानी लोक कथा से बुनी गई है । इसका सारांश यह है -- इस कथा में पहली कहानी वह है जो मां बच्चों को सुनाया करती थी । यह कहानी इस प्रकार है :-

एक राजा निरबंसिया था । उसके राज्य में बहुत समृद्धि थी । राजा की रानी बहुत खूबसूरत थी । राजा भी सुख से महल में रहता था । एक बार राजा शिकार को गया । सात दिन बीत गए, परंतु राजा नहीं लौटा । बहुत प्रतीक्षा के बाद रानी मंत्री के साथ राजा की खोज में गई । रानी ने बहुत ढूंढा परंतु राजा

न मिला । अंतत: वह निराश होकर महल में लौट आई । लौट कर रानी ने देखा कि राजा महल में वापस आ गया है । रानी की प्रसन्नता का पारावार न रहा । लेकिन राजा को रानी का इस तरह मंत्री के साथ जाना बिलकुल भी अच्छा नहीं लगा । राजा की इस प्रतिक्रिया को देखकर रानी ने राजा को समझाया कि वह राजा के प्रति अपने अथाह प्रेम के कारण ही स्वयं को मंत्री के साथ जाने से रोक न पाई । राजा-रानी एक दूसरे को बहुत चाहते थे । उनकी अभी तक कोई संतान नहीं थी । ऐसा लगता था कि राजवंश का दिपक बुझ जाएगा ।

राजा रोज सवेरे टहलने जाता था । एक दिन वह जैसे ही महल के बाहर पहुंचा कि सड़क पर झाडू लगाने वाली जमादारिन ने माथा पकड़ लिया और कहने लगी कि हाय राम । आज राजा निरबंसिया का मुख देख लिया, पता नहीं खाना भी नसीब होगा कि नहीं । यह सुनकर राजा का मन पीड़ा से भर गया । उसी क्षण वह महल को लौट आया । वह सारे वस्त्र उतारकर वन को चला गया । रानी ने स्वप्न देखा कि कल की रात उसकी मनोकामना पूर्ण होगी । जब उसे राजा के चले जाने का पता चला वह बहुत दु:खी हुई । वह राजा को खोजने लगी । एक भटियारिन का भेष बनाकर वहां पहुंची, जहां राजा ठहरे थे । उसने राजा के साथ रात बिताई तथा सुबह होते ही वापस लौट आई । राजा सुबह दूसरे देश को चला गया ।

एक वर्ष बाद राजा बहुत सा धन कमाकर गाड़ी में लाद कर अपने राज्य को वापस लौटा, राजधानी के निकट पहुंचते ही राजा की गाड़ी का पहिया पतेल की झाड़ी में उलझ गया । एक पंडित ने बताया कि "संकट" के दिन जन्मा बालक अगर अपनी सुपारी लाकर इसमें छुपा दे, तो पहिया निकल जाएगा । वहीं दो बालक खेल रहे थे । उन्होंने यह सुना तो कूद कर पहुंचे और कहने लगे कि हमारी पैदाइश "संकट" की ही है, पर सुपारी तब लाएंगे, जब तुम आधा धन देने का वादा करो । राजा ने बात मान ली । फिर अपने घर का रास्ता बताते-बताते आगे चलने लगे । आखिर गाड़ी महल के सामने रोक ली । राजा को बड़ा अचरज हुआ कि हमारे महल में यह बालक कैसे आ गए ? भीतर पहुंचे तो रानी खुशी से बेहाल हो गई । राजा ने उन बालकों के बारे में पूछा तो रानी ने बताया

कि वे उसी के बेटे हैं । राजा ने इस बात पर बिलकुल विश्वास नहीं किया । रानी को इस बात ने दु:खी किया ।

रानी ने अपने कुल देवता का स्मरण किया । कुल देवता उसकी तपस्या से प्रसन्न हो गए । उन्होंने अपनी शक्ति से रानी के दोनों बालकों को नवजात शिशुओं में बदल दिया । रानी के स्तनों में दूध भर आया । राजा को प्रमाण मिल गया । उन्होंने रानी से माफी मांगी और पुत्रों को स्वीकार किया । राजा ने फिर से काम काम संभाला । राज्य में अपने बेटे के नाम पर सिक्के चलवाए ताकि उसके राज्य भर में अगले उत्तराधिकारी की खबर पहुंच जाए ।

मां जब यह कहानी सुनाती थी, तो बच्चे आसपास बैठे कहानी खत्म होने पर फूल चढ़ाते ।

इस कहानी के साथ-साथ जगपती की कहानी भी चलती रहती ।

जगपती लेखक का बचपन का दोस्त था । मैट्रिक की पढ़ाई के बाद जगपती कस्बे के एक बकील का मुहर्रिर हो गया । उसकी पत्नी चंदा बहुत खूबसूरत थी । लेकिन चंदा के कोई संतान पैदा नहीं हुई । एक दिन जगपती अपने एक रिश्ते के भाई दयाराम की शादी में गया । जब वह वापस आने वाला था तो उसके घर डाका पड़ा । जगपती को भी गोलियां लगीं । किसी ने यह खबर चंदा को पहुंचायी । जब चंदा मनौतियां मांगती वहां पहुंची तो जगपती अस्पताल में था । जगपती की हालत के कारण चंदा भी अस्पताल में रुक गई । यह अस्पताल कस्बे का एकमात्र सरकारी अस्पताल था । अस्पताल की दवादारू बच्चनसिंह कंपाउन्डर के हाथ में थी । चंदा ने जगपति को बताया कि वह कड़े बेचकर दवाएं/उपलब्ध कराने के लिए उसने अपना शरीर कंपाउन्डर को बेचा । जगपति तंदुरस्त होकर अपने घर वापस लौट आया । नि:संतान व बेरोजगार होने की बात याद कर वह उदास हो जाता । घर आने पर जगपती को पता चल गया कि चंदा ने कड़े नहीं बेचे । तब भी जगपती का साहस न हुआ कि वह चंदा से पूछे कि उसकी दवाएं कहां से आई थीं । यदि सब यहीं तक रहता तो शायद स्थिति न बिगड़ती । जगपती बेरोज़गार हो गया था और अब उसे रुपयों की जरूरत थी । वह सोचता पत्नी से कड़े मांग ले । और बेचकर जो पैसा मिले तो उससे कोई काम शुरू करे । परंतु जब भी चंदा उसके सामने आती तब वह बात करने की हिम्मत न कर पाता । बच्चनसिंह की बदली भी उनके

कस्बे में ही हो गयी थी । बच्चनसिंह चंदा के पास उसके घर आने-जाने लगा । जगपती को यह पता था, फिर भी उसने कभी कुछ भी न पूछा । चंदा ने एक दिन जगपती से बच्चनसिंह की शिकायत की तो जगपती बोला कि वह आडे वक्त काम आने वाला आदमी है । धीरे-धीरे बच्चनसिंह ने आर्थिक सहयोग देकर जगपती के लिए लकड़ी की टाल खुलवा दी । जगपती का धंधा जम गया । उसे पता चला कि चंदा मां बनने वाली है तो वह उदास होकर पड़ा रहा । उसका मन किसी भी काम में नहीं लगा । जगपती व चंदा कभी भी स्पष्ट बात-चीत न कर सके थे । चंदा ने अपने मायके जाने का निर्णय लिया । उसने जगपती से कहा कि उसने तो चंदा को बेच ही दिया था । अब वह मायके जा रही है ।

कुछ समय पश्चात जगपती को पता चला कि उसका पुत्र हुआ है । पर वह अपने गांव के ही किसी मधुसुदन नामक व्यक्ति से विवाह करना चाहती है, पर पैदा हुआ बालक बाधा है । वे चाहते हैं कि बच्चा मर जाए, तो रास्ता खुले । किंतु जो ईश्वर की इच्छा होगी वहीं होगा ।

जगपती ने यह खबर सुनी तो वह परेशान हो गया कि उसने ही तो चंदा की ऐसी नारकीय स्थिति के लिए विवश किया है । दु:ख, पश्चाताप व ग्लानि के कारण उसने अपनी लकड़ी की टाल बेच डाली तथा अफीम खाकर आत्महत्या कर ली ।

जगपती मरने से पहले दो पत्र लिख कर छोड़ गया । एक चंदा के नाम, जिसमें उसने पश्चाताप किया था और अपनी अंतिम इच्छा लिखी थी कि वह बच्चे को लेकर वापस आ जाए । दूसरा पत्र उसने कानून के नाम लिखा था कि उसको किसी ने नहीं मारा । उसने रुपये खाए थे, उन्हीं रुपयों का जहर खा लिया था । उसने लिखा था कि उसकी लाश तब तक न जलाई जाए जब तक चंदा लड़के को लेकर न आ जाए । और चिता को आग भी उसके बालक के हाथ से दिलवाई जाए ।

(2) <u>खोई हुई दिशाएँ</u> :-

यह कहानी संग्रह लेखक के दिल्ली आने के बाद की कहानी है । इन कहानियों में महानगरों के परिवेश की क्रूर, स्वार्थी, अजनबीपन से भरी महानगरीय

चेतना की अभिव्यक्ति है । यह कहानी महानगरीय अजनबीपन पर लिखी गयी कहानी है ।

यह इस संग्रह की दूसरी कहानी है । इस कहानी का कथासार यह है- इस कहानी का नायक चन्दर को अपने कस्बे से इस शहर में आए हुए तीन वर्ष हो गए हैं । दिल्ली जैसे बड़े शहर में वह कस्बाई आत्मीयता ढूंढता है । लेकिन इतने बड़े शहर में उसे कोई भी आत्मीय नहीं मिलता । उसे लगता है वह एक दम अकेला है । इस अजनबियत के कारण उसे अपना कस्बा याद आता है । वह सोचता है कि यदि वहां वह गंगा के सुनसान किनारे पर भी चला जाए तो भी उसे वहां कोई न कोई परिचित मिल जाएगा । लेकिन यह शहर तो राजधानी है । सारे देश के लोग यंत्रवत् चलते रहते हैं । कोई भी कहीं नहीं रुकता, किसी के लिए भी नहीं ।

चन्दर सोचता है कि सड़कों के किनारे घर व बस्तियां हैं तो भी वह किसी के घर नहीं जा सकता । उसे लगता है कि घर जाकर भी उसे अपनापन प्राप्त नहीं हो सकेगा, क्योंकि उसका छोटा सा घर है और उसकी पत्नी के पास पड़ोस की कोई स्त्री बैठी होगी । वह जिस गली में रहता है वहीं एक गैराज है और एक ही मैकेनिक पन्द्रह वर्षों से काम कर रहा है, लेकिन उस गैरेज के मालिक को उस मैकेनिक पर विश्वास नहीं है । चन्दर को मालिक का यह व्यवहार बहुत खटकता है ।

चन्दर के पड़ोस में किशन कपूर रहता है, जिसे वह आज तक देख भी नहीं पाया है । उसने हमेशा अपने दरवाजे पर नेमप्लेट टंगी देखी । उसके मन में दो साल बाद भी पड़ोस के व्यक्ति को न पहचान पाने का दुःख है । डाक खाने, बैंक तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भी उसे लोगों का व्यवहार बहुत कृत्रिम लगता है । चन्दर को आये तीन साल हो गए हैं और जीवन यंत्रवत् चलता रहा है । यहां कोई भी ऐसा कुछ विशेष नहीं है जिसे संजोकर रखा जा सके । कोई खुशी या दर्द ऐसा नहीं है जो उसे इस शहर ने दिया हो । उस शहर में उसके जितने भी मित्र बने हैं उन सबका व्यवहार कृत्रिमता व औपचारिकता से भरा हुआ है । ये मित्र हमेशा किताबी भाषा बोलते हैं और फिल्मी मजाक करते हैं ।

इस शहर में रहकर उसे जीवन के वे क्षण याद आते हैं, जब वह अकेला नहीं था । उसे इन्द्रा की याद आती है । उसे वह समय याद आता है जब वह और इन्द्रा जीवन भर साथ रहने का स्वप्न संजोते थे । इन्द्रा उसकी प्रतिभा को

पहचानती थी तथा उसकी प्रेरणा की स्त्रोत थी । इन्द्रा का विवाह कहीं और हो गया था किंतु वह तब भी उसका बहुत ख्याल रखती थी । विवाह होने के बाद भी वह जानती है, पहचानती है । उसे लगता है कि उस शहर में इन्द्रा ही उसकी परिचित है ।

इसी अजनबीपन से बचने के लिए वह इन्द्रा के घर जाता है । उसे वहां भी औपचारिक्ता की बू आती हैं । इन्द्रा भी यह भूल गई कि वह कैसी चाय पीता है । इन्द्रा के ऐसे व्यवहार से वह क्षुब्ध हो जाता है जिस ऑटोरिक्शा पर वह इन्द्रा के घर जाता है उसके चालक सरदार की आँखों में वह अपनापन देखता है तथा कम पैसे देता है लेकिन वह सरदार पूरे पैसे मांग कर उसका मन तोड़ देता है । अंत में वह घर पहुंचता है । उसकी पत्नी उससे खाने के लिए पूछती है । तब उसे लगता है कि कम से कम एक ही जगह बची है, जहां अपनापन बाकी है लेकिन उसके मन में भरा हुआ अपरिचय का भूत उसे आराम से सोने भी नहीं देता और वह सोए हुए में ही अपनी पत्नी को झिंझोड कर जगा देता है और पूछने लगता है कि क्या वह उसे पहचानती है या नहीं ।

कस्बे से आया हुआ चन्दर महानगर में आकर अपने को निपट अकेला और अजनबी अनुभव करता है । वह कस्बे का सामाजिक परिचय वाला, संस्कार लेकर महानगर में भटकता है । लोगों से निश्छल सम्बन्धों की अपेक्षा करता है किन्तु यहां अजनबीपन निरंतर डराता रहता है । हां, यहां पहचान के बिना भी एक व्यवसायिक पहचान व्याप्त है । पड़ोसी अजनबी है, समाज अजनबी है, शासन अजनबी है किन्तु विडंबना यह है कि चन्दर के अकेलेपन में सभी अपने ढंग से दखल देते हैं । घर पहुंचकर पत्नी से एकान्त सुख पाना चाहेगा किन्तु पड़ोसिन मिसेज गुप्ता वहां जमी हुई गपशप कर रही होगी, और पुलिस का आदमी इधर से उधर घूमता हुआ सबकी तनहाई में दखल देता रहता है । आदमी अपनी शख्सियत से कटकर भी तनहा हो गया है यानी उसका असली रूप उसके साथ नहीं रहा ।

मातृत्व के व्यक्ति से अजनबी बनी माताएँ, उनकी आरोपित खुमार की ललकार और इस ललकार से लोगों की निरसंगतता का चित्र महानगर का चित्र है ।

-=: 121 :=-

महानगर में व्याप्त अजनबीपन को महानगर का निवासी कम अनुभव करता है, नया-नया गाँव या कस्बे से आनेवाला अधिक । पुष्पपाल जी का कहना है कि "खोई हुई दिशाएं" एक महत्वपूर्ण कहानी होने पर भी बहुत जोड़-तोड़ की कहानी है । महानगर की यान्त्रिक जिन्दगी को स्थापित करने के लिए यह कहानी खुद भी यान्त्रिक हो गयी है । लगता है कि संवेदना के स्थान पर अवधारणा प्रमुख हो गयी है । जैसे- लेखक ने सोच लिया हो कि महानगर की यान्त्रिक और अजनबीपन पर कहानी लिखनी है, फिर उसने उसके फारमूले तैयार किये हों, उसके अलग-अलग पार्टस सोचे हों, फिर उन्हें चन्दर के माध्यम से जोड़ दिया हो । यह कहानी पूरा एक पीस नहीं मालूम पड़ती । और कहानी अपने अन्त में अत्यन्त नाटकीय हो उठती है, जो कहानी की विश्वसनीयता और सहजता को आहत करती है ।

§3§ <u>गर्मियों के दिन</u> :-

यह इस संग्रह की तीसरी कहानी है । इस कहानी में कमलेश्वरजी ने जीवन में व्याप्त झूठी आत्म प्रदर्शन की प्रवृत्ति के खोखलेपन का सूक्ष्म चित्रण किया है।

इस कहानी में एक कस्बे में भी कुछ अन्य डॉक्टरों के साइन बोर्ड देखकर दुकान पर साईन बोर्ड टंगे ही दीखते हैं । वैद्य जी स्वयं को स्पर्धा से काट कर नहीं रखना चाहते । वैद्यजी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है । बोर्ड के बिना प्रतिष्ठा भी तो नहीं है । अत: उन्होंने बिना खर्च किये ही यह काम करवा लेने के लिए चन्दर को पकड़ा । साइन बोर्ड बनाने के लिए एक मरीज रंग दे गया था । साइन बोर्ड की एक पंक्ति वैद्यजी ने स्वयं लिख दी । बाकी काम उन्होंने चन्दर को सौंप दिया ।

वैद्यजी की दूकान में मरीज अधिक नहीं आते । इसलिए वह तहसील आफिस के रजिस्टर भरने का काम करते हैं । गर्मियों के दिनों में भी विवशता के कारण यह काम करना पड़ रहा है । साथ ही साथ वह मरीजों की भी प्रतीक्षा करते हैं । जैसे ही कोई मरीज दिखने वाला व्यक्ति दिखाई देता है तो वे झूठी ही बड़प्पन की बाते करते हैं कि उन्होंने एक बोर्ड आगरा से बनवाया है, जब तक वह बोर्ड नहीं आता, वे इसी बोर्ड से काम चला रहे हैं । अपनी व्यवस्था जताते

हुए वे कहते हैं कि इन सब बेकार के कामों में सिर खपाने की उनके पास कहां फुरसत हैं। बड़ी मुश्किल से एक आदमी आता है उसे झूठे डॉक्टरी सर्टिफिकेट की आवश्यकता है। वह उस व्यक्ति को देखकर खुश हो जाते हैं और इस काम के लिए चार रुपये मांगते हैं। वह व्यक्ति दो रुपये देने को तैयार है। वह उस आदमी के सामने अपनी व्यवस्था का नाटक करते हैं तथा उस आदमी को बताते हैं कि झूठा सर्टिफिकेट देने में कितना खतरा है। वैद्यजी चार रुपये लेने की बात पर ही अड़े रहते हैं। वह व्यक्ति चुपचाप चला जाता है। तब वैद्यजी मन ही मन पश्चाताप करते रहते हैं। वह अपने मन को समझाते हैं कि वह व्यक्ति लौट कर फिर आएगा।

गर्मियों की दोपहर की और गर्मी बढ़ती ही जा रही है। आसपास के सभी दुकानदार दुकानें बंद करके घरों को खाना खाने व आराम करने जा रहे थे। परंतु वैद्यजी उसी व्यक्ति की प्रतीक्षा में दुकान पर ही बैठे रहे। वह रोज की तरह घर नहीं गए। आज दिन भर उनकी कमाई नहीं हुई। इसी कारण वह आज घर नहीं जाना चाहते। आसपास के दुकानदारों ने पूछा कि वैद्यजी आज घर नहीं गए तो उन्होंने कहा कि बस जरा काम कर रहे थे। देर तक मन मार कर काम करते रहे, पर, फिर उनको भूख लग गई। उनके पास पैसे भी नहीं थे। अतः खाना कैसे खाते। फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं छोड़ी और पानी पीकर ही काम पर जुट गए।

हमारा जीवन व्यर्थता बोध, निरर्थकता, खोखलेपन तथा झूठे प्रदर्शन की प्रवृत्ति से भर गया है। नये मूल्य शहरों से धीरे-धीरे कस्बों व गाँवों में पहुंच कर वहां के जीवन में भी हलचल मचा रहे हैं। नये शहरी मूल्यों से कस्बाई जीवन किस प्रकार आक्रांत हो रहा है। इस कहानी में इस कथ्य को ही स्पष्ट किया गया है। इस प्रकार पुराने तरीकों और नए तरीकों में एक तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई है।

शहरों में विज्ञापनों की भरमार ने किसी भी क्षेत्र को नहीं छोड़ा है। डॉक्टर तक इसकी चपेट में आ गए हैं। शहरों से यह प्रवृत्ति गाँवों में आ गई है। कस्बों में साइनबोर्ड लगाने के पीछे जो अभिप्राय है, वह नहीं समझा गया अपितु उससे अर्थ लगाया गया है, "औकात बढ़ाना"। वैद्यजी साइनबोर्ड का महत्व लोगों

को समझाते हुए कहते हैं कि "बगैर पोस्टर चिपकाए सिनेमावालों का भी काम नहीं चलता । बड़े-बड़े शहरों में जाइए, मिट्टी का तेल बेचने वाले की दुकान पर साइनबोर्ड मिल जाएगा । बाल-बच्चों के नाम तक के साइनबोर्ड हैं, नहीं तो नाम रखने की ज़रूरत क्या है ।"§1§

प्रगति के इस युग में सनातनी अविचारों वाले लोग अपनी ही परम्परा पकड़ कर बैठे हैं । वह प्रत्येक क्षेत्र में पिछड़ रहे हैं । फिर भी वह अपनी पुरानी शान को बरकरार रखने की असफल कोशिश कर रहे हैं जबकि उनको जमाने के साथ चलना चाहिए । वैद्यजी अन्य डॉक्टरों की निंदा करते हैं । अपनी पराजय को वह निंदा के माध्यम से व्यक्त करते हैं । वैद्यजी के यहां मरीज़ नहीं आते, फिर भी वह हर समय अपनी व्यस्तता की ही बात करते रहते हैं, लेकिन वास्तविकता इसके विपरीत है । आज उनके पास एक भी मरीज नहीं आया । हर आने वाले व्यक्ति को वह बड़ी आशा से देखते हैं पर जब वह मरीज़ नहीं होता तो निराश हो जाते हैं । अंततः वह निराशा में सोचते हैं कि "हो सकता है, कल यही आदमी बीमार पड़ जाए या इसके घर में किसी को रोग घेर लें ।"§2§

बस वे अपने ही व्यवसाय का महत्त्व सिद्ध करते रहते हैं- "हकीम वैद्यों की दुकान दिन भर नहीं खुली रहती । व्यापारी घोड़े ही हैं भाई ।"§3§

जब एक व्यक्ति उन्हें बताता है कि सुखदेव ने बुधईवाला इक्का घोड़ा खरीद लिया है तब वे कहते हैं- "ये सब जेब कतरने का ही तरीका है । मरीज़ से किराया वसूल करेंगे । सईस को बख्शिश दिलवाएंगे । बड़े शहरों के डॉक्टर की तरह । इसी से पेशे की बदनामी होती है ।...... अंग्रेजी आले लगाकर मरीज़ की आधी जान पहले सुखा डालते है ।"§4§

वैद्यजी इन अंग्रेजी दवावालों से बहुत परेशान हैं । उनकी प्रत्येक बात वैद्यजी जरूर काटते हैं । उनका कहना है कि अंग्रेजी दवा तो कोई भी देना सीख सकता है । उसमें मेहनत और बुद्धि की आवश्यकता नहीं होती । वह हर बार

---

§1§ कमलेश्वर : "मेरी प्रिय कहानियां": "गर्मियों के दिन" - पृष्ठ-58.
§2§ कमलेश्वर : पूर्वोक्त - पृष्ठ-58.
§3§ कमलेश्वर : पूर्वोक्त - पृष्ठ-59.
§4§ कमलेश्वर : पूर्वोक्त - पृष्ठ-48.

आयुर्वेद की तारीफ करते हैं- "आयुर्वेद नब्ज़ देखना तो दूर चेहरा देख के रोग बताते हैं ।"§1§ एक स्थान पर कहते हैं "डॉक्टरी तो तमाशा बन गई है । वकील मुख्तार के लड़के डॉक्टर होने लगे । खून और संस्कार से बात बनती है- हाथ में जस आता है । वैद्य का बेटा वैद्य होता है ।"§2§

प्रगति के प्रवाह के साथ-साथ जो लोग नहीं चल सके हैं उनके व्यक्तित्व में इस तत्व की भरमार है । प्रतिभा के अभाव में अपनी प्रतिष्ठा को सिद्ध करने के लिए वह पर निंदा का आश्रय लेते हैं । वे अपना दुःख अलग-अलग पद्धतियों से व्यक्त करते हैं । क्योंकि यथार्थ को सीधे झेल पाने का साहस उनमें नहीं है । इसलिए वैद्यजी एम.बी.बी.एस. डॉक्टरों की निंदा करते हैं । इससे उन्हें शांति मिलती है । वह यथार्थ को भूलकर कल्पना में जीते हैं । कल्पना भी है तो आत्म प्रशंसा की । कहानी में पिछड़ गई जीवन-पद्धतियों की निस्सारता को उजागर करते हुये उनकी दयनीय स्थिति को उभारा गया है ।

§4§ बयान :-

इस कहानी की चर्चा "बयान तथा अन्य कहानियां" में की जा चुकी है ।

§5§ माँस का दरिया :-

इस कहानी की चर्चा "माँस का दरिया" में की जा चुकी है ।

§6§ नीली झील :-

इस कहानी की चर्चा भी "माँस का दरिया" में की जा चुकी है ।

§7§ नागमणि :-

इस कहानी की चर्चा "बयान तथा अन्य कहानियाँ" में की जा चुकी है ।

§8§ तलाश :-

इस कहानी की चर्चा "श्रेष्ठ कहानियां" में की जा चुकी है ।

§9§ आसक्ति :-

इसकी चर्चा "बयान तथा अन्य कहानियाँ" में की जा चुकी है ।

---

§1§ कमलेश्वर : पूर्वोक्त - पृष्ठ-58.
§2§ कमलेश्वर : पूर्वोक्त - पृष्ठ-58.

खोई हुई दिशाएँ :-

यह संग्रह परिवर्तित मानवीय संबंधों की संवेदना को अभिव्यक्ति देता है । प्रशासन की अकुशलता भी चित्रित की गई है । नगरीकरण व महानगरीय जीवन का अकेलापन बहुत मार्मिक रूप में वर्णित हुआ है ।

§1§ एक अश्लील कहानी

§2§ प्रेमिका

§3§ खोई हुई दिशाएँ

§4§ जार्ज पंचम की नाक

§5§ पीला गुलाब

§6§ दिल्ली में एक मौत

§7§ एक थी बिमला

§8§ साँप

§9§ एक रूकी हुई ज़िन्दगी

§10§ दुःख भरी दुनिया

§11§ पराया शहर

§1§ एक अश्लील कहानी :-

इस कहानी में"अश्लील" जैसा कुछ नहीं है । यहां चन्द्रनाथ के किशोर मन के रोमानी प्रेम की आदर्शात्मक परिणति दिखाई गई है जिसमें वह कुन्ती को उसके पति द्वारा निर्वासित किए जाने पर अपनी कमीज देकर उसे "माँ" सम्बोधन का वास्ता देकर शरीर ढकने की मिन्नत करता है । इससे पूर्व उसमें कुन्ती के शरीर के पोर-पोर को अपनी खिड़की से देखने की आत्मतल्लीनता है । इस प्रकार के अस्वाभाविक अन्त से कहानी एक सामान्य रोमानी प्रेम-कहानी बनकर रह गई है ।

इसका कथासार यह है :- लेखक और चन्द्रनाथ एक ही घर में रहते थे । उसके सामने वाले घर में कुंती नामक महिला रहती थी । वह बहुत परेशान थी । उसका पति उससे ठीक व्यवहार नहीं करता था । चंद्रनाथ बेरोज़गार था और सारा दिन कुंती की गतिविधियों का ध्यान रखता था । वह कुंती को लेकर भाग जाने की कल्पना करता रहता था । एक दिन कुंती के घर में एक घटना घटी । चंद्रनाथ को कुंती तथा

उसके पति की लड़ाई की आवाजें सुनाई देने लगी । चंद्रनाथ यह सब सुनकर बौखलाता जा रहा था । वह कुंती के पति से लड़ना चाहता था लेकिन लेखक ने समझा बुझा कर उसे रोक लिया । कुंती तथा उसके पति का युद्ध बढ़ता ही जा रहा था । तब चंद्रनाथ सोचने लगा कि यदि कुंती के पति ने कुंती को घर से निकाल दिया तो वह उसे अपने साथ रख लेगा । कुंती के पति ने सामान फेंक कर और उस की साड़ी खींचकर उसे घर से बाहर निकाल दिया था । कुंती का आधा शरीर नंगा हो गया । तभी चंद्रनाथ ने अपनी कमीज़ उतारकर कुंती को ओढ़ने के लिए दी । कुंती वह कमीज़ नहीं ओढ़ रही थी । वह चंद्रनाथ को वहां से हट जाने के लिए कह रही थी । चंद्रनाथ को कुछ नहीं सूझा तो उसने अचानक कुंती को कहा, "मां तुझे अपने बेटे की कसम । ढ़क ले मां" उसे लगा शायद यही रिश्ता रह गया है जिससे वह अपनत्व जता कर उसका शरीर ढक सकता है । तब उसने कुंती को गठरी की तरह उठाकर दरवाज़े के भीतर कर दिया । इस घटना के बाद वह बहुत ही उदास हो गया ।

इस कहानी में पुरुष प्रधान समाज में नारी पर होने वाले अत्याचार का यथार्थ भी उपस्थित हुआ है । कुंती जब तक पति की गतिविधियों को चुपचाप सहती है तब तक तो वह उसे कुछ नहीं कहता पर जैसे ही वह अपने साथ हो रहे अत्याचार के प्रति जागरूक होकर अधिकारों की मांग करती है तो उसका पति उसे पीटता है तथा घर से निकाल देता है । यहां पर संकेतात्मक रूप से नारी वर्ग का विद्रोही स्वर उभरा है वही इस कहानी की आधुनिकता है ।

§2§ प्रेमिका :-

संग्रह की इस दूसरी कहानी का कथासार यह है :- मुंशीजी की बेटी कमला वीरेन्द्र से प्रेम करती थी । एक दिन कमला के भाई के दोस्त ने कमला के भाई को बता दिया कि वह वीरेन्द्र को चोरी-चोरी खत लिखती है । कमला के भाई ने कमला को बहुत डांटा । उसी दिन कमला ने तीन पत्र लिखे । पहला पत्र अपने भाई को लिखा तथा सौगंध खाकर स्पष्टीकरण दिया कि वह किसी वीरेन्द्र को नहीं जानती । उसने यह प्रतिज्ञा भी की कि वह कुल की लाज को आंच न

आने देगी । दूसरा पत्र उसने भाई के मित्र रतन भाई को लिखा जिसने उसके भाई से उसकी चुगली की थी । उस पत्र में उसने पथ-प्रदर्शन के लिए रतन भाई का धन्यवाद किया । तीसरा पत्र उसने वीरेन्द्र के नाम लिखा कि रतन ने उसके भाई से उसकी शिकायत की है । उसने विरेन्द्र को अपने प्रेम का पूर्ण विश्वास दिलाया तथा लिखा कि उसके प्रेम का दीपक कभी न बुझेगा । तीनों पत्र लिख कर उसने अपने पास रख लिए । मौका पाकर भाई का पत्र उसकी टेबुल पर रख दिया । जब रतन आया तो उसका पत्र उसे दे दिया । और तीसरा पत्र भेजने के लिए उसने अपने सबसे छोटे भाई को लेमनजूस का लालच दिलवा कर विरेन्द्र के घर भिजवा दिया ।

इस कहानी में नाबालिग बालक बालिकाओं के प्रेम संबंधों का चित्रण है । भाई के डांट पर भी उसे कोई भय नहीं लगता । रतन उसके भाई से उसके प्रेम संबंध की चुगली करता है । कमला को लगता है कि रतन और उसका भाई जो उसे प्रेम करने से रोकते हैं वही समाज हैं और उसे अनुभव होता है कि समाज प्रेम में बाधक है । तब भी वह बिना किसी भय की परवाह किये वीरेन्द्र को लिखती है और इस प्रकार उनका प्रेम संबंध बढ़ता ही चला जाता है । इस कहानी में मनुष्य के चरित्र के छद्म को वाणी दी गई है ।

§3§ खोई हुई दिशाएँ :-

इस कहानी की चर्चा "मेरी प्रिय कहानियाँ" में हो चुकी है ।

§4§ जार्ज पंचम की नाक :-

इसकी चर्चा "जिंदा मुर्दे" संग्रह में हुई है ।

§5§ पीला गुलाब :-

इस कहानी का नायक आनंद अपने पिता के एक मेजर मित्र के घर में रह कर पढ़ाई कर रहा है । उस परिवार के दंपति की दो बेटिया थी । बड़ी शुभा और छोटी प्रभा । शुभा का विवाह हो चुका था परंतु वह पति से अलग अपने माता-पिता के पास ही रहती थी । उसके माता-पिता इस आस पर थे कि कभी शुभा अपने घर वापस ज़रूर जाएगी । शुभा के कारण ही प्रभा का विवाह

रुका था । शुभा हमेशा कहती रहती थी कि प्रभा का विवाह हो जाना चाहिए । मेजर साहब, उनकी पत्नी, शुभा सब यही चाहते थे कि प्रभा का विवाह आनन्द से हो जाए । इस संबंध की स्वीकृति लेने के लिए मेजर साहब आनंद के पिता के पास गए थे । आनन्द के पिता को यह संबंध मंजूर था । तब से घर में चहल-पहल हो गई थी । शुभा व उसकी मां व पिता प्रसन्न दिखाई देते थे । शुभा आनंद से छेड़छाड़ भी करने लगी थी । आनंद के कमरे में रोज़ कोई पीला गुलाब लगा देता था । वह यह जानना चाहता था कि यह किसकी पसंद है पर उसे ठीक तरह से पता न चल सका । आनंद को भी पीले रंग का गुलाब बहुत अच्छा लगता था । उसकी पसंद का रंग शुभा ने पहचान लिया था और इसीलिए वह रोज़ उसके कमरे में पीला गुलाब लगा दिया करती थी । लेकिन एक दिन शुभा की मृत्यु हो गई । सब कुछ उदासी में बदल गया ।

समय बीतने के साथ-साथ आनंद व प्रभा भी सामान्य हो गए थे । प्रभा ने आनंद की पसंद पहचान कर घर में खूब सारे गुलाब लगवाए । आनंद ने भी एक पीला गुलाब बोया था । उसे यह संदेह बना था कि कहीं माली ने उसका पीला गुलाब न तोड़ दिया हो । पौधों के बड़े होने तथा कलियों के खिलने तक का समय उसने बहुत बैचेनी से काटा और जब गुलाब खिले तो वे सारे गुलाब पीले रंग के थे । इस कहानी में असफल दांपत्य के साथ-साथ प्रेम-संबंधों की रोमांटिकता को अभिव्यक्त किया गया है । पीला गुलाब समर्पण का प्रतीक है ।

§6§ <u>दिल्ली में एक मौत</u> :-

इस कहानी में दिल्ली में हुई मौत के प्रति महानगरीय जनता के सर्द रुख को चित्रित करने वाली एक अच्छी कहानी है । किन्तु परिस्थितियों के परिवर्तन से महानगर के वे ही लोग एक और मौत पर कितने संवेद्य एवं मानवीय हो उठते हैं- इसका चित्रण कमलेश्वरजी ने किया है ।

इसका कथासार यह है :- दिल्ली में करोल बाग के प्रसिद्ध व्यापारी सेठ दीवानचंद की मृत्यु हो गई थी । उनकी शवयात्रा निकलनी थी । अतुल, मवानी, बासवानी, सरदारजी सब लेखक के पड़ोसी है । उनकी दिनचर्या उसी गति से आरंभ हुई, जिस प्रकार अन्य दिनों में होती है । अतुल मवानी अपने कपड़े प्रेस करने के

लिए प्रेस का जुगाड़ कर रहा है । सरदारजी के यहां नाश्ते की तैयारी हो रही है । और वासवानी की बीबी रोज़ की तरह आज भी देर से उठी है । इन सबको देखकर लेखक सोचता है कि ये सभी भी शवयात्रा में नहीं जा रहे । उसे लगता है कि अच्छा हुआ, नहीं तो उसे भी सर्दी में सुबह-सुबह जाना पड़ता । लेकिन वह तो लेखक का भ्रम ही था । सब लोग सजधज के शवयात्रा में भाग लेने ही जा रहे थे । शवयात्रा में चलते हुए भी सब लोग अपनी बातों में मस्त हैं । मिसेज वासवानी शाम को किसी सहेली से मिलने का कार्यक्रम बना रही है । वासवानी मवानी के सूट की तारीफ कर रहा है । लेखक बेचारा इस सबके बीच बहुत कोफ्त महसूस कर रहा है ।

महानगरीय संस्कृति में लोग एक दूसरे से इतने कटे हुए हैं कि मौत के उदास वातावरण में भी एक दूसरे से जुड़ नहीं पाते । शवयात्रा में शामिल होना एक औपचारिकता बन कर रह गई है । मरने वाले को उसके मरने के साथ ही भुला दिया जाता है । संबंधों के बीच यह विचित्र सा भाव पैदा हुआ वह पहले के गांवों व बस्तियों में रहनेवाली जनसंख्या में नहीं था । लोग संवेदनाहीन हो गए हैं । यही संवेदना हीनता यहां पर आधुनिकता के सूत्र के रूप में उभरी है ।

(7) <u>एक थी बिमला</u> :-

इस संग्रह की इस सातवीं कहानी में लेखक ने नारी-जीवन के यथार्थ का अंकन किया गया है । इस कहानी की चार महिला पात्र समाज में नारी की विभिन्न स्थितियों का अंकन करती हैं । पहली युवती बिमला है । वह अमीर बाप की नहीं थी । वह बहुत शालीन युवती है । वह घर के हालात समझती है । वह यह सोचती है कि पढ़ाई समाप्त करने के बाद वह अपने पिता की सहायता के लिए नौकरी करेगी । उसके पिता सोचते हैं कि पढ़ाई पूरी कराने के बाद वह बेटी की शादी करेंगे ।

इस कहानी की दूसरी युवती है कुंती । उसके पिता की मृत्यु हो गई थी । घर की सारी ज़िम्मेदारी कुंती के कंधों पर ही था । कुंती की मां बीमार रहती थी । कुंती की आय का भी कोई साधन न था । अतः उसे विवश होकर मां के जेवर बेचने पड़े फिर धीरे-धीरे घर के छोटे-बड़े बर्तन भी बिक गए । इस

कारण बलवंतराय से उसकी जान पहचान हुई थी । लेकिन उसने कभी भी बलवंतराय को इतनी छूट नहीं दी कि वह फालतू बात कर सके । एक दिन घर में बेचने के लिए कुछ भी न बचा तो उसी बलवंतराय के आगे उसे बीस रूपये के लिए हाथ पसारना पड़ा ।

इस कहानी का तीसरा पात्र है लज्जा । लज्जा एक फ्लेट में रहती है । उसके पास कोई कार नहीं है, पर वह हमेशा कार या टेक्सी से ही आती जाती है । वह बड़े होटल में रिसेप्शनिष्ट है । उसके आस-पास रहने वाले लोग उसके बारे में बहुत सारी बातें करते हैं तथा शक की निगाहों से देखते हैं । लज्जा का घर सुविधा-संपन्न है । घर में किसी प्रकार की कमी नहीं है । लेकिन उसका परिवार वहां चोरों की तरह रहता है । उसके परिवार के लोग आस-पास के लोगों के साथ नहीं मिलते-जुलते । एक दिन वह बहुत रात गए एक व्यक्ति के साथ कार में बैठ कर घर लौटती है । वह उस व्यक्ति को लेकर अपने घर आती है तथा उससे आग्रह करती है कि वह उससे विवाह कर लें । यह प्रस्ताव सुनकर वह व्यक्ति साफ इंकार कर देता है ।

चौथा पात्र है सुनीता । सुनीता अपनी एक नौकरानी के साथ रहती है । वह नर्स है । उसे अपनी नौकरी वीरान सी लगती है । उसके पास अपने बीते हुए जीवन की स्मृतियां हैं जो उसके एलबम में लगी है । उसे अपना अकेलापन बहुत खलता है । वह किसी से भी बात नहीं करती । अपना दिल लगाए रखने के लिए वह कुत्ता पाल लेती है या कभी बिल्ली ले आती है । एक बार उसकी नौकरानी ने बताया कि डबलरोटी वाला लंगड़ा आदमी सुनीता को लेकर अश्लील मज़ाक करता है । सुनीता सोचती रही कि लंगड़े आदमी को जीवन बिताने के लिए मज़ाक का आश्रय लेना ही पड़ता है । वह सोचने लगी कि भगवान और किसी को भी लंगड़ी जिंदगी न दे ।

"एक थी बिमला" कहानी शिल्प-स्तर पर एक विशिष्ट कहानी है जिसमें चार कथा-खंडों से एक कहानी बुनी गई है । पहला मकान बिमला का घर, दूसरा मकान-कुन्ती का घर, तीसरा मकान- लज्जा का घर और चौथा मकान- सुनीता का घर- इन चार मकानों में रहने वाली लड़कियों की संघर्षभरी जिंदगी का चित्रण करता हुआ लेखक हर कहानी के अन्त में यह बताता है कि इस प्रकार

इस लड़की की तरह हज़ारों लड़कियां जिंदगी के संघर्ष में जूझ रही हैं । हर कथा-खंड का अंत लगभग एक जैसे शब्दों और वाक्यों से किया गया है जो कहानी शिल्प में एक नूतन प्रयोग है ।

यह कहानी आधुनिक समाज के विभिन्न वर्गों की नारियों के जीवन विसंगतियों व त्रासदियों से पूर्ण है । बिमला, कुंती, सुनीता व लज्जा सभी अलग-अलग स्थितियों में जी रही हैं । इस कथा में चार विभिन्न स्थितियों में एक बात सदैव समान रही हैं और वह है पुरुषों का नारियों के प्रति गलत दृष्टिकोण । चार युवतियों को पुरुष विचित्र निगाहों से देखते हैं तथा इनसे संबंध बढ़ाना चाहते हैं । इस प्रकार इस कहानी में पुरुषों की गंदी मानसिकता का चित्रण हुआ है । आज भी पुरुष-प्रधान समाज में नारी की स्थिति कितनी दयनीय है, यही इस कहानी का प्रतिपाद्य है ।

§4§ साँप :-

यह कहानी भी एक प्रेम कहानी है । इस कहानी में दो पात्र है- आनंद और इंदू । आनंद किसी डाक बंगले में रुका था । रात को चौकीदार आया और उसने मोमबत्ती जला दी थी तथा आनंद को सांपों के प्रति सचेत कर दिया था । आनंद ने सांप के भय से कमरे के सभी दरवाज़े बंद करवा लिए थे । आनंद मन में सांप का भय इतनी बुरी तरह बैठ गया था कि कहीं ऐसा न हो कि जब इंदू आए तो उसे आनंद की लाश देखने को मिले । वह सोचता रहा कि जब इंदू आएगी वह उसे बहुत प्यार करेगा । उसे सन्नाटे में नींद नहीं आ रही थी । रात को उसे बहुत कठिनता से नींद आई । सुबह उठा तो उसका मन बहुत खुश था क्योंकि इंदू आने वाली थी । इंदू आ गई थी । आनंद ने उसे बहुत घुमाया । वह उसके साथ पहाड़ों पर गया, घाटियों में घूमा और झरने के पास उसके साथ बैठा रहा । इंदू के सान्निध्य में उसने जितनी कल्पनाएं की थीं, वे सब पूरी हो गईं । लेकिन सांप की दहशत उसके दिलों दिमाग पर बहुत बुरी तरह से हावी हो गई थी । उसे अचानक लगा कि उसे सांप ने काट लिया है । वह घबरा गया था । इंदू के साथ वह जल्दी-जल्दी डाक बंगले तक पहुंचा । आते ही वह बिस्तर पर लेट गया । उसने इंदू को बताया कि उसे सांप ने अपनी पीठ

दिखाई । इंदू ने देखा कि उसके बालों का हेयर पीन आनंद के कमीज़ में उलझा हुआ था । इस कहानी में भय के मनोविज्ञान को प्रदर्शित किया गया है ।

§9§ एक रुकी हुई ज़िंदगी :-

इस कहानी में एक ऐसे व्यक्ति का चित्रण है जो देशी घड़ियों को ही विदेशी स्मगल्ड माल के रूप में दफ्तरों आदि में बेचता है । इसी जुर्म में जब वह पकड़ा जाता है, तब वह उन घड़ियों के बिल दिखाकर सिद्ध कर देता है कि घड़ियां देसी हैं । इस प्रकार कहानी में सामान्य भारतीय की स्मगल्ड माल के प्रति रुचि की वृत्ति पर कटाक्ष किया गया है ।

इस कहानी का कथासार यह है :- लेखक को अपने शहर का पुराना परिचित चमन मिल गया था । वह बहुत वर्षों के बाद मिला । वह लेखक को अपने घर ले गया । रास्ते में लेखक को उसने बताया कि वह चांदनी चौक में घड़ियों की एक छोटी-सी दुकान चलाता है । आखिर लेखक से रहा नहीं गया और उसने चमन की पत्नी के बारे में पूछ ही लिया । चमन ने बताया कि उसकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी है । उसने बताया कि सवा आठ बजे ही उसकी मृत्यु हुई थी । दीवार पर टंगी घड़ी भी सवा आठ ही बजा रही थी । चमन ने बताया कि वह घड़ी तब से ही रुकी हुई है । उसने उस घड़ी को दोबारा चलाया ही नहीं । उसने बताया कि बेरोज़गारी के दिनों में उसकी पत्नी की स्थिति बहुत खराब हो गई थी और उसमें अधिक कठिनाइयां झेलने की शक्ति भी न बची थी और उसकी मृत्यु हो गई । चमन बता रहा था कि पत्नी की मृत्यु के बाद वह भी बहुत अकेला हो गया था ।

कुछ दिनों के बाद लेखक के आफिस के लोगों ने नई चमचमाती घड़ियां पहनी हुई थीं । उनका कहना था कि ये घड़ियां स्मगलिंग का माल है तथा चांदनी चौक के एक दुकानदार ने उन्हें सस्ते में बेची हैं । वे घड़ियां धीरे-धीरे बहुत लोकप्रिय हो गई थी । चमन भी लेखक के कार्यालय में आता रहता था लेकिन जैसे ही लेखक दिखाई देता वह नज़र बचा लेता । अब तो लेखक को विश्वास हो चला था कि वे घड़ियां उसी के द्वारा ही बेची गई है । एक दिन अचानक चमन लेखक को मिलने आया । उसे मिलकर लेखक को लगा कि वह सामान्य जीवन जीने लगा है तथा धीरे-धीरे अपनी पत्नी की मृत्यु को भूलाता जा रहा है । अचानक

एक दिन एक सिपाही लेखक के घर पहुंचा । उसने लेखक को बताया कि चमन को स्मगलिंग की घड़ियां बेचने के जुर्म में गिरफ्तार किया गया है और वह चाहता है कि लेखक उसे जमानत पर छुड़वा लें । लेखक उसे छुड़वा लाया । अदालत में उसका मामला आया तो उसने मेजिस्ट्रेट को बताया कि उसने स्मगलिंग का माल नहीं बेचा । उसकी दुकान चल नहीं रही थी इसलिए वह दफ्तर में जाकर घड़ियाँ बेचता था । उसने जितनी भी घड़ियां बेची उसमें से कोई भी घड़ी काले बाज़ार की घड़ी नहीं थी । जिस फर्म की वे घड़ियां थी उसकी खरीद के कागज़ आदि उसने सब अदालत में प्रस्तुत कर दिए । उसने कहा कि उसने कोई बेईमानी नहीं की है, सिर्फ अपना माल बेचने के लिए ही उसने यह तरीका अपनाया है ।

मेजिस्ट्रेट ने रसीदें व फर्म के बिल देखकर चमन को छोड़ दिया । वह लेखक को अपने घर ले गया । लेखक ने सोचा कि अब तक तो दीवार पर टंगी घड़ी चल रही होगी....... लेकिन घड़ी रुकी हुई थी और उसमें सवा आठ बजे थी ।

इस कहानी में महानगरीय परिवेश में जीवन बिता रहे एक सामान्य व्यक्ति की कारुणिक दशा का वर्णन किया गया है । चाहे जीवन की सब गति-विधियां चलती भी रहे तब भी प्रियजन की मृत्यु का दंश बना ही रहता है । आधुनिकता के दौरान इतनी विसंगतियां है कि सामान्य व्यक्ति के पास जीवन जीने के सारे साधन उपलब्ध नहीं है । इन साधनों के अभाव में ही चमन की खूबसूरत पत्नी की मृत्यु हो जाती है । उसकी मृत्यु के बाद चमन की जिंदगी में भी ठहराव आ जाता है । दीवार पर टंगी हुई रुकी हुई घड़ी इस बात की प्रतीक है । महानगरीय जीवन की भीड़-भाड़ तथा गति भी उसके जीवन को नहीं बदल पाती, अपितु जब भी वह जीविका के संघर्ष में असफल होता है तब उसका अकेलापन गहरा हो जाता है । अपने अभाव को पूर्ण करने के लिए चमन झूठ बोल कर घड़ियां बेचता है तथा उसके जुर्म में पकड़ा भी जाता है । सिर्फ जीविका कमाने के लिए ही वह झूठ का सहारा लेने के लिए विवश होता है । इस प्रकार यह कहानी जीवन की आवश्यकताओं के अभाव में प्रियजन की मृत्यु के बाद पैदा हुए अकेलेपन की त्रासदी का मार्मिक चित्र अंकित करती है । पुलिस व्यवस्था की अकुशलता भी इस कहानी में अभिव्यक्त हुई है ।

§10§ दु:ख भरी दुनिया :-

यह कहानी कमलेश्वर की "खोई हुई दिशाएं" में संग्रहीत एक और सशक्त कहानी है जिसमें उन्होंने मध्यवर्गीय आशाओं-आकांक्षाओं के जिंदगी के कटु यथार्थ से टकराकर टूटने के दर्द को अंकित किया है ।

इस कहानी का कथासार है :- बिहारी बाबू बिजली कंपनी में लिपिक है । उनके अफसर इंजीनियर उनसे बहुत काम लेते हैं । बिहारी बाबू देखते रहते हैं कि उनके अफसरों को कितनी सुविधाएं प्राप्त हैं । बिहारी बाबू चाहते हैं कि उनका बेटा दीपू भी खूब पढ़-लिखकर इंजीनियर बने ताकि उनके घर के सभी कष्ट समाप्त हो जाएं । बिहारी बाबू जब भी घर लौट कर आते हैं तो दिपू को पढाई करने के लिए अपने पास बुलाते हैं, लेकिन दिपू तो बच्चा है वह अपने पिता की इच्छा को नहीं समझ पाता । स्कूल से आकर बस्ता एक तरफ पटक देता है । वह खेलता रहता है या फिर ड्रोइंग बनाता रहता है । रोज़ शाम को पढ़ाई करने के लिए उसे अपने पिता से मार खानी पड़ती है । दीपू को मार पड़ते देखकर बिहारी बाबू की माँ भाई-बहन भी सहम जाते हैं, परंतु वह भी कुछ बोल नहीं पाते । दीपू इतना सहम जाता है कि वह रात में सोते हुए भी पहाड़े पढ़ता है तथा रोने लगता है ।

"दुनिया की मार से पिटा हुआ एक बाप और बाप की मार से कांपता हुआ बेटा", निम्न मध्यवर्गीय परिवार की आशाओं की टूटन, घुटन एवं संघर्षरत जिंदगी को साक्षात् करते हैं । अपने को बड़ा न बना सकने की खीझ और झुझलाहट और अपने बेटे दीपू को बहुत बड़ा आदमी देखने की आकांक्षा में उसकी खूब धुनाई ये सब चीजें कहानी के माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन के सपनों के ढहने के चित्र अंकित करती है । बिहारी अच्छे जीवन में छलांग लगाने की बात इसीलिए सोचता है कि उसकी पत्नी की फटी साड़ी की जगह नई साड़ी आ सके, जाड़े सिर पर आ जाने पर बच्चों की रजाई का अभाव दूर किया जा सके । मार खाकर नींद में भी अठारह, छक्के, एक सौ आठ अठारह, सत्ते......... " गिनता, अखबार के टुकडे में लपेटकर रखा नास्ता ले जाता और किरमिच के जूते पहनकर रंग के डिब्बे, कापी, पेंसिल के बिना स्कूल जाता दीपू माँ-बाप के लिए भविष्य है । किन्तु अभावों में जीता हुआ यह "भविष्य इंजीनियर बन जाने वाले" "भविष्यों" के साथ कदम मिला कर नहीं चल सकता है । इसीलिए दीपू को अच्छे नम्बर न लेते देख बिहारी बाबू

को लगता है कि उनकी दुखभरी दुनिया वहीं ठहर कर रह गई हो । इस प्रकार यह कहानी समाज की खाइयों को बड़ी खूबी से सामने लाती हुई निम्न मध्यवर्गीय परिवार की संघर्षपूर्ण जिन्दगी को चित्रित करती है ।

§11§ पराया शहर :-

यह इस संग्रह की अंतिम कहानी है । इसका कथासार यह है :-

सुखबीर ने अपना जीवन अपने पिता के साथ कस्बे में ही बिताया था । उसकी मां का देहांत बचपन में ही हो गया था । सुखबीर अब नौकरी करने शहर में आ गया था, लेकिन उसे अपना अधकचरा शहर बहुत याद आता रहता था । त्यौहार आदि पर तो सुखबीर बहुत ही अकेलापन महसूस करता था । होली के दिन जब वह अकेलापन महसूस कर रहा था तब उसे पन्द्रह साल पहले की घटना याद आ गई थी । उसका बाप किसी लड़की को भगा लाया था । पुलिस ने उनका मकान घेर रखा था । दीक्षित जी ने उनकी जमानत दी थी । जब तक केस चलता रहा सुखबीर का जीना मुहाल हो गया था । उसका बाप मुकद्दमा जीत गया था और उसने उस लड़की से विवाह कर लिया था ।

तब से सुखबीर के लिए घर पराया हो गया था । वह अपने घर से अलग हो गया था । त्यौहार पर सुखबीर को घर का अभाव अनुभव होता है । उसकी सौतेली मां की मृत्यु हो जाने पर भी वह घर नहीं गया था । सौतेली मां की मृत्यु हो जाने पर बाप को बहुत आघात पहुंचा था । तब से लोगों के लिए जी जान से काम करता था । वह सब के सुख-दु:ख में काम आता था, आदमी के लिए जान देता था । सुखबीर अपने बाप का अकेलापन समझता था । उसने अपने बाप को अपने पास आने का आग्रह किया था लेकिन उसके पिताने यह आग्रह स्वीकार नहीं किया था । किन्तु उससे कहा था कि प्रतिमाह कुछ रुपये भेज दिया करें । तब से वह प्रतिमाह कुछ रुपये भेज दिया करता था । एक दिन दीक्षित जी का पत्र प्राप्त हुआ था । उन्होंने लिखा था कि अपनी बेटी के विवाह के लिए जेवर बनाने का काम उसके पिता को सौंपा था, लेकिन वह जेवर लेकर एक महीने से गायब है । यह पत्र पढ़कर सुखबीर का सर चकरा गया । उसने यह कभी न सोचा था कि उसका बाप इस उम्र में भी इतना नीच काम करेगा । उसे अपने बाप को

खोजने जाना पड़ा । उसके बापू लौट आए थे । वह नए जेवर साथ लेकर आया था । उसने बताया कि वह जेवर हार गया था । सुखबीर को लगा कि उसके पिता ने उसका भी अपमान करवाया है । दोनों बाप-बेटों की बहुत लड़ाई हुई थी । दोनों ने एक दूसरे का मुंह न देखने की कसम खाई थी । उसके बाप ने रुपया लेने से इंकार कर दिया था और उसने भेजने से इंकार कर दिया था ।

अचानक ये बातें भुला कर भी उसका मन अपने पिता तथा अपने घर को याद करने लगा और वह अपने बाप से मिलने चल पड़ा । होली का त्यौहार था । सुखबीर जब गांव पहुंचा तो उसने देखा कि घर पर ताला लगा हुआ था । दीक्षित जी ने कहा कि दो तीन दिन से उसका पिता दिखाई नहीं दिया । सुखबीर एक दिन दीक्षित जी के घर रहा । जब वह वापस आने लगा तो उसने देखा कि उसके घर का ताला खुला हुआ था । उसका बाप भीतर ही था । उसने सुखबीर को बताया कि उसको भी यह शहर पराया लगता है । बस उसका दिल नहीं लगा इसलिए वह चला गया था । सुखबीर ने पुनः दिल्ली चलने का आग्रह किया था लेकिन उसके पिता को लगता था कि परायापन कहीं भी खत्म नहीं होता, हर जगह ही होता है ।

सुखबीर ने भी अनुभव किया था कि जिस शहर के लिए वह तरसता रहा है, वहां उसके बाप के लिए पराया हो चुका था ।

"खोई हुई दिशाएं" संग्रह की अंतिम कहानी "पराया शहर" भी एक अच्छी कहानी है । इस कहानी का स्वर है - व्यक्ति के जीवन में भर गया अजनबीपन, बेगानापन और परायापन । इस कथ्य को स्पष्ट करने के दो स्तर हैं : "एक दिल्ली का महानगरीय जीवन और दूसरा दुर्गादयाल का अपना छोटा-सा शहर । इसी दुर्गादयाल का पुत्र सुखबीर पन्द्रह वर्षों से दिल्ली में रह रहा है, किंतु अभी भी उसे दिल्ली में लगाव नहीं पाया है । पन्द्रह साल हो गए इस दिल्ली में रहते रहते पर मन में कहीं यह बात नहीं उठती कि यह दिल्ली उसकी है।" (1)

इस कहानी का केंद्रबिंदु अकेलापन ही रहा है । अकेलापन आधुनिकता को महत्वपूर्ण तत्व है । नगरीकरण तथा महानगरीय बोध कहीं कहीं पर कहानी में उभारा है ।

---

(1) "खोई हुई दिशाएँ", "पराया शहर" - पृष्ठ-134.

राजा निरबंसिया :-

आर्थिक स्थितियों के दबाव के कारण उत्पन्न बेरोज़गारी की स्थिति निरर्थकताबोध उत्पन्न करती है । प्रेम का आदर्श रूप भी चित्रित हुआ है । विभाजन की पीड़ा भी मार्मिक रूप में चित्रित की गई है ।

- ﴾1﴿ देवा की मां
- ﴾2﴿ पानी की तस्वीर
- ﴾3﴿ धूल उड़ जाती है
- ﴾4﴿ सुबह का सपना
- ﴾5﴿ मुरदों की दुनिया
- ﴾6﴿ आत्मा की आवाज़
- ﴾7﴿ राजा निरबंसिया

﴾1﴿ देवा की माँ :-

यह इस संग्रह की पहली कहानी है । इसका कथासार है :-
देवा के पिता स्टेशन मास्टर थे । गांव से बाहर ही रहते थे । उन्होंने दूसरा विवाह कर लिया था । उनके बच्चे तथा पत्नी शहर में ही रहते थे । पांच साल पहले वह उसकी माँ से मिलने आए थे । देवा की माँ ने देवा को पेट काट-काट कर पढ़ाया था । पढ़ाई पूरी होने पर भी उसे नौकरी नहीं मिली थी । उसकी मां सूत कातकर, उसे रंगवा कर दरियां बनाती और दरियां बेचकर घर को गुज़ारा चलाती । देवा जीविका के लिए भटकता रहता था । आखिर हारकर उसने अखबार बेचना शुरु कर दिया । देवा शायद धीरे-धीरे क्रांतिकारियों में शामिल हो गया था । एक दिन उसे पुलिस पकड़ कर ले गई । मां इंतजार करती रही पर वह नहीं लौटा । लौटता भी कैसे, उसे तो एक साल की जेल हुई थी । पंडित जी ने ही उसकी मां को बताया था कि यदि दौसौ रूपयों की जमानत हो जाए तो वह छूट सकता है । देवा की मां ने उसके पिता को पत्र लिखा । जो आदमी पत्र लेकर गया था उसी ने बताया था कि उन्होंने कहा कि वे उसकी जमानत नहीं कराएंगे । देवा की मां ने सब कुछ स्वीकार लिया । तब से उसने मांग में सिंदूर भरना छोड़ दिया । सिंदूर की डिबीया तुलसी के बिरबे में डाल अपना सुहाग उसे सौंप दिया ।

बेचारी चुपचाप दिन काटती रही । एक साल बाद देवा वापस आ गया । बाद में सब स्वाभाविक हो गया । देवा ने बताया कि उसके पिता बीमार हैं । अस्पताल में है और एक महिने से बीमार है । उसने पूछा कि वह कल जाकर देख आए । मां चुप रही कुछ न बोली । देवा भी सो गया । मां भी सो गई । रात को देवा ने देखा तो मां अपने बिस्तर पर ही नहीं थी । देवा उठकर बाहर आया तो मां तुलसी के आगे नतमस्तक थी । उसकी मांग में सिंदूर चमक रहा था । देवा चुपचाप सो गया । सुबह उठा तो उसने मां से पूछा कि क्या वह लोग बापू को देखने जाएं । मां ने उत्तर दिया कि वह नहीं जाएगी । देवा ने फिर पूछा कि मैं चला जाऊं । मां ने दृढ़ता से उत्तर दिया, "नहीं" ।

इस कहानी में पिता का दूसरा विवाह कर लेना ही देवा के बेरोज़गार होने का कारण है । नारी के प्रति अपनाया गया बुरा व्यवहार भी इसमें चित्रित है और नारी मानों त्याग की मूर्ति है, जो चुपचाप सहती है लेकिन जब अपनी ही संतान के हित में उसकी प्रार्थना को उसके पति ने अस्वीकार कर दिया, तो उसकी आत्मीयता भी समाप्त हो गई । कहीं कोई अपनापन नहीं रहा । उसने भी स्वयं को काट लिया । सिंदूर तुलसी को सौंपना इसी का प्रतीक है । परंतु उसके बिमार होने की बात सुन मांग भर लेती है, उसकी स्वास्थ्य कामना के लिए । लेकिन उस पुरुष द्वारा दिया गया तिरस्कार वह कैसे भूल सकती थी और बेटे के प्रति किया गया अन्याय भी उसे याद था । तभी न स्वयं अपने पति को देखने गई और न देवा को ही जाने दिया । इसमें नारी का परम्परागत रूप भी अभिव्यक्त हुआ है । पति-परायण नारी का और अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक नारी का विद्रोही रूप भी अभिव्यक्त हुआ है । पारिवारिक और दांपत्य-संबंधों का विघटन भी यहां मुखर है, जो आधुनिकता की देन है ।

देवा आज के युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है । उसकी मां गरीब है और देवा उसकी एक मात्र संतान है । देवा को पढ़ाने के लिए उसे बहुत शारीरिक श्रम करना पड़ता है लेकिन देवा भी कुछ नहीं कर पाता । आज का युवक बेरोज़गारी के कारण इतनी विवशताएं भोगता है कि उसके व्यवहार में विचित्र बातें शामिल हो जाती हैं । वह सारा दिन घर से बाहर रहता है । मां से झूठ बोलता है कि वह मास्टर जी के पास गया था और एक दिन जब उसे जेल हो जाती है तो उसकी मां को पता चलता है कि वह क्रांतिकारी हो गया है ।

इस कहानी की संवेदना नारी के परम्परागत नारीत्व तथा उसके विद्रोहिणी रूप को चित्रित करती है । रागात्मक संबंधों के अभाव से परिवार बिखरता है - देवा की मां स्वयं कहती है, "असल बात यह है कि मैं उनसे घुल-मिल ही नहीं पायी थी । ससुराल में रहते घर की भीड़-भाड़ और यहा-शरम में कभी अपनेपन की बात नहीं कर पायी । उन्होंने मुझे जाना ही नहीं और अनजाने में जो कर बैठे वह तो हो ही गया ।"(1) इस वक्तव्य से यह स्पष्ट होता है कि देवा की मां पति के दूसरे ब्याह के लिए स्वयं को जिम्मेदार ठहराती है । इसी कारण अभी भी उसके मन में पति के लिए वही स्थान है । वह अभीतक मांग भरती है । लेकिन जब देवा के जेल जाने की घटना घटती है तब वह इसी भावना को दृष्टि में रखते हुए देवा की जमानत के लिए संदेश लिखकर भिजवा देती है । लेकिन उसे बहुत आघात पहुंचता है जब उसका पति कहता है, "मुझ से पूछ कर और मेरी मर्जी से देवा चलता होता तो मैं अपना सिर भी रोपता, उसका क्या ठिकाना, आज छुड़ाया कल फिर चला जाएगा....... नौकरी पेशा आदमी हूँ और यह सब करने के लिए वक्त चाहिए ।"(2) वह सोचती है कि वह कितनी मूर्ख है कि वह कैसी-कैसी बातों पर विश्वास करती थी । मानो सत्य उसके सामने स्पष्ट हो रहा था । "वह अब तक किन परछाइयों पर विश्वास करती आयी । देवा के पिता जी पर..... पर वह कितनी बड़ी प्रवंचना थी । कितना बड़ा धोखा वह देते आ रहे हैं । कितनी सफाई से सारी जिम्मेवारी टाल गए थे और कितनी खूबसूरती से उसके नारीत्व और पत्नीत्व को तृप्त कर गए थे । इस लिए कि वह कुछ और न सोच सके...... वह सिर्फ यही तो चाहते थे कि वह इसी तरह लंगड़ाती घिसटती और अधूरी रह कर भी पति के आकाशी आदर्श की गरिमा में अपने को कृतार्थ मानती रहे..... वह नीचे उतर कर धरती का स्पर्श न करने पाये....... कहते थे देवा पर तुम्हारा ही असर पड़ेगा....... और इस बात में वे उसकी लज्जा को कितनी बड़ी चुनौती दे गए थे ।"(3)

यहां नारी के मन की पीड़ा उभर कर आई है । वह अपनी लज्जा, अस्मिता व मातृत्व पर किसी प्रकार की चोट सहन नहीं कर सकती । अकेलापन

---

(1) कमलेश्वर : राजा निरबंसिया : देवा की मां, पृष्ठ-12.
(2) पूर्वोक्त - पृष्ठ-12.
(3) पूर्वोक्त - पृष्ठ-19.

तो शायद आधुनिकता की विरासत है । देवा की माँ भी यह अकेलापन भोग रही है । "घड़ी की सुइयाँ समय बदलती जाती, पर वे सूनेपन की घड़ियाँ स्थित अड़िग खड़ी थीं, अकेलेपन के पल अमिट हो गए थे, जिन्हें घड़ी की सूइयाँ नहीं हटा पायीं...... नहीं हटा पायीं ।"§1§

"देवा की माँ" माँ की पीड़ा और द्वन्द्व का अंकन है किन्तु यह पीड़ा और द्वन्द्व पूरे पारिवारिक परिवेश के तनाव से पैदा होता है । यह कहानी एक पारिवारिक वातावरण के बीच देवा की माँ को प्रस्तुत कर भारतीय पत्नी की तकलीफ और द्वन्द्व को उदघाटित करती है । बेरोज़गार युवक की माँ धन के अभाव में ऐसा ही विवश, नैराश्यपूर्ण व अकेला जीवन बिताती है । गरीब परिवार की इन विसंगतियों का मार्मिक चित्रण से ही इस कहानी की आधुनिकता की पहचान बनती है ।

§2§ <u>पानी की तस्वीर</u> :-

यह कहानी असफल प्रेम की रोमानी शैली में लिखी गई है । जिसमें कुछ-कुछ शरतकालीन बंगाली कथाओं जैसा भावुक वातावरण बना हुआ है । कहानी का शीर्षक स्मृति का प्रतीक बनकर आया है ।

इसका कथासार यह है :- अक्षत अपने पिता का इकलौता बेटा था । उसके पिता बहुत शांत और सरल व्यक्ति थे । मन व प्रकृति से बहुत सहज और बड़े ही संस्कारी । उनकी एक ही इच्छा थी कि उनका बेटा विवाह करलें । अक्षत की माँ मरने से पहले उसका विवाह कहीं तय कर गयी थी । बाबा चाहते थे कि अक्षत का विवाह वहीं हो । अक्षत विवाह नहीं करना चाहता था क्योंकि वह मनीषा से प्रेम करता था । लेकिन बाबा तो यही चाहते थे कि अक्षत माँ की आखिरी इच्छा पूर्ण करें । वह यह भी नहीं कह पाता कि वह मनीषा से विवाह करना चाहता है । इसलिए वह विवाह ही नहीं करना चाहता । उसके बाबा जानते थे कि वह मनीषा से प्रेम करता है । लेकिन मृतक की आखिरी बात तो रखनी ही थी । उसका मित्र संजय लेखक था । मनीषा सदैव अक्षत को प्रेरणा देती

---

§1§ पूर्वोक्त : पृष्ठ-19.

रहती । परिस्थितियों को उसने परख लिया था । अतः उसने भी कभी अक्षत से विवाह का प्रस्ताव न रखा । वह सदैव कहती थी कि वह कितना निश्छल है । उसके मन में कहीं कोई स्वार्थ नहीं है । तभी शायद वह इतना मुक्त होकर उसे प्यार कर सकी है । अक्षत कभी-कभी सोचता कि उसके जीवन का क्या अर्थ है । मनीषा उसे समझाती कि यदि वह हर क्षण में अर्थ तलाशने लगेगा, तब वह स्वार्थी हो जाएगा । अक्षत और मनीषा कभी इस विचित्र स्थितियों पर बात करते तो मनीषा कहती कि अपने पिता की इच्छानुरूप करें, इससे किसी को कोई दुःख न होगा । लेकिन अक्षत नहीं चाहता कि वह मनीषा को दुःख दे ।

दोनों में अटूट आत्मीयता थी और विश्वास भी था तभी तो सब कुछ होकर कुछ भी नहीं हुआ था । लेकिन अक्षत को अनुभव होता रहता कि कहीं एक रिक्ति है जो कभी भी नहीं भर सकती । बचपन में अलग होकर मनीषा और संजय फिर इकट्ठे हुए थे । वे दोनों अक्षत के साथ मिलकर नदी किनारे की प्रकृति में खोये रहते । अक्षत के रंग नदी के किनारे दीपदान करती स्त्रियों के चित्र को श्रद्धा से भर देते । मल्लाह जब नदी की छाती में बांस गड़ाकर घाट चीरता तो अक्षत अपनी तूलिका से उसमें शक्ति भर देता । संजय कहता है कि इन गांवों का नक्शा बदलेगा । संजय कहता है उसके शब्द व अक्षत की सेवाएं एक जीवित युग छोड़ जाएंगे । संजय अक्षत को समझाता है कि मनीषा उसकी अतिरिक्त शक्तितहै । शक्ति है । वह प्रेरणा स्त्रोत देती है । अक्षत से कहती अपने रंगों को जीवित रखना अपने लिए...... जो केवल तुम्हारा होगा वही मेरा होगा । यदि उसके रंग ज़िंदा रहेंगे तो वह भी ज़िंदा रहेगी ।

अक्षत किसी को कोई सूचना दिए बगैर गांव छोड़कर चला जाता है । मनीषा की प्रेरणा उसके लिए शाप बन गई । वह रंगों में ही डूबा रहता है । दो साल बाद वह गांव लौटा, तब तक सब समाप्त हो चुका था । बाबा और मनीषा की मृत्यु हो चुकी थी और संजय भी मृत्यु के कगार पर ही था ।

इस कहानी में बदलते हुए सामाजिक परिवेश में आयी नवीन विचार-धारा के कारण उत्पन्न हुई स्थितियों का चित्रण हुआ है । एक विशिष्ट बुद्धिजीवी वर्ग ने इन स्थितियों में नए मापदण्ड स्थापित किए हैं । नए आदर्शों के सहारे एक संपूर्ण जीवन की आशा नहीं की जा सकती ।

बाबा समाज की पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि है । वह युवा पीढ़ी से बहुत आगे हैं और वैचारिक अंतराल सभी स्तरों पर बहुत आगे हैं । अक्षत मंदिर में विश्वास नहीं करता । बाबा ने अक्षत को मंदिर जाने के लिए विवश नहीं किया । उन्होंने अक्षत को मंदिर व धर्म से जोड़ने में ज़बरदस्ती नहीं की लेकिन कहा, "मेरी धोती पहन ले, देखें तेरे उपर फबती है या नहीं । बैठने में आसानी रहेगी ।"(1) बाबा ने मन का काम करवा लिया था । इसी तरह वे संस्कार दिया करते थे विचार नहीं । और जो व्यक्ति विचार देकर कुछ रोपना चाहता है वह लगभग आरोपित करता होता है- "संस्कार देने वाला सदैव आश्वस्त रहा है ।"(2)

अक्षत चाहता था कि अगर बाबा :: ज़ोर देकर कहते कि विवाह होगा तो वहीं होगा . लेकिन ऐसा हो ही नहीं पाता था, "अक्षत सोचता था कि बाबा की बात को अस्वीकार करने पर बाबा कुछ कहेंगे, और तब वह उन्हीं से अपनी बात मनवा लेगा, या वे विरोध ही करेंगे तो वह रास्ता पा लेगा । पर बाबा पानी का बहाव थे । हाथ में आकर निकल जाते । वह विरोध करता तो दोनों ओर से कतरा कर वह निकलते और फिर धारा का वही अविकल प्रवाह।"(3)

जब अक्षत ने बाबा से पूछा कि वह तो एक है और प्रस्ताव दो, तो क्या किया जाए । "एक है इसीलिए तेरा सुख चाहिए । तेरी मां से अधिक कौन सोच सकता था । वह तो आज अपने किसी स्वार्थ से दूर है । फिर तेरी मरज़ी, जो ठीक लगे जिससे मन भरे.......।"(4) यह कहते ही उनकी आँखें भर आयी थीं । अक्षत जब-जब विवाह को लेकर कुछ निर्णय की बात सोचता है तब ये आँखें उसका पीछा करती हैं । "मांगती कुछ नहीं । न आदेश देती न अनुनय और न तिरस्कार । बस यही कि जो तुम करोगे, ये स्वीकार कर लेंगी, इसमें उभरी हुई तस्वीर न मिट जाए बस केवल वही ।"(5)

इसी घटना-क्रम ने अक्षत को एक नवीनतम आदर्श में बांध दिया और

---

(1) कमलेश्वर : राजा निरबंसिया : पानी की तस्वीर, पृ. 25.
(2) पूर्वोक्त - पृ. 25.
(3) पूर्वोक्त - पृ. 27.
(4) पूर्वोक्त - पृ. 27.
(5) पूर्वोक्त - पृ. 27.

मनीषा भी तो कहीं दबाव नहीं डाल सकी । दोनों का प्रेम आदर्श प्रेम में बदल गया । मनीषा कहती है- "तुम्हारे छोटे-छोटे आदर्श व कल्पनाएं कितनी पवित्र है । इतना रस कहां से मिलता है अक्षत । दुनियां में रहते हुए भी उससे अलग होकर सपने कैसे बुन लेते हो ? बगैर सोचे समझे कैसे हंस लेते हो । सचमुच तुम स्वार्थी नहीं हो ?....... कितनी बड़ी सार्थकता है तुम लोगों के जीवन की........"(1) अक्षत को जीवन निरर्थक लगने लगता है मनीषा फिर समझाती है- "हर क्षण अर्थ खोजोगे तो स्वार्थी हो जाओगे । जब तक अर्थहीन जी लोगे तभी तक यह पवित्रता का तेज मुझे दिखेगा, मुक्त रह लूंगी । तुम सब तो सौंदर्य हो, अपने में पूर्ण ।"(2)

इस कहानी में प्रेम कितना त्यागमय हो उठा । आज के संदर्भ में त्याग तो समाप्त हो गया है । प्रेम के माध्यम से व्यक्ति अपना स्वार्थ पूरा करना चाहता है । आदर्श प्रेम की अत्यंत सार्थक कल्पना यहां हुई है जो कि वृत्त परिवेश में मिल पाना असंभव सा ही है । इस कहानी में पीढ़ियों का अन्तराल भी प्रकट हुआ है तथा प्रेम का अति वायवी रूप भी अभिव्यक्त किया गया है ।

(3) <u>धूल उड़ जाती है</u> :-

यह इस संग्रह की तीसरी कहानी है । यह कहानी "लौटे हुए मुसाफिर" नामक उपन्यास का ही संक्षिप्त रूप है जिसकी चर्चा पहले की जा चुकी है ।

(4) <u>सुबह का सपना</u> :-

यह कहानी अपने प्रभाव में एक विराट मानवीय फलक पर फैल जाने वाली कहानी है । कहानी में दो छोटे-छोटे चित्र हैं और उन चित्रों के माध्यम से ही लेखक ने युद्ध की क्रूरता और उससे टकराती शान्ति की कोशिश को बिम्बित किया है ।

कथासार है :- इस कहानी का नायक लेखक है जो एक पुस्तक प्रदर्शनी देखने गया था । वहां उसने कुछ पुस्तकें देखी । युद्ध के चित्र देख कर उसका मन अशांत हो उठा ।

---

(1) पूर्वोक्त - पृष्ठ-29.
(2) पूर्वोक्त - पृष्ठ-29-30.

रात में उसने सपना देखा कि उसकी बच्चियां गुड्डे गुड़िया का ब्याह रचा रही थीं । एक ने दुल्हन का घर बनाया था तो दूसरी ने दुल्हे का । सारी तैयारियों के बाद बारात के जाने की घड़ी आई । बारात दुल्हन के घर पहुंची । भांवरें पड़ी और बिदाई की घड़ी आ गई । तभी उन्होंने जैकब साहब के लड़के के बूटों की आवाज़ सुनी । देखा तो एक कबूतर उपर बैठा था । दोनों ने योजना बनाई कि कबूतर को उड़ा दें । एक ने मिट्टी का ढेला मारा और कबूतर उड़ गया । लेकिन जैकब साहब का बेटा बंदूक लिए खड़ा था और आंखों से आग बरसा रहा था । बच्चियां कबूतर उड़ जाने की खुशी में तालियां पीट-पीट कर खुश हो रही थीं । लेकिन जैकब साहब के गुस्से का अंत न था । उसने दो तीन हवाई फायर करके दोनों बच्चियों को डरा दिया । इसी धमाके से लेखक की नींद खुली । उसने उसी दिन के अखबार में पढा कि हाइड्रोजन बम पर प्रतिबंध की मांग की गई थी ।

आज की मानवता युद्धों की विभीषिका से त्रस्त है । इतनी त्रस्त है कि रात्रि की निद्रा में भी आदमी को युद्ध - धुआँ बमबारी ही दिखाई पड़ती है । वास्तव में आज के युग में मानव पर युद्ध के भयावह बादल मंडरा रहे हैं । आज के युग में यह कहानी सबसे अधिक प्रासंगिक है क्योंकि विश्व की सभी शक्तियां युद्ध की उच्चस्तरीय तैयारियां कर रही हैं । ऐसे-ऐसे उपकरणों का निर्माण किया जा सकता है जो कि समस्त मानवता को एक पल में तबाह कर सकते हैं । अतः स्वाभाविक है कि मनुष्य के दिमाग में युद्ध का भय बना रहता है ।

यहां जैकब साहब सामरिक शक्ति के प्रतीक है, कबूतर शांति के प्रतीक हैं और बच्चियां भयग्रस्त मानवता की । इस कहानी में मानवता के उपर मंडरा रहे आणविक युद्ध के संकट को प्रतीकार्थ में उभारा गया है ।

§5§ <u>मुरदों की दुनियाँ</u> :-

इस कहानी में एक ओर कस्बे के शहरीकरण से उत्पन्न बेगानेपन की व्यवस्था चित्रित हुई है तो दूसरी ओर जीवनमूल्य टूटने का दर्द है । इस कहानी में एक ठेकेदार की बेटी "साबितरी" ससुराल से आई थी । साबितरी

बहुत खुबसूरत थी । उसके बस से उतरते ही बस अड्डे पर बैठे खोमचे वालों तथा निसार की निगाहें उस पर टिक गई । साबितरी विधवा थी । साबितरी के पीछे उसके पति की हत्या कर दी गई थी लेकिन कोई भी उसका बाल बांका न कर पाया था । नासिर के बकरे तथा साबितरी की बकरी के कारण दोनों में नैकट्य स्थापित हो गया । निसार मोटर का एजेन्ट था । वह जब भी काम से फुरसत पाता तो साबितरी के पास आ बैठता । वह जब भी अपने काम से बाहर जाता तब अपने बकरे नूर को साबितरी के घर छोड़ जाता । एक दिन दोनों बातें कर रहे थे कि तब तक गोरख आ पहुचा । उसे उन दोनों की आत्मीयता अच्छी नहीं लगी । क्योंकि वह भी साबितरी के प्रति आसक्त था । वह साबितरी को समझाने लगा । लेकिन साबितरी को निसार का संसर्ग प्रिय था और निसार भी साबितरी के ख्यालों में ही डूबा रहता ।

कुछ दिनों बाद सरकारी मोटरे चलने लगी तब से निसार को जीविकार्जन की चिंता लगने लगी क्योंकि प्राइवेट बस के ड्राइवर निसार की रोजी खत्म हो जाती है । जीविका कमाने के लिए वह करीमगंज जाने लगा तो अपना बकरा ठेकेदार की विधवा लड़की साबितरी के यहां रखकर कोई नौकरी खोजने चला जाता है । जब वह सात दिन के बाद वापस आता है तब सारा वातावरण बदला हुआ लगता है । वह साबितरी के घर पहुंचा तब उसने ताला लगा पाया । उसने बगल की दूकानदार से पूछा तब पता चला कि साबितरी उसके बकरे को बेचकर गोरख के साथ भाग गयी और बकरे को कसाई ने काट दिया है । यह सुनकर निसार का मन अशांत हो गया । और शरीर बेजान हो गया है । उसे अपने बकरे (साथी) से बिछड़ने का बहुत गम था । तब उसे लगता है कि यह दुनिया आदमियों की नहीं, मुरदों की है । चुपचाप चलने वाली बसों की दुनिया भी मुरदों की है । और क्रूरता पाले चुपचाप जीने वाले जीवित लोगों की दुनिया भी मुरदों की है । वह ताजिया बनायेगा क्योंकि ताजियों की दुनिया में एक जोश-खरोश है, लोग छातियाँ पीटते जोश-खरोश से जुलूस में निकलते हैं । लेखक ने ताजियों की यानी मुरदों की दुनिया बताकर पैराडाक्सिकल ढंग से आदमी के दर्द और आक्रोश को व्यक्त किया है ।

इस कहानी में कस्बे के शहरीकरण से उत्पन्न बेगानापन की व्यवस्था का चित्रण हुआ है, बेरोजगारी की पीड़ा तथा जीवन मूल्यों के टूटने का दर्द भी उभरा है । निसार का बकरा नूर उसकी समस्त आशाओं व कोमल भावों का प्रतीक था । उसने अपना जिगर का टुकड़ा अपना बकरा नूर साबितरी को सौंपा था और वह गाँव छोड़ कर भाग जाती है । उसका गाँव से भाग जाना निसार को भीतर तक तोड़ जाता है । उसका विश्वास टूट जाता है । नूरे की लाश देखकर उसे लगता है उसकी सारी दुनियां को ही ज़िबह कर दिया गया है । उसे लगता है कि पूरी दुनियां ही मुर्दों की है । उसे लगता है कि वह वापस मुर्दों की दुनियां में नहीं जा सकता । जहां वह ताजिए बनाएंगा । वह निर्णय करता है कि मुर्दों की दुनियां में अब वह नहीं रह सकता । इस प्रकार संवेदनाओं का टूटना इस कहानी की आधुनिकता का वृत्त है । शहरी करण के कारण मानवीय सरोकार की समाप्ति ही इस कहानी का नाभिकेंद्र है ।

§6§ आत्मा की आवाज़ :-

इस कहानी का सारांश यह है :- राजू अपना काम समाप्त करके रिश्ते के भाई गोपाल के घर पहुंचा । गोपाल अभी तक घर नहीं लौटा था और भाभी घर में अकेली थी । उसकी भाभी से यह पहली मुलाकात थी । लेकिन भाभी बहुत खामोश-सी चौके में बैठी थी । उसने नायक से अधिक बात न की । राजू भी चुपचाप बैठा रहा । कुछ देर में गोपाल आ गया । उसकी बातों से नायक को पता लगा कि वह अपनी पत्नी से खुश नहीं है । वे जब रात को खाना खाने लगे तो गोपाल को अपनी पत्नी की बनाई रोटियां पसंद नहीं आयीं । राजू ने गोपाल को अपनी पत्नी को डांटते व मारते हुए सुना पर उसे भाभी की कोई आवाज़ सुनाई नहीं पड़ी । वह गोपाल को रोकना चाहता था लेकिन सोचा कि भाभी अपमानित अनुभव करेगी । यही संस्मरण साथ लेकर राजू वापस आ गया । घर लौटा तो उसे अपनी प्रेमिका का पत्र मिला । उसने लिखा था कि विवाह तो उसने भी अपने माता-पिता की इच्छा से समृद्ध परिवार में कर लिया है, पर उसका मन वहां नहीं लगता । लेकिन विवशता ने उसे उस घर में रखा दिया तब भी वह

राजू को याद करती है । उसने लिखा आज उसे खाना बनाना पड़ा क्योंकि खाना बनाने वाली नहीं आई थी । तब उसे रोटी बनाने में बहुत कष्ट हुआ क्योंकि उसने कभी बनाया ही नहीं था । वह सोचती रही कि यदि उसकी शादी राजू से हुई होती तो वह रोज़ खाना बनाती । इसी द्वन्द्व में रोटियां ठीक नहीं बनीं और पति ने खाना खाते समय कह दिया कि ये कैसी रोटियां बनाई हैं..... राजू ने उसी समय पत्र बंद कर दिया । उसे पिछले दिन वाली घटना याद आ गई ।

इस कहानी में आधुनिक जीवन की विसंगति और तनाव-भरे दाम्पत्य संबंधों को अभिव्यक्त किया गया है । "मिसफिट" होने तथा वरण की समस्या इस कहानी का मूलाधार है, जिसकी परिधि पर पुरुष-प्रधान भारतीय समाज में नारी की दयनीय स्थिति को उजागर किया गया है ।

§7§ राजा निरबंसिया :-

यह इस संग्रह की सातवीं कहानी है । इसकी चर्चा "मेरी प्रिय कहानियां" में हो चुकी है ।

कस्बे का आदमी :-

इस कथा संग्रह की कहानियों में वरण की स्वतंत्रता का प्रश्न उठाया गया है । सांप्रदायिकता की आग में जले लोगों की करुण गाथा का वर्णन भी किया गया है । नारी पर हो रहे अत्याचार तथा परंपराओं में बंधे हुए कस्बे के व्यक्ति का मार्मिक चित्रण किया गया है ।

§1§ तीन दिन पहले की रात
§2§ गर्मियों के दिन
§3§ भटके हुए लोग
§4§ चाय घर
§5§ सीखचे
§6§ इन्सान और हैवान
§7§ गाय की चोरी
§8§ नौकरी पेशा
§9§ सच और झूठ
§10§ बेकार आदमी
§11§ थानेदार साहब
§12§ कस्बे का आदमी

§1§ तीन दिन पहले की रात :-

इस संग्रह की यह पहली कहानी है । इसका कथासार है :- मीना एक मध्यवर्गीय परिवार की इकलौती बेटी है । मीना विवाह-योग्य है । मीना के घर में आने वाले प्रत्येक युवक में उसकी मां मीना का वर तलाशती है । इस प्रक्रिया में उस व्यक्ति को जानने के लिए वह अत्यंत औपचारिक व्यवहार का सहारा लेती है । जब तक वह युवक उनकी आकांक्षाओं व इच्छा के अनुरूप काम व बातें करता है तब तक उसकी प्रशंसा के पुल बांधे जाते हैं, परंतु जैसे ही वह अलग लगने लगता है, वैसे ही उसे छिटका कर दूर कर दिया जाता है । इस प्रक्रिया में मीना को उस युवक के निकट जाने का पूरा अवसर दिया जाता है । नैकट्य का अवसर

पाकर उसका मन सबसे अधिक दिवाकर से जुड़ा जो बहुत आदर्शवादी युवक था, लेकिन एक पीड़ा के साथ उसे इस संबंध को समाप्त करना पड़ा । मीना की वह पीड़ा बहुत सघन थी । फिर जितने आया - वही हुआ । तब अमर आया - उससे मीना का विवाह हुआ लेकिन मीना प्रसन्न न हो सकी । क्योंकि वह मीना के मां-बाप की इच्छाओं के अनुरूप था मीना की आकांक्षाओं के अनुरूप नहीं । इसी पीड़ा में वह दिवाकर को नहीं भुला सकी ।

इस कहानी का मूलाधार हमारे चरित्र का छद्म है । कभी लगता है कि जिस आधुनिकता की बात हम करते हैं वह मिथ्या है, छल है, प्रवंचना है । परंतु फिर भी हम उससे छूट नहीं पाते हैं । स्वतंत्रता के नाम पर झूठ, सभ्यता के नाम पर छल । जीवन की सुरक्षा - कहीं भी नहीं । "कितने बड़े झूठ और प्रवंचना में हम सांस ले रहे हैं । सुरक्षा, काहे की ? जीवन की । और पैसा और पद । क्या यही जीने का मतलब है और क्या यही आवश्यक है कि एक पुरूष अपनी प्रतिष्ठा को बाहों में घेर कर भौतिक सुविधाओं से भर दे, जीवन की यह झूठी सुरक्षा दे दे ?"﴾1﴿ वास्तव में यह कथन हमारी त्रासदियों को चित्रित करता है ।

इस सब की चपेट में प्रेम जैसा अदात भाव भी आ गया है । पारिवारिक संस्कारों में जकड़ी युवती इस त्रासदी का चाह कर भी विद्रोह नहीं कर पाती । यहां पर नारी स्वतंत्रता को लेकर अंतरराष्ट्रीय आंदोलन अर्थहीन व बेमानी लगते हैं । कैसी नारी स्वतंत्रता - किसने देखी ? किसने भोगी ? "सारी लड़कियां स्वतंत्र हैं, वे प्यार कर सकती है घृणा कर सकती हैं, लेकिन जो चाहती हैं वह नहीं कर सकती ।"﴾2﴿ वास्तविकता भी यही है । मीना भी यह त्रासदी भोगती है । घर में आये नए युवक में संबंध की तलाश की जाती है । पहचान करने की इस अवधि में मीना को उस युवक से जुड़ने का पूरा अवसर दिया जाता है और वह जुड़ जाती है । भविष्य उसकी आँखों में नाचता है । युवक की प्रशंसाओं के दौर में मीना को लगता है जैसे उसकी प्रशंसा हो रही है । इन्हीं क्षणों में से निकलते हुए वह भीतर कहीं गहरे से जुड़ती जाती है । परंतु होता इसके विपरीत है । इसी क्रम

﴾1﴿ कमलेश्वर : कस्बे का आदमी : तीन दिन पहले की रात, 1982, पृ. -9.
﴾2﴿ पूर्वोक्त - पृष्ठ-9.

में से दिवाकर गुज़रा । और इस बिंदु से ही सब बिखर गया । उसे दिवाकर की याद आती है जिससे उसने प्रेम किया था । यहां आदर्शों की उपेक्षा में मूल्यों का ध्वंस अभिव्यंजित किया गया है और पुलिस आफिसर के वरण के रूप में भौतिकता के प्रति समर्पण को अभिव्यक्ति दी गई है ।

युवकों पर भी इस बात का गहरा असर पड़ रहा है । उन्हें जब अस्वीकार कर दिया जाता है तो उन्हें समझ नहीं आता कि उन्हें अस्वीकार क्यों किया जा रहा है ? जितेन के साथ जब मीना के मां-बाप का व्यवहार एकाएक बदल जाता है तो उसे बहुत अजीब सा लगता है । जितेन को एक नौकरी मिलती है जब यह बताया है तो सब खामोश हो जाते हैं तथा जितेन हतप्रभ सा हो जाता है । उसकी नज़रों में हैरानी थी कि आखिर उसके भविष्य पर इन्हें विश्वास क्यों नहीं होता ? क्या वह बेकार हो गया है ? वह चाहता था कि उसकी आँखों में बने ताजमहलों, कुतुबमीनारों और गर्वीली इमारतों की तस्वीरें वह देख सकें..... । लेकिन उसकी हैरानी नहीं मिटी ।"(1)

कितनी घातक है भौतिकता की यह पीड़ा । युवकों व युवतियों को यह कुप्रभाव बिलकुल निष्क्रिय बना कर छोड़ देता है । यहां विवाह संबंधों का यथार्थ उजागर करते हुए लेखक ने आज के मनुष्य की आदर्शहीनता को अनावृत किया है । बदली हुई नैतिकता इस कारण अभिव्यक्त हुई है कि मीना को विवाह के लिए युवकों के संपर्क में आने भी दिया जाता है लेकिन उसे वरण करने की स्वतंत्रता नहीं दी जाती । इस अधूरी आधुनिकता पर प्रहार किया है ।

गर्मियों के दिन :-

यह इस संग्रह की दूसरी कहानी है । इसकी चर्चा "मेरी प्रिय कहानियां" में की जा चुकी है ।

भटके हुए लोग :-

लेखक ने एक बहुत मार्मिक मुद्दा उठाया है कि यह सांप्रदायिकता व

(1) कमलेश्वर : पूर्वोक्त - पृष्ठ-23.

विभाजन भोगने वाले लोगों की त्रासदी का वर्णन करता है ।
इसका कथासार है :- परसोराम व उसकी बेटी सतवन्ती भी हंसराज की भांति शरणार्थी हैं । शरणार्थियों को बसाने के लिए उन्हें कुछ दुकानों की एक जगह मिल जाती है । इन्हीं में परसोराम व हंसराज की भी दुकान थी । इससे स्थानीय लोगों में बहुत रोष था । उनकी बिक्री में अंतर आ गया था । शरणार्थी भी धीरे-धीरे बसने की कोशिश करते हैं । परंतु पुरानी दुकानें हटाकर पक्की दुकानें बना दी जाती है और जिन लोगों का अधिकार नहीं होता, उन्हें वह बांट दी जाती है । हंसराज व परसोराम खाली रह जाते हैं उन्हें कुछ नहीं मिलता । परसोराम तो सतवंती का विवाह हंसराज से करना चाहता है, परंतु अब कैसे हो सकता है, हंसराज बहुत प्रयत्न करता है, परंतु उसे दुकान नहीं मिल पाती । बेचारा हताश होकर फीरोज़पुर जाने की सोचता है तथा वह परसोराम को भी ज़मीन मिलते ही बुला लेने का वायदा करके चला जाता है । परंतु नियती को तो यही मंज़ूर था कि सभी प्रतीक्षा ही करते रहें । न हंसराज को ज़मीन मिलती है और न वह परसोराम व सतवंती को बुला पाता है । सब ज़मीन की तलाश में भटकते रहते हैं ।

विभाजन के बाद जीविका कमाने की पीड़ा को यहां चित्रित किया है । शरणार्थियों को किन-किन त्रासदियों से गुज़रना पड़ता है, इस कहानी में यही मार्मिक रूप से चित्रित किया गया है । बेरोज़गारी भी इसी विभाजन की देन है । भूखों मरने तक की नौबत आ पहुंची । इस पर भी शरणार्थियों को न्याय कहां मिल पाता है ।

विभाजित हुए लोगों में अपनी धरती का मोह कूट-कूट कर भरा रहता है । "छूटी हुई धरती का मोह मन में भर गया । आखिर पंजाब पंजाब है । यहां वह जिंदगी कहां ?"(1) अपनी धरती का मोह भला कहां छूटता है ।

इस कहानी में विभाजन की पीड़ा भोगने वाला व्यक्ति ही समझ सकता है कि सांप्रदायिकता की आग कैसे सब कुछ फूंक कर रख देती है । "पंजाब की लपटों ने क्या नहीं किया ।"(2) यह ठोकर इतनी बुरी होती है कि आदमी अपना

---

(1) कमलेश्वर : पूर्वोक्त - पृष्ठ-44.
(2) पूर्वोक्त, पृष्ठ-48.

सब कुछ खो देता है तथा भटक जाता है । इस कहानी की संवेदना विभाजन की पीड़ा और सांप्रदायिक दंगो की विभीषिका पर टिकी हुई है ।

चाय घर :-

इस कहानी का नायक लेखक है । विभाजन के बाद हुए दंगों से पीड़ित युवती एक चाय घर में वेटर का काम करती है । उस चाय घर में ग्राहक बहुत ही कम आते हैं । लेखक प्राय: ही उस चाय घर में चाय पीने जाता है । वह लेडी-वेटर जानतीं थी कि लेखक प्रतिदिन चायघर में कब आता है और कब नहीं आता । प्रतिदिन का आना-जाना ही लेखक व लेडी वेटर के बीच का संबंध था । एक दिन वह लेखक चायघर में आता है । चाय मंगवाता है लेकिन चाय पीते-पीते कुछ सोचने लग जाता है । इसी दौरान लेडी वेटर अपने सहयोगियों से बात करके हंसती है तब उस व्यक्ति को लेड़ी वेटर के बात करके हंसने के ढंग में राजकौर की याद आती है, जिसे उसने एक समारोह के बाद अपने अपने ओटोग्राफ दिए थे । उसने उसकी ओटोग्राफ बुक पर लिख दिया था- "जिंदगी प्यार के लिए है ।" अचानक लेडी वेटर ने चाय की याद दिलाई जो पड़ी-पड़ी ठण्डी हो रही थी । दोनों में बात-चीत आरंभ हुई । तब लेडी वेटर ने बताया कि किस प्रकार पंजाब के दंगों से बचकर भागी । लेखक फिर किसी सोच में पड़ गया । वह संभवतया राजकौर के बारे में सोचने लगा जो कि पंजाब के किसी शहर में रहती थी । चाय समाप्त करके लेखक चलने को हुआ । लेडी वेटर ने किसी अन्य ग्राहक के आने तक उससे बैठने का आग्रह किया । यह आग्रह अपनेपन से भरा था । अचानक लेडी वेटर ने बताया कि वह भी कुछ दिन के लिए चायघर में नहीं आएगी क्योंकि वह राजकौर से मिलने दिल्ली जा रही है । राजकौर भी दंगों में उसके साथ आई थी । उसने बताया कि राजकौर दिल्ली में नर्स है । नायक को अपना दिया हुआ ओटोग्राफ याद आया तो वह बहुत दु:खी हुआ । शायद वह सोचता रहा कि उसका दिया ओटोग्राफ राजकौर के लिए कितना दु:खदायी हो गया । उसे लगा कि उसकी लिखी ये पंक्तियां उसे कोस रही होंगी तथा कहीं घुट-घुट कर दम तोड़ रही होंगी । उसे लगा कि शायद वह लेडी वेटर उसे अपना समझकर बता रही है । तभी उस समय उस चायघर में एक अन्य ग्राहक आया । वह लेडी वेटर उसकी ओर

बढ़ी तथा बहुत आत्मीयता से उससे पूछने लगी कि आप बड़े थके मालूम पड़ते हैं । यह सुनकर नायक को ऐसा आभास हुआ कि उसे आत्मीयता का धोखा हो रहा है वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं है । तब उसे लगा कि शायद जो नर्स है वह भी ऐसा ही करती होगी । उसे लगा कि लेडी वेटर ने उसे कुछ क्षण पहले बहुत खूबसूरत धोखा दिया है । एक कप चाय की कीमत पर इतना खूबसूरत धोखा प्राप्त करना उसे अधिक महंगा नहीं लगा ।

इस कहानी में दंगों से भागकर आए लोग जीविका चलाने के लिए कैसे-कैसे काम करते हैं । अपना मन मारकर उन्हें यह सब करना पड़ता है । एक लेडी वेटर प्रत्येक ग्राहक को अपनापन देती है ताकि वह ग्राहक नियमित रूप से उसके चायघर में आता रहे । परंतु धीरे-धीरे यह अपनापन बिलकुल व्यवसायिक हो जाता है । यह व्यवसायिकता उसकी विवशता हो जाती है तथा इसी प्रक्रिया में वह एक आदमी से एकदम जुड़ कर एकाएक छिटक कर अलग होती है तथा नए ग्राहक से आत्मीयता से पूछती है- "आप बहुत थके मालूम पड़ते हैं ।"(1)

इस बीच वह पहले व्यक्ति की संवेदनाओं का ध्यान नहीं रख पाती जो एकदम ठोकर खाती हैं । परिणामतः अच्छे पुरुष भी नीचतम प्रकृति प्रदर्शित करते हैं कि-- "एक प्याला चाय की कीमत पर इतना शानदार धोखा खरीदा जा सकता है ।"(2) यहां पर संबंधों में आई हुई व्यवसायिकता को बहुत गहराई से प्रकट किया गया है ।

सींखचे :-

इस कहानी का कथासार यह है :- इस कहानी की नायिका का पति स्वभाव से अत्यन्त क्रोधी है । छोटी-छोटी बातों पर मारपीट बहुत साधारण सी बात है । पेशे से वह परचूरन की दुकान चलाता है । परंतु नायिका प्रेम के अतिरिक्त भोजन तथा वस्त्र के अभाव में भी जी रही है । इन सब त्रासदियों के बीच युवा नायिका एक लोहार युवक चमन की ओर आकर्षित होती है, तथा सुनहले

---

(1) कमलेश्वर : कस्बे का आदमी : "चायघर" - पृष्ठ-57.
(2) पूर्वोक्त - पृ. 57.

स्वप्न देखती है, परंतु समस्त इच्छा व कामना की उपस्थिति के बावजूद भी वह किसी भी प्रकार से विद्रोह नहीं कर पाती । पति के साथ लिए सात फेरों का बंधन तोड़ पाने की सामर्थ्य उसमें उत्पन्न नहीं हो पाती ।

यह कहानी मोटे तौर पर स्त्री-शोषण का अंकन करती है । पुरूष छोटी-सी बात पर मिजाज दिखाता है । मारपीट, झगड़ा तो बहुत सामान्य बात है परंतु वह तन के लिए पूरे वस्त्र व पेट के लिए पर्याप्त अन्न भी प्राप्त नहीं कर पाती और यही त्रासदी भोगते रहने के लिए अपने अंतद्वन्द्व में घिरी रहती है । उसकी स्थिति का अंकन बहुत मार्मिक ढंग से किया गया है । "फटे चीथड़े सांस रोके तार पर चमगादड़ों की भांति लटके रहते हैं ।"§1§ और "दो दो पैसे के लिए वह तरसती रहती है ।"§2§ उसका मन भी होता है कि उस के पास अन्य स्त्रियों की भांति अच्छे वस्त्र होते । हाथ, कान व नाक में पहनने के लिए आभूषण होते, परंतु यह उसका व्यर्थ चिंतन है । इसी कारण उसके पति की पहली पत्नी भला आग लगाकर क्यों मरती ? वास्तव में वह इस जीवन के संघर्ष से उकता चुकी है । "यह जीवन बेकार है....... यह जीना नरक के बदतर है, इन अभावों और यातनाओं के बीच से वह उठ जाए तो कैसा रहे कितना अच्छा हो ।"§3§ कितनी विचित्र स्थिति है नारी की । यह सब देखकर नारी स्वतंत्रता की खिल्ली §हंसी§ उड़ रही है । समाज में समान अवसरों व अधिकारों की प्राप्ति की बात तो कोसों दूर, उसके जीवन की तो आवश्यकताएं भी पूरी नहीं होती । बहुत दयनीय स्थिति है । रोटी व वस्त्र से भी वंचित नारी फिर भी पति को देवत्व ही प्रदान करती है । उसका तन व मन विद्रोह करता है । इसी कारण वह अन्य पुरूष के प्रति आकर्षित भी होती है, तब भी संस्कार उसे रोक लेते हैं । पति के साथ अग्नि को साक्षी मानकर लिए गए सात फेरे उसे अपनी राह नहीं छोड़ने देते । वाह रे संस्कार । कितने शक्तिशाली हैं संस्कार । यदि ये संस्कार न होते तो भारतीय नारी भी बहुत पहले ही विघटन के कगार पर होती और भारतीय समाज की गरिमा जो अब तक बनी हुई है वह बहुत पहले बिखर चुकी होती।

---

§1§ कमलेश्वर : कस्बे का आदमी : सीखचे, पृष्ठ-60.
§2§ पूर्वोक्त, पृष्ठ-61.
§3§ पूर्वोक्त, पृष्ठ-62.

इन्सान और हैवान :-

इस कहानी में गरीब वर्ग की क्या दुर्दशा होती है और उनकी कोई बात भी नहीं सुनता । वह सच्चाई के पक्ष में होते हुए भी वह गुनहगार है । इसका मार्मिक चित्रण इस कहानी में किया गया है । कथासार यह है :- इस कहानी का नायक एक साधारण गरीब युवक है, जो सर्दी की रात में अपने तनावों से निजात पाने के लिए घर से बाहर निकल कर टहल रहा है । उसे बाहर रामसिंह नाम का कोंस्टेबल मिलता है । बाते करते-करते रामसिंह अपने मित्र की बेवफा प्रेमिका की बात करता है । वह युवक अपने तनावों में ऐसा घिरा है कि वह कांस्टेबल की इस बात पर अधिक दु:ख प्रकट नहीं कर पाता । कांस्टेबल को यह बात अखरती है । बातों-बातों में कांस्टेबल उसे घर जाने के लिए पैसा देता है । इतने में पुलिस वेन लेकर उस कांस्टेबल को लेने आती है । वह व्यक्ति अपने तमाम अभावों के बाद भी कांस्टेबल का रूपया उसे वापस लौटाना चाहता है तभी वह पुलिस वैन लौट कर आती है और उस व्यक्ति के पास रूकती है तथा रामसिंह उस व्यक्ति पर आरोप लगाता है कि यह व्यक्ति बदमाश है । वह अपने सहयोगी पुलिस कर्मियों से उसे पकड़वा कर वेन में डलवा लेता है तथा उस व्यक्ति की कोई बात नहीं सुनता ।

इस कहानी में मानव मूल्यों के ध्वस्त होने तथा व्यवस्था के अन्यायपूर्ण हो जाने का यथार्थ चित्रण हुआ है । मनुष्य की चारित्रिक गिरावट इस कहानी का प्रतिपाद्य है ।

गाय की चोरी :-

इस कहानी में ग्रामीण जीवन बिताते हुए, उम्र की ढलान पार करते हुए अकेलापन काटने के लिए मुंशी जी प्राय: गांव में होने वाली प्रत्येक घटना-दुर्घटना में शरीक होते हैं । प्राय: वे जब शरीक नहीं होते, तब भी उस दु:ख-सुख अथवा घटना की सारी जानकारी प्राप्त करके स्वयं को उससे जोड़ लेते हैं तथा अपनी उपस्थिति को उस घटना से जोड़-जोड़ अपनी शेखी बघारते हैं । यह उनकी आदत ही बन चुकी है । एक बुढ़िया की गाय चोरी होने पर वह उस बात में भी

स्वयं को बीच में डालते हैं । जब पुलिस द्वारा जांच की जाती है तब उन्हें बहुत परेशानी भोगनी पड़ती है । वास्तव में उन्हें इस चोरी का कुछ पता नहीं होता । आखीर में वह कह ही देते हैं कि उन्होंने कुछ भी नहीं देखा । इस प्रकार उनका अपमान होता है और इस अपमान को वह लाठियां खाकर चुराई हुई गाय को वापस लाकर सम्मान में बदल देते हैं ।

इस कहानी में मनोवैज्ञानिक यथार्थ को अभिव्यक्त किया गया है, जिसमें मनुष्य अपनी श्रेष्ठता प्रतिपादित करने का यथासंभव प्रयत्न करता है । आत्मप्रशंसा को मनोविज्ञान को लेखक ने मुंशी जी के चरित्र के माध्यम से उद्घाटित किया है ।

नौकरी पेशा :-

इस कहानी में "कस्बे के एक और पहलू का बड़ा सशक्त चित्रण हुआ है । इसमें कस्बे का जीवन, कस्बे का आदमी, उसकी मनोवृद्धि "कस्बे का आदमी" कहानी से अधिक खूबी से चित्रित हुआ है ।"[ ]

"नौकरी पेशा" कहानी में "गांव से उखड़े लोगों को पनाह" देते ऐसे ही कस्बे की जिंदगी का आलेखन हुआ है । कस्बे में बसते हुए लोग शहर में नौकरियों की ओर आकर्षित होते हैं । यह आकर्षण बाबू की संज्ञा दिलवाता है । अतः इस आकर्षण को काट पाना असंभव भी है । राधेलाल भी इसी आकर्षण में बंधकर अपने जीवन के दिन गुज़ार रहा है । इस मानसिकता में आदमी इतनी विचित्रता से जकड़ा जाता है कि वह अपने एक मित्र की मृत्यु होने पर पहले उस शोक में शामिल होने नहीं गया बल्कि पहले वह उस जगह गया जहां वह नौकरी करता था, ताकि उसके द्वारा रिक्त नौकरी उसे मिल जाए ।

दसवी श्रेणी पास करके परचूरन की दुकान वाले लाला के पुत्र राधेलाल को जब "बाबू" संबोधन प्राप्त हो गया तब वह अपने को खुशकिस्मत समझता है, और क्लर्क कहलाने के बजाय "नौकरी पेशा" कहलवाना ज्यादा पसन्द करता है । इसी पापड़ बेलते "नौकरी पेशा" आदमी का संघर्ष बहुत प्रामाणिकता अभिव्यक्त किया

- -

गया है । कस्बे के छोटे-छोटे दफ्तरों में काम करते क्लर्क दफ्तर की बगिया के नींबू स्टेशनरी के छोटे-छोटे सामान, पेंसिलें, कागज, आदि चुराकर लाने को चोरी ही नहीं समझते । ये बाबू लोग थे कौन, इसके परिचय में कहानीकार ने कहा है कि ये सारे ही महाजन परिवार और गांव से उखड़े हुये लोगों के थे । "शहरी होने की होड़ में गांव के संस्कारों से अभी बंधे ये सारे ही परिवार भीतर से टूट चुके थे । ......शहरी चुस्ती और काइयांपन धीरे-धीरे कर रहा था पर बिरादरी के मामले में वही गंवई ठाठ जरूरी समझा जाता, नाक ऊँची रखी जाती ।"(1)

कहानी का अंत यह बताता है कि शहरी जीवन का काइयांपन चाहे कितना ही इन लोगों के जीवन में आया हो, किंतु अपनों का जो दर्द गांव वालों के दिल में होता है वही रामभरोसे को बाबू राधेलाल की सिफारिश के लिए प्रेरित करता है, यद्यपि दोनों एक-दूसरे से कटते थे । यहां रोमानी आदर्श भी कथाकार का पीछा नहीं छोड़ता है । इस प्रकार यह कहानी गांव के उखड़े और शहर में रोटी कमाते लोगों का चित्रण बहुत प्रामाणिकता से करती है ।

सच और झूठ :-

इस कहानी का नायक हरीश बीमार है और उसकी देखभाल करने के लिए शारदा नामक नर्स है । वह नर्स उसकी बाते ध्यान से सुन कर उसे अपनापन देती है । हरीश उसे सरला नामक युवती की बात करता है जो उसकी मित्र है । वह कहता है कि मैंने उससे प्रेम की बात की थी परंतु संकोचवश वह अपना प्रेम व्यक्त नहीं कर पाया । सरला उसकी अच्छी मित्र है अतः उसकी खोज खबर रखती है और उससे मिलने अस्पताल आती है । लेकिन अचानक उसी दिन वह किसी डोक्टर के साथ उसके विवाह की तस्वीर देखता है । इस पर उसे बहुत दुःख पहुंचता है । अगले दिन सरला उससे मिलने आती है तब वह कट कर रह जाता है लेकिन कुछ भी नहीं कर सकता । अचानक सरला हरीश को देखने आती है तब हरीश के सिरहाने रखे कागज़ के बारे में पूछती है तो हरीश झूठ बोलता है कि वह उसकी पत्नी का पत्र है, जिसमें उसने लिखा है कि वह उससे मिलने आना चाहती है । नर्स शारदा यह

---

(1) वही, "नौकरी पेशा" - पृ. 204.

सब सुनती है । सरला के जाने के बाद वह हरीश से पूछती है कि उसने झूठ क्यों बोला । तब हरीश जवाब देता है कि "जो बिगाड़ता है वह सच नहीं हो सकता, और अगर झूठ किसी को बनाता है तो बुरा क्या है ।"(1)

हरीश सरला के सच से टूटे अपने हृदय को अपने झूठ से जोड़ने का प्रयत्न करता है । यहां इस कहानी में काम-संबंधों की नैतिकता और उससे जुड़ी हुई मानवीय नियति को प्रकट किया गया है । यहां मूल्यों की शाश्वतता की बजाय मूल्यों की परिस्थिति - सापेक्षता तथा उद्देश्य - सापेक्षता पर बल दिया गया है ।

बेकार आदमी :-

इस कहानी के नायक प्रकाश को पत्रकारिता का अनुभव था । फिर भी उसे अभी तक नौकरी नहीं मिली थी । वह रोज़गार कार्यालय में अपना नाम दर्ज करवाने गया था । रोज़गार अधिकारी उसकी योग्यता से बहुत प्रभावित हुए । प्रकाश की अखबारों में छपी रचनाएं, लेख इत्यादि देखकर उन्हें लगा कि प्रकाश तो भावी लेखक है । प्रकाश की सारी बातें सुनकर रोज़गार अधिकारी ने बताया कि वह भी बाल मनोविज्ञान पर एक पुस्तक लिख रहा है । उसकी इच्छा थी कि प्रकाश इस पुस्तक को लिखने में उसकी सहायता करे । मि० सहाय ने प्रकाश को अपने घर आने का निमंत्रण दिया तथा बताया कि उनके शौक तो कुछ और है ये नौकरी तो उनकी विवशता है । उन्होंने प्रकाश को नौकरी दिलवाने का आश्वासन दिया ।

यह कहानी समाज में व्याप्त बेरोज़गारी की संवेदना लेकर लिखी गई है । एक प्रतिभावान लेखक को रुचि अनुसार कोई नौकरी नहीं मिल पाती । वह बेरोज़गारी के कारण परेशान है तथा रोज़गार अधिकारी भी अपनी नौकरी से संतुष्ट नहीं है ।

थानेदार साहब :-

इस कहानी में बजरंगी थानेदार थे । लेखक व उसका मित्र नरेश बजरंगीजी के घर में रुके हुए थे । बजरंगी उन्हें अपने बहादुरी के किस्से सुनाया करता था ।

---

(1) कमलेश्वर : वही : सच और झूठ, पृष्ठ-102.

एक दिन बजरंगी जी को एस.पी. साहब का तार मिला । उन्हें एक डाकू को पकड़ने का काम सौंपा गया था । बजरंगी को अपना शौर्य दिखाने का अवसर प्राप्त हुआ । डाकू का पता करने के लिए उन्होंने सिपाहियों की ड्यूटियां लगाईं । लेकिन उन्हें कोई सफलता नहीं मिली । अब उन्होंने निश्चय किया कि वे स्वयं ही कुछ करेंगे । डाकू को जकड़ने के अभियान में वे स्वयं भी शामिल हो गए । इसी चक्कर में दो तीन दिन बीत गए । नरेश भी एक दिन घूमने गया । वह काफी देर तक नहीं लौटा । बजरंगी को उनके एक सिपाही ने बताया कि डाकू पकड़े गए हैं । अब बजरंगी नरेश से अपनी वीरता का बखान करना चाहते हैं । कुछ ही देर बाद एक पुलिसवाला आया तथा उसने बताया कि पांच लोग गिरफ्तार हो गए हैं । बजरंगी मुजरिमों को कोतवाली में भेजना चाहते थे । कप्तान साहब ने बजरंगी के लिए एक पत्र भेजा था और साथ ही पांच फोटो थे । लेखक ने देखा तो एक ही आदमी के पांच फोटो थे । बजरंगी यह देखकर परेशान हो गए कि वे फोटो तो एक ही आदमी के थे । परंतु पांच मुद्राओं में थे । इसलिए पांच आदमी पकड़वा दिए गए थे ।

उस दिन नरेश भी वापस नहीं लौटा । उसका तार मिला था कि उसे डाकू समझकर पकड़ लिया गया था और वह बड़ी मुश्किल से छूटा है । इस कहानी में प्रशासन की व्यवस्था पर चोट की गई है । व्यवस्था-विरोध की संवेदना की इस कहानी में व्यवस्था की विद्रूपता के प्रति मोहभंग को अभिव्यंजता की गई है ।

कस्बे का आदमी :-

"कस्बे का आदमी" की कहानियाँ भी राजा निरबंसिया के ही काल की कहानियां है । इसलिए ये कहानियां अपने चरित्र में अलग नहीं हैं, ये भी परिवेश और जीवन के विविध आयामों को उद्घाटित करने में प्रयत्नशील लक्षित होती है ।

"कस्बे का आदमी" कस्बे के एक आदमी के छोटे-मोटे अन्तर्विरोधों के साथ उसकी सहृदयता और संस्कार को अंकित करने वाली कहानी है । तोते के

प्रति अटूट प्यार और अपनी असहायता में उसके प्रति पीड़ा-बोध को लेकर जीने वाले छोटे महाराज को लेखक ने एक जाने-पहचाने परिवेश में व्याप्त कर दिया है ।

कथासार :- इस कहानी का नायक शिवराज रेल से अपने कस्बे को जा रहा था । उसके साथ ही एक व्यक्ति और बैठा था । उसके पास एक तोता था । वह व्यक्ति उस तोते को आटे की गोलियां बना-बना कर खिला रहा था तथा उसे सीताराम-सीताराम कहने को उकसा रहा था । लेकिन तोता खाने के प्रति अधिक रुचि दिखा रहा था । उसने एक बार भी सीताराम नहीं कहा । वह व्यक्ति शिवराज को पहचान गया था । शिवराज को भी याद आया कि वे छोटे महाराज हैं । छोटे महाराज की मां बहुत पहले स्वर्ग सिधार गई थी । बाप दादा सोने-चांदी का काम करते थे । बाप के मरने के समय भी छोटे महाराज की उम्र बहुत कम थी । उनके घर से एक चोरी में बहुत संपत्ति चली गई जो बाकी बची थी उसे परिवार के मुखतार ने हड़प ली । तब से छोटे को पेट भरने के लिए पापड़ बेलने पड़े । एक बार वह एक इमली के पेड़ के नीचे बैठकर पानी पिलाते थे, उस पर महूक का छत्ता था । उन्होंने एक कंजर से छत्ता बटाई पर तै कर लिया । कंजर ने महीना भर तक कोई पैसा न दिया । वह उसकी झोपड़ी पर जा पहुंचे । जब उसने पैसे न दिए तो एक तोता उठा लाए । बस वह तोता तभी से उनके पास है । वह हमेशा ही उसे अपने साथ रखते हैं । शिवराज और छोटे महाराज अपने कस्बे में पहुंच गए । अगले दिन जब शिवराज छोटे महाराज को मिला तो वह बुरी तरह से कराह रहे थे । उन्हें खांसी का दौरा था और वह रात भर सो नहीं सके थे । उन्हें अपने तोते की चिन्ता भी थी कि कहीं बिल्ली उसे खा न जाए । उन्होंने शिवराज से आग्रह किया कि वह तोते को अपने घर रख लें । तीन-चार दिन बीत गए । छोटे महाराज की हालत खराब होती जा रही थी । उनका ध्यान अपने तोते सन्तू पर भी अटका रहता था । वह अपना तोता वापस मांग लाए । अगले दिन सवेरे जब शिवराज उनकी कोठरी में गया तो महाराज चिरनिद्रा में सो रहे थे और तोते का पिंजरा सिराहने पड़ा था । पिंजरे के उपर उन्होंने एक कपड़ा डाल रखा था । शिवराज ने सोचा पता नहीं अंत तक भी संतू तोते ने सीताराम कहकर उनकी इच्छा पूर्ण की होगी या नहीं ।

इस कहानी में हमारी रूढ़ियों और खंड-खंड आस्थाओं पर प्रहार किया गया है ।